प्राक्कथन

राजस्थान ने भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया, और यह श्रेय भारत के अन्य किसी भी भू-खण्ड को नहीं प्राप्त हुआ। बारहवीं शताब्दी के भी पूर्व से लेकर मुगलों के पतन तक राजस्थान बराबर मुसलमानो के आक्रमणों का प्रतिरोध करता रहा, और उनसे निरन्तर संघर्षरत रहा। इसका फल यह हुआ कि जब अंग्रेज मुग़लो के उत्तराधिकारी बने, तो राजस्थान की एक अंगुल भूमि भी मुग़लो के अधिकार में न थी। यह बात गौरव के साथ कहनी पड़ती है कि भारत का कोई भी अन्य प्रान्त इतने दीर्घकाल तक अविरत रूप से युद्धरत न रहा। इस भीषण संघर्ष काल के उत्थान-पतन में राजस्थान को कितना निस्वार्थ त्याग करना पड़ा होगा, कितना लोमहर्षक शौर्य प्रदर्शित करना पड़ा होगा, छः सौ वर्ष तक स्वतंत्रता की अजस्र ज्वाला जाग्रत रखने के लिये कितने ईंधन की आवश्यकता हुई होगी, स्वतंत्रता के ध्येय को प्राप्त करने के लिये उसका कितना अटल निश्चय और अध्यवसाय होगा, स्वतंत्रता-संग्राम के भारवहन की शक्ति कितने गम्भीर और अक्षय देश-प्रेम से प्राप्त की गई होगी, उसकी विचारधारा, भावना, सफलता पिछली दस शताब्दियो मे कैसी रही होगी? इन सब बातो का मार्मिक दिग्दर्शन राजस्थान के साहित्य मे ही प्राप्त हो सकता है।

राजस्थान की भाव-व्यंजना हिन्दी और राजस्थानी भाषा में हुई है। महान् हिन्दू जाति की संस्कृति और सभ्यता के द्योतक इस साहित्य को भावी सन्तति के हितार्थ राजस्थान ने सुरक्षित रक्खा है।

अब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त करली है, और यह उपयुक्त समय है कि भारत की वीर-भावना और उत्साह नष्ट न हो, जिससे यह देश विश्व मे अन्याय और दुराचार का विरोध और दमन करने मे समर्थ हो सके। हमारी वीरता का पुनर्जागरण प्राचीन साहित्य के अध्ययन से किया जा सकता है।

राजस्थान मे हस्तलिखित ग्रन्थों की अपार निधि है। कर्नल टॉड, राजा राजेन्द्रलाल मित्र, महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० बूलर, भण्डारकर, टेसीटरी आदि महानुभावो ने पुरातन हस्तलिखित ग्रन्थो की अन्वेषणा का सराहनीय कार्य किया है, परन्तु अधिकांश भाग तो अभी तक अनेक्षित ही है। ये हस्तलिखित प्रतियां हमारे विचार-क्षेत्र को विस्तृत करेंगी, जीवन को अधिक उन्नत बनायेंगी,

राष्ट्रीय उत्साह का अक्षय स्रोत होंगी, भारतीय जीवन और संस्कृति के ऐक्य को स्थापित करेंगी, और हिन्दू जाति के राष्ट्रीय भविष्य को व्यक्त करेंगी। इसमे सन्देह नहीं।

उदयपुर विद्यापीठ ने 'राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज' का प्रथम भाग सन् १९४२ मे प्रकाशित किया, जिसमे १७५ हिन्दी ग्रन्थो का उल्लेख है और साथ ही संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी है। अब इसका यह दूसरा भाग भी प्रकाशित हो रहा है। इसमे १८३ हस्तलिखित अज्ञात हिन्दी ग्रन्थो का विवरण है, जिनमे कोष, काव्य, वैद्यक, रत्न-परीक्षा, संगीत, नाटक, इतिहास, कथा, नगरवर्णन, शकुन, सामुद्रिक आदि विभिन्न विषयो के ग्रन्थ है, जो १०२ कवियो द्वारा रचित है। ये ग्रन्थ कई सग्रहालयो से प्राप्त हुए है, और प्राय: १७ वीं से १९ वी शताब्दि तक के है। इनका सम्पादन-कार्य मेरे परम मित्र श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटा द्वारा हुआ है। नाहटाजी ने जैन-साहित्य-क्षेत्र मे सुख्याति प्राप्त की है और वे अपने अनुसन्धान-कार्य को समय-समय पर पत्रो मे प्रगट करते रहे है।

श्रीयुत नाहटाजी ने राजस्थान के हस्त-लिखित ग्रन्थो की अन्वेषणा और संग्रह मे अपना बहुमूल्य समय और शक्ति का व्यय किया है,जिसके लिये हिन्दी साहित्य-प्रेमी उनके आभारी है।

प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान, उदयपुर सम्वत् १९९८ वि० मे स्थापित हुआ था और इतने अल्पकाल मे ही उसने आशातीत सफलता प्राप्त की है। इस संस्था के संचालक न केवल विद्वान् ही है, वरन कर्मठ भी है। सबसे अधिक विशेषता की बात तो यह है कि अच्छी से अच्छी सामग्री का ये बहुत ही अल्प व्यय से निर्माण करते हैं, जिनसे इनकी आश्चर्यजनक मितव्यायिता प्रगट होती है। अत: हम श्री जनार्दनरायजी नागर और श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया तथा अन्य कार्यकर्त्ताओ का जितना धन्यवाद दें थोड़ा है।

अन्त में मुझे यही कहना है कि भारतीय हस्तलिखित सामग्री के परिचय के लिये ऐसी ग्रन्थ-सूचियो की नितान्त आवश्यकता है।

कलकत्ता
आश्विन शुक्ला ८
सं० २००४ वि०

छोटेलाल जैन

दो शब्द

उदयपुर विद्यापीठ गत दस वर्षों से अपनी विविध संस्थाओ द्वारा राजस्थान मे शिक्षणात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और लोकोत्थान का कार्य कर रही है तथा अब वह संपूर्ण विद्यापीठ का रूप ग्रहण कर चुकी है। महाविद्यालय, श्रमजीवी विद्यालय, कलाकेन्द्र, सरस्वती मन्दिर (जिसमे प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान संयुक्त है) महात्मा, गांधी लोक शिक्षण विद्यालय, मोहता आयुर्वेद सेवा सदन, प्रगतिशील प्रकाशन संस्थान (जिसमे विद्यापीठ प्रेस संयुक्त है), राम सन्स टेक्निकल इंस्टीट्यूट और जनपद इसकी संस्थाएं हैं।

सरस्वती मन्दिर साहित्यिक-सांस्कृतिक निर्माणात्मक एवं शोध सम्बन्धी कार्य करने की योजना के साथ अग्रसर हो रहा है। इसके लिये मेवाड़ सरकार ने कृपा कर शहर के निकट ही सात बीघा जमीन भी बिना मूल्य लिये प्रदान की है, जिसके लिये वह हमारे धन्यवाद की पात्र है। प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान के सामने अन्य प्रवृत्तियों के साथ राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज का विस्तृत और महत्त्वपूर्ण कार्य भी है। राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज भाग २ का प्रकाशन बहुत विलम्ब से हो रहा है और इसके बाद आगे के दो भागो के मुद्रण का कार्य भी शेष है। आशा है अब शीघ्र ही शोध-संस्थान इनको प्रकाशित करने मे समर्थ होगा।

संस्थान श्रीयुत्, अगरचन्दजी नाहटा का अत्यन्त आभारी है, जिन्होंने इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को बड़े परिश्रम, अनुभव और ठोस अध्ययन के आधार पर तैयार किया है। इस कार्य मे हमें श्रीयुत्, नाहटाजी से बहुत आशा है और वे पूर्ण होगी-इसमे सन्देह नहीं।

मेवाड़ सरकार ने कृपा कर अपनी विशेष स्वीकृति से १०००) रु० की सहायता इस ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ प्रदान की है। इसके लिये संस्था सरकार को हार्दिक धन्यवाद देती है और आशा करती है कि इस महत्वपूर्ण ग्रन्थमाला के आगामी प्रकाशनो के लिये भी मुद्रण का अधिकांश व्यय प्रदान करेगी।

श्रीयुत्, छोटेलालजी जैन, कलकत्ता ने कृपा कर प्रस्तुत ग्रन्थ के लिये अपना प्राक्कथन लिखना स्वीकृत किया तदर्थ हम आपके बहुत आभारी हैं।

उदयपुर विद्यापीठ
कार्तिक कृष्ण ७, २००४ वि०

अर्जुनलाल महता
पीठ मन्त्री

निवेदन

—:ꕥ:—

राजस्थान मे प्राचीन साहित्य, लोक-साहित्य, इतिहास और कलाविषयक शोध-कार्य करने के लिये उदयपुर विद्यापीठ द्वारा वि० सं० १९९८ मे प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान की स्थापना की गई थी। योजनानुसार इसके विभागान्तर्गत कई महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियां स्थापित एवं विकसित हो चुकी हैं। जैसे– १- राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, २—चारणगीत माला, ३—राजस्थान गौरव ग्रन्थमाला, ४—राजस्थानी कहावत माला, ५—राजस्थानी लोकगीत माला, ६-स्व० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा निबन्ध संग्रह, ७—महाकवि सूर्यमल आसन, ८—शोध-पत्रिका और ९—संग्रहालय आदि।

सर्वप्रथम हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य प्रारंभ किया गया था। उस समय विद्वानों का राजकीय अथवा व्यक्तिगत पुस्तकभण्डारों मे प्रवेश पा सकना और वहां के हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण तैयार करना आज से कहीं अधिक कठिन था। किन्तु इस कार्य मे सफलता मिली और श्रीयुत्, पं० मोतीलाल मेनारिया एम० ए० द्वारा प्रस्तुत खोज का प्रथम विवरण-ग्रन्थ प्रकाशित कर दिया गया। इस ग्रन्थ के रूप मे द्वितीय विवरण-ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। आगे के तृतीय और चतुर्थ भाग भी–एक श्रीयुत्, उदयसिंह भटनागर एम० ए० का, दूसरा श्रीयुत्, अगरचन्द नाहटा का प्रेस के लिये प्रस्तुत हैं। आशा है शोध-संस्थान शीघ्र ही इनको भी प्रकाशित करने मे समर्थ होगा। तब तक कई नवीन भाग तैयार हो जावेंगे। चारणगीतमाला के लिये लगभग १०५० गीत अब तक एकत्रित किये जा चुके है। और प्रथम-द्वितीय भाग का सम्पादन-कार्य भी समाप्तप्राय: है। राजस्थान-गौरव-ग्रन्थमाला के अन्तर्गत महाकवि चन्द कृत पृथ्वीराज रासो का प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। श्रीयुत्, कविराव मोहनसिंह के सम्पादकत्व और श्रीयुत्, भगवतीलाल भट्ट के संयोजन मे पृथ्वीराज रासो-कार्यालय द्वारा इसके ३३ प्रस्तावों का कार्य समाप्त हो गया है। राजस्थानी कहावत माला की प्रथम 'पुस्तक मेवाड़ की कहावतें' भाग १. सम्पादक श्रीयुत्, पं० लक्ष्मीलाल जोशी एम० ए० एल० एल० बी० प्रकाशित हो चुकी है। द्वितीय पुस्तक 'प्रतापगढ़ की कहावतें' सम्पादक श्रीयुत्, रत्नलाल महता, बी० ए०, एल० एल० बी० और तृतीय पुस्तक 'राजस्थानी भील कहावतें' सम्पादक-श्रीयुत्, पुरुषोत्तम मेनारिया

'साहित्यरत्न' प्रेस के लिये तैयार है। चतुर्थ पुस्तक 'मेवाड़ की कहावतें' भाग—२. सम्पादक श्रीयुत्, पं० लक्ष्मीलाल जोशी एम० ए० एल० एल० बी० का कार्य भी चल रहा है। मेवाड़ के विभिन्न विभागों से लगभग ६०० लोकगीतों का संग्रह कार्य किया जा चुका है। इनमे भील गीत मुख्य है। स्व० डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के निबन्ध चार भागों मे प्रकाशित किये जावेंगे। नवीन खोज के अनुसार टिप्पणियां जोड़ने का महत् कार्य कृपा कर श्रीयुत्, डॉ० रघुवीरसिंह एम० ए०, डी० लिट्०, एल एल० बी०, महाराजकुमार सीतामऊ ने प्रारंभ कर दिया है और प्रथम भाग शीघ्र ही प्रेस में दिया जाने वाला है। महाकवि सूर्यमल आसन के तृतीय अभिभाषक श्रीयुत्, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या एम० ए०, डी० लिट्, अध्यक्ष भाषातत्त्वविभाग कलकत्ता विश्वविद्यालय के 'राजस्थानी भाषा' विषयक भाषण प्रेस में हैं। शोध-पूर्ण निबन्धो के प्रकाशनार्थ और शोध-कार्य को प्रगति देने के उद्देश्य से त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' का प्रकाशन भी चैत्र सं० २००४ वि० से प्रारंभ किया गया है। संस्थान का संग्रह-कार्य भी प्रगति पर है। प्राप्त जमीन पर संग्रहालय का भवन निर्मित होते ही संग्रहालय की उपयोगिता और प्रगति कई गुनी बढ़ जायगी। कई कठिनाइयो को सहते हुए भी इस प्रकार शोध-संस्थान अपने ध्येय की ओर अग्रसर हो रहा है।

राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य सर्वथा नवीन और महत्त्वपूर्ण है। यह बहुत आवश्यक है कि समस्त राजस्थान मे खोज का यह प्रारम्भिक कार्य शीघ्रातिशीघ्र समाप्त हो जाय। राजस्थान के विद्वानो, धनी-मानी सज्जनो और रियासती सरकारो की पूरी पूरी सहायता इसके लिये पूर्णतया अपेक्षित है इसी से यह संभव है। आशा है राष्ट्रनिर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य मे शोध-संस्थान को अवश्य ही पूर्ण सहयोग मिलेगा।

उदयपुर विद्यापीठ सरस्वती मन्दिर,
प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान,
कार्तिक कृष्णा ७, २००४ वि०

पुरुषोत्तम मेनारिया
सञ्चालक

प्रस्तावना

भारतीय वाङ्मय बहुत ही विशाल एवं विविधतापूर्ण है। अध्यात्मप्रधान भारत में भौतिक विज्ञान ने भी जो आश्चर्यजनक उन्नति की थी उसकी गवाही उपलब्ध प्राचीन साहित्य भली प्रकार से दे रहा है। यहाँ के मनीषियो ने जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय पर गंभीरता से विचार एवं अन्वेषण किया और वे भावी जनता के लिये उसका निचोड़ ग्रन्थो के रूप में सुरक्षित कर गये। उस अमर वाङ्मय का गुणगान करके गौरवानुभूति करने मात्र का अब समय नहीं है। समय का तकाजा है—उसे भली भाँति अन्वेषण कर शीघ्र ही प्रकाश मे लाया जाय। पर खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमारे गुणी पूर्वजो की अनुपम एवं अनमोल धरोहर के हम सच्चे अधिकारी नहीं बन सके। हमारे उस अमृतोपम वाङ्मय का अन्वेषण एवं अनुशीलन पाश्चात्य विद्वानो ने गत शताब्दी मे जितनी तत्परता एवं उत्साह के साथ किया हमने उसके एकाधिकारी -ठेकेदार कहलाने पर भी उसके शतांश मे भी नहीं किया, इससे अधिक परिताप का विषय हो ही क्या सकता है ? जिन अनमोल ग्रन्थो को हमारे पूर्वज बड़ी आशा एवं उत्साह के साथ, हम उनके ज्ञानधन से लाभान्वित होते रहें—इसी पवित्र उद्देश्य से बड़े कठिन परिश्रम से रच एवं लिखकर हमे सौंप गये थे, हमने उन रत्नो को पहिचाना नहीं। वे नष्ट होते गये व होते जा रहे है तो भी उसकी भी सुधि तक नहीं ली ! किसी माई के लाल ने उसकी ओर नजर की तो वह उसे व्यर्थ का भार प्रतीत हुआ और कौडियो के मोल पराये हाथो सौंप दिया। सुधि नहीं लेने के कारण जल एवं उदेई ने उसका विनाश कर डाला। कई व्यक्तियो ने उन ग्रन्थो को फाड़फाड़ कर पुड़ियां बांध कर लेखे लगा दिया। कहना होगा कि इनसे तो वे अच्छे रहे जिन्होने अल्प मूल्य मे ही सही बेच डाला, जिससे अधिकारी व्यक्ति आज भी उनसे लाभ उठा रहे है। जिन्होंने पैसा देकर खरीदा है वे उसे संभालेंगे तो सही। हमे तो पूर्वजों के श्रम का मूल्य नहीं, पैसे का मूल्य है, अतः बिना पैसे प्राप्त चीज की कदर भी कैसे करते ?

भारतीय साहित्य की विशेषता एवं उपयोगिता को ध्यान मे रखते हुए लाहोर निवासी पं० राधाकृष्ण के प्रस्ताव को सं० १८९८ मे स्वीकार कर भारत सरकार ने

उसके अन्वेषण[1] एवं संग्रह की ओर ध्यान दिया। फलतः हजारो ग्रन्थों की लक्षाधिक प्रतियो का पता लग चुका है। डॉ० कीलहार्न, बूलर, पीटर्सन, भांडारकर, बर्नेल, राजेन्द्रलाल मित्र, हरप्रसाद शास्त्री आदि की खोज रिपोर्टों एवं सूचीपत्रो को देखने से हमारे पूर्वजों की मेधा पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। डा० आफ्रेक्ट ने 'कैटेलोगस कैटेलोगरम' के तीन भागो का तैयार कर भारतीय साहित्य की अनमोल सेवा की है। उसके पश्चात् और भी अनेक खोज रिपोर्टें एवं सूचीपत्र प्रकाशित हो चुके हैं जिनके आधार से मद्रास युनिवर्सिटी ने नया 'कैटेलोगस कैटेलोगरम' प्रकाशित करने की आयोजना की है। खोज का काम अब दिनोंदिन प्रगति पर है अतः निकट भविष्य मे हमारी जानकारी बहुत बढ़ जायगी, यह निर्विवाद है।

हिन्दी भाषा का विकास एवं उसका साहित्य—

प्रकृति के अटल नियमानुसार सब समय भाषा एकसी नहीं रहती, उसमे परिवर्त्तन होता ही रहता है। वेदो की आर्ष भाषा मे पिछली संस्कृत का ही मिलान कीजिये यही सत्य सन्मुख आयगा। इसी प्रकार प्राकृत अपभ्रंश मे परिणत हुई और आगे चलकर वह कई धाराओं मे प्रवाहित हो चली। वि० सं० ८३५ मे जैनाचार्य दाक्षिण्यचिन्हसूरि ने जालोर मे रचित 'कुवलयमाला' मे ऐसी ही १८ भाषाओं का निर्देश करते हुए १६ प्रान्तो की भाषाओं के उदाहरण उपस्थित[2] किये है। मेरे नम्रमतानुसार हिन्दी आदि प्रान्तीय भाषाओं के विकास को जानने के लिये यह सर्वप्रथम महत्वपूर्ण निर्देश है। हिन्दी भाषा की उत्पत्ति पर विचार करते हुए कुवलयमाला मे निर्दिष्ट मध्यदेश की भाषा से उसका उद्गम हुआ ज्ञात होता है। ९ वीं शताब्दी मे मध्य देश मे बोले जाने वाले 'तेरे मेरे आउ" शब्द ११५० वर्ष होजाने पर भी आज हिन्दी मे उसी रूप मे व्यवहृत पाये जाते है। १४ वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री जिनप्रभसूरि या उनके समय के रचित गुर्जरी, मालवी, पूर्वी और मरहठी भाषा की बोली नामक कृति[3] उपलब्ध है उससे हिन्दी का सम्बन्ध पूर्वी के ही अधिक निकट ज्ञात होता है। अनूप संस्कृत पुस्तकालय मे "नव बोली छंद" नामक रचना प्राप्त है

१—पुरातत्वान्वेषण का आरंभ सन् १७७४ के १४ जनवरी को सर विलीयम जोन्स के एशियाटिक सोसायटी की स्थापना से शुरु होता है।

इसके सम्बन्ध मे मुनि जिनविजयजी का "पुरातत्व संशोधन नो पूर्व इतिहास" निबंध द्रष्टव्य है जो आर्यविद्याव्याख्यानमाला में प्रकाशित है।

२—देखें अपभ्रंश काव्यत्रयी पृ० ९१ से ९४।

३ - राजस्थानी, वर्ष ३ अंक ३ मे प्रकाशित।

उससे भी हिन्दी का सम्बन्ध दिल्ली एवं पूर्व की बोली से ही सिद्ध होता है अर्थात् हिन्दी मूलतः मध्यदेश एवं पूर्व के ओर की भाषा है।

मध्यप्रदेश भारत का हृदय स्थानीय होने से साधु सन्तो ने यहाँ की भाषा में अपनी वाणियाँ प्रचारित की। वे लोग सर्वत्र घूमते रहते हैं अतः उनके द्वारा हिन्दी का सर्वत्र प्रचार होने लगा। इसके पश्चात् मुसलमानी शासको ने दिल्ली को भारतवर्ष की राजधानी बनाया अतः उसकी आसपास की बोली को प्रोत्साहन मिलना स्वाभाविक ही था। इधर ब्रजमंडल जो कि भगवान् कृष्ण की लीलाभूमि होने के कारण, हिन्दुओ का तीर्थधाम होने से एवं राजपूताना उसका निकटवर्ती प्रदेश होने के कारण ब्रजभाषा का प्रचार राजस्थान मे दिनोदिन बढ़ने लगा। महाकवि सूरदास आदि का साहित्य और वल्लभसम्प्रदाय के राजस्थान मे फैल जाने से भी ब्रजभाषा के प्रचार मे बहुत कुछ मदद मिली। राजपूत नरेशो ने हिन्दी के कवियो को बहुत प्रोत्साहन दिया। ब्रज के अनेक कवियो को राजस्थान के राजदरबारो मे आश्रय मिला। फलतः सैकड़ो कवियो के हजारो हिन्दी ग्रन्थ राजस्थान मे रचे गये। अन्यत्र रचित उपयोगी एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपिये कराकर भी राजस्थान मे विशाल संख्या मे संग्रह की गई जिसका आभास राजस्थान के विविध राजकीय संग्रहालयो एवं जैनज्ञान भंडारो आदि मे प्राप्त विशाल हिन्दी साहित्य से मिल जाता है।

वैसे तो हिन्दी का विकास ८ वी शताब्दी से माना जाता है और नाथपंथी-योगियो और जैन विद्वानो के विपुल अपभ्रंश काव्यों[१] से उसका घनिष्ट सम्बन्ध है पर हिन्दी भाषा का निखरा हुआ रूप खुसरो की कविता मे नजर आता है। यद्यपि उनकी रचनाओ की प्राचीन प्रति प्राप्त हुए बिना उनकी भाषा का रूप ठीक क्या था, नहीं कहा जासकता। उसके पश्चात् सबसे अधिक प्रेरणा कबीर के विशाल साहित्य से मिली है। नूरक चंदा-मृगावती, पद्मावत आदि कतिपय प्रेमाख्यानो से १५ वी १६ वी शताब्दी के हिन्दी भाषा के रूप का पता चलता है पर इसका उन्नतकाल १७ वीं शताब्दी है। सम्राट् अकबर के शान्तिपूर्ण शासन का हिन्दी के प्रचार मे बहुत बड़ा हाथ रहा है। वास्तव मे इसी समय हिन्दी की जड़ सुदृढ़ रूप से जम गई और आगे चलकर यह पौधा बहुत फला फूला। हिन्दी ने अपनी अन्य सब भाषाओ को पीछे छोड़ कर जो अभ्युदय लाभ किया वह सचमुच आश्चर्यजनक एवं गौरवास्पद है।

---

१ -सरहप्पा, कण्हपा, गौरक्षपा, आदि नाथपंथी योगी एवं जैन कवियों के रचना के उदाहरण देखने के लिये 'हिन्दी काव्य धारा' ग्रन्थ का अवलोकन करना चाहिये।

१७ वी और १८ वीं शताब्दी मे हिन्दी के अनेक सुकवियो का प्रादुर्भाव हुआ जिनके ललित काव्यो ने इसकी सुख्याति सर्वत्र प्रचारित करदी। इधर राजसभाओ मे इन कवियो द्वारा हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ी उधर कबीर, सूर के पदो एवं तुलसीदासजी की रामायण ने जनसाधारण मे हिन्दी की धूम सी मचादी फलत: इसका साहित्य इतना समृद्ध, विशाल एवं विविधतापूर्ण पाया जाता है कि अन्य कोई भी भाषा इसकी तुलना मे नहीं खड़ी हो सकती।

हिन्दी साहित्य की शोध—

प्राचीन हिन्दी साहित्य की विशालता की ओर ध्यान देते हुए नागरीप्रचारिणी सभा ने सर्वप्रथम हिन्दी ग्रन्थो के विवरण संग्रह करने की उपयोगिता पर ध्यान दिया। सभा ने सन् १८९८ तक तो एशियाटिक सोसायटी एवं संयुक्त प्रदेश की सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया पर वह विशेष फलप्रद नहीं होने मे १८९९ मे प्रान्तीय सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। उसने ४००) रु० वार्षिक सहायता देना व रिपोर्टें[1] अपने खर्च से प्रकाशित करना स्वीकार किया। यह सहायता बढ़ते-बढ़ते दो हजार तक जा पहुँची। इस प्रकार सन् १९०० से लगाकर ४७ वर्ष होगये। निरन्तर खोज होते रहने पर भी हिन्दी भाषा का अभी आधा साहित्य भी हमारी जानकारी मे नहीं आया। अनेक स्थान तो अभी ऐसे रह गये है जहाँ अभीतक बिलकुल अन्वेषण नहीं हो पाया। राजपूताने को ही लीजिये इसमे अनेक रियासते है और बहुतसे राज्यो मे कई राजा बड़े विद्याप्रेमी हो गये है। उनके आश्रय एवं प्रोत्साहन से बहुत बड़े हिन्दी साहित्य का निर्माण हुआ है पर उनमे से जोधपुर आदि के राज्य-पुस्तकालयो के कुछ ग्रन्थो को छोड़ प्राय: सभी ग्रन्थ अभीतक अन्वेषक की बाट जो रहे है। जहाँतक मुझे ज्ञात है इसकी ओर सर्वप्रथम लक्ष्य देने वाले अन्वेषक मुंशी देवीप्रसादजी है। आपने 'राज रसनामृत', 'कविरत्नमाला', 'महिलामृदुवाणी' आदि मे राजस्थान के हिन्दी

१—खेद है कि सरकार ने कुछ रिपोर्टें प्रकाशित करने के पश्चात् कई वर्षो से प्रकाशन बंद कर दिया है। प्रकाशित सब रिपोर्टें अब प्राप्त भी नही। अत: आजतक की खोज से प्राप्त हिन्दी ग्रंथो के विवरणो की संग्रहसूची प्रकाशित होनी अत्यावश्यक है। नागरी प्रचारिणी सभा के हस्तलिखित हिन्दी पुस्तको का संक्षिप्त विवरण (१९४३ तक का) प्रकाशन प्रारभ किया था वह भी अधूरा ही पड़ा है। सभा को उसे शीघ्र ही प्रकाश मे लाना चाहिये ताकि भावी अन्वेषको को कौन-कौनसे कवियो एवं ग्रंथो का पता आजतक लग चुका है जानने मे सुगमता उपस्थित हो। 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' ग्रन्थ से जिस प्रकार मुद्रित 'हिन्दी पुस्तको' की आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है उसी ढंग से प्राचीन ग्रन्थो के सम्बन्ध मे भी एक ग्रन्थ प्रकाशित होना चाहिये।

कवियों को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। सं० १९६८ में द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्य-विवरण (दूसरे भाग) मे आपका 'राजपूताने मे हिन्दी पुस्तको की खोज' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमे ३३८ हिन्दी ग्रन्थो की अक्षरादि क्रम-सूची दी गई है। उसमे आपने यह भी लिखा है—सूचियो की कई जिल्दे बन गई हैं। श्री मोतीलालजी मेनारिया ने भी आपके ८०० कवियो की सूची मिश्र-बन्धुओ को भेजने एवं उनमे २०० नवीन कवियों के निर्देश होने का उल्लेख किया है अत: उन जिल्दो को उनके वंशजो से प्राप्त कर प्रकाशित करना परमावश्यक है। उससे बहुतसी नवीन जानकारी प्रकाश मे आने की संभावना है।

राजस्थान ने अपनी स्वतंत्र भाषा होने पर भी एवं उसमे विपुल साहित्य की रचना करने पर भी हिन्दी भाषा की जो महान् सेवा की है वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्व० सूर्यनारायणजी पारीक ने १. राजस्थान की हिन्दी सेवा, २. राजस्थान के राजाओ की हिन्दी सेवा, ३. राजस्थान की हिन्दी कवि-कवयित्रीयें आदि विस्तृत लेखो द्वारा इस पर प्रकाश डाला था[1] पर राजस्थान मे हिन्दी ग्रन्थो की हजारो प्रतिये है अत: ऐसे प्रयत्न निरन्तर होते रहने वांछनीय है। छुटकर प्रयत्नो से विशेष सफलता नहीं मिल सकती। यहां तो वर्षों तक निरंतर खोज चालू रखने का प्रयत्न करना होगा। नागरी प्रचारिणी सभा की भांति दो तीन वेतनभोगी व्यक्ति रखकर राजकीय प्रसिद्ध संग्रहालयो, पुराने खानदानो, विद्याप्रेमी घरानो, जैन उपासको, साधु सन्तो के मठो मे और गांव-गांव मे, घर-घर मे घूम फिर कर तलाश करनी होगी। क्योंकि बहुत से ग्रन्थ ऐसे है जिनकी अन्य प्रतिलिपियें नहीं हो पायी उनकी प्राप्ति कवि के आश्रयदाता या वंशजो क पास ही हो सकती है। कई व्यक्ति आज बहुत हीन दशा मे है पर उनके पूर्वज बड़े विद्वान् व विद्याप्रेमी हो गये। उनके पास पूर्वजो के संग्रहीत अनेको दुर्लभ-ग्रन्थ प्राप्त हो सकेगे। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, अलवर, बूंदी आदि अनेको राजकीय संग्रहालयो के अतिरिक्त दो महत्वपूर्ण संग्रह भी राजस्थान मे है वे है—विद्याविभाग कांकरोली और पुरोहित हरीनारायणजी जयपुर के संग्रहालय। इन सब संग्रहालयो की खोज रिपोर्टें अति शीघ्र प्रकाशित होनी चाहिये।

प्रस्तुत ग्रंथ का संकलन—

उदयपुर विद्यापीठ ने राजस्थान मे हिन्दी ग्रन्थो की शोध का परमावश्यक कार्य

१—राजस्थान के आधुनिक हिन्दी विद्वानो के सम्बन्ध मे 'राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार' नामक ग्रन्थ देखना चाहिये जो कि हिन्दी परिषद्, जयपुर से प्रकाशित है।

हाथ मे लेकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। इसकी ओर से श्री मोतीलालजी मेनारिया एम० ए० के संग्रहीत एवं सम्पादित "राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज" का प्रथम भाग सन् १९४२ मे प्रकाशित हो चुका है। उदयपुर विद्या-पीठ के शोध-संस्थान द्वारा यह कार्य मुझे भी सोपा गया और मै अपना कार्य शीघ्रता से सम्पन्न कर सकूं इसके लिए सहायतार्थ श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया साहित्यरत्न भी कुछ समय बाद बीकानेर आ गये। बहुतसे ग्रन्थो के नोट्स मैंने पहले ले ही रखे थे। उनके आने से वह कार्य पूरे वेग से चलाया गया और दस बारह दिनो मे ही कुल मिलाकर एक भाग की जगह दो भागो के योग्य विवरण संग्रहीत होगये अतः उनका विषय-वर्गीकरण करके करीब आधे विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दूसरे भाग के रूप मे प्रकाशित करने का निश्चय कर लिया तदनुसार यह ग्रन्थ पाठको की सेवा मे उपस्थित है।

विवरण लेते समय पहले तो सभी हिन्दी ग्रन्थो का विवरण लिया जाना सोचा गया था, पर जब मैंने अपने संग्रह का ही टटोला तो छोटे बडे ५०० के करीब हिन्दी ग्रन्थ उपलब्ध हुए अतः मैंने यही उचित समझा कि अभीतक हिन्दी जगत् मे अज्ञात ग्रन्थ ही सैकडो उपलब्ध है और उनमे से बहुतसे विविध दृष्टियो से महत्वपूर्ण है अत. उनका विवरण ही पहले प्रकाश मे आना चाहिये अन्यथा पूर्व ज्ञात ग्रन्थो का परिचय प्रकाशित करने से व्यर्थ ही समय शक्ति एवं द्रव्य अर्थ का अपव्यय होगा और संभव है अज्ञात ग्रन्थो के प्रकाश मे लाने का मौका ही नहीं मिले जो बहुत अन्याय होगा। बीकानेर मे अनूप संस्कृत लाइब्रेरी नामक राजकीय संग्रहालय भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसमे विविध विषयो के महत्वपूर्ण ग्रन्थो की १२ हजार प्रतिये है जिनमे हिन्दी ग्रन्थो की प्रतिये भी १ हजार के लगभग है। अतः अद्यावधि अज्ञात ग्रन्थों के ही विवरण संग्रहीत करने पर कई भाग होजाने संभव है। इन सब बातो पर विचार करके दो भाग के उपयुक्त विवरण ले लिये जाने पर उस कार्य को स्थगित कर दिया गया एवं काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तको का संक्षिप्त विवरण से चेक कर जिनका विवरण उसमे आगया था उन्हे अलग निकालकर ३५०-४०० अज्ञात ग्रन्थो के विवरण[1] हिन्दी विद्यापीठ शोध-संस्थान के सञ्चालक श्री

१—जिनमे से १८६ ग्रन्थो के विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित हो रहे है। अवशिष्ट विवरणो मे १ पुराण उपनिषद्, २ संत साहित्य, ३ कृष्ण काव्य, ४ वेदान्त, ५ नीति, ६ जैन• साहित्य, ७ शतक, ८ बावनी, ९ फुटकर इन विषयो के ग्रन्थो के विवरण चौथे भाग मे प्रकाशित होगे।

पुरुषोत्तमजी मेनारिया के सुपर्द कर दिये। मेरी हस्तलिपि बड़ी दुष्पाठ्य है और मेनारियाजी ने जो विवरण लिये वे भी बड़ी उतावली मे लिये थे अतः प्रेस कापी करने करवाने का श्रम भी मेनारियाजी ने ही उठाया।

विवरण लिखने की पद्धति--

प्रस्तुत ग्रन्थ मे विवरण संग्रह की पद्धति मे आपको कई नवीनताएं प्रतीत होंगी अतः उनके सम्बन्ध मे स्पष्टीकरण करदेना आवश्यक है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो के अवलोकन एवं सूची बनाने मे मेरी अत्यधिक अभिरुचि रही है। मेरे साहित्य साधना के १८ वर्ष बहुत कुछ इसी कार्य म बीते हैं। पाश्चात्य एवं भारतीय अनेक विद्वानो के सम्पादित पचासो सूचीपत्रो (जितने भी अधिक मुझे ज्ञात हुए व मिल सके) को देखा एवं ४० हजार के लगभग प्रतियो की सूची तो मैने स्वयं बनाई है अतः उसके यत्किंचित् अनुभव के बल पर मुझे प्रचलित पद्धति मे कुछ सुधार करना आवश्यक प्रतीत हुआ। मेरे नम्र मतानुसार विवरण मे अपनी ओर से कम से कम लिखकर ग्रन्थकार, ग्रन्थ एवं प्रति के सम्बन्ध मे प्राप्त प्रति से ही आवश्यक उद्धरण अधिक रूप मे लिया जाना ज्यादा अच्छा है। पाठको को बतलाने योग्य जो कुछ समझा जाता है वह ग्रन्थकार के शब्दो ही मे रखा जाय तो उसकी प्रमाणिकता बहुत बढ़ जायगी। विवरण लिखने वालो की जरासी असावधानी या भूल-भ्रान्ति से परवर्त्ती पचासो ग्रन्थ उस भूल के शिकार हो जाते मैने स्वयं देखा है क्योंकि उनको प्रमाण माने बिना काम चलता नहीं और उसके अनुकरण में जितने भी व्यक्ति लिखेंगे सभी उसी भ्रान्ति को दुहराते जायेंगे। मौलिक अन्वेषण व जाँच कर लिखने वाले हैं कितने? अतः मैने ग्रन्थ के उद्धरण अधिक प्रमाण मे लिये है और अपनी ओर से कुछ भी नही या कम से कम लिखने की नीति बरती है। ग्रन्थ का नाम, ग्रन्थकार उनका जितना भी परिचय ग्रन्थ मे है, ग्रन्थ का रचनाकाल, ग्रन्थ रचने का आधार आदि ज्ञातव्य जिस ग्रन्थ मे संक्षेप या विस्तार मे जितना मिला विवरण मे ले लिया है जिससे प्रत्येक व्यक्ति ऊपर निर्दिष्ट मेरे लिखतसार को स्वयं जांचकर निर्णय कर सके। जहाँतक हो सका है ग्रन्थ के पद्यो की संख्या का भी निर्देश कर दिया है। अपनी निर्धारितनीति को मै सर्वत्र नहीं बरत सका, इसका कारण है विवरण तैयार करते समय सब प्रतियो का सामने न होना। कई संग्रहालयो के वर्षों पहले एवं उतावल मे नोट्स कर लिये गये थे और विवरण तैयार करते समय प्रतिये सामने न थी। अतः पूर्वकालीन नोट्स का ही उपयोग कर संतोष करना पड़ा। प्रति के लेखनकाल के सम्बन्ध

में भी मैंने अपने अनुभव का उपयोग किया है। जिन प्रतियों में लेखन संवत् नहीं था उनका कागज एवं लिखावट आदि के आधार से अनुमानित शताब्दी लिखदी गई है जिससे प्रति की प्राचीनता एवं ग्रन्थकार के अनिर्दिष्ट समय का भी कुछ अनुमान लगाया जा सके।

विवरण लेने की प्रस्तुत पद्धति मे जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल देशाई के जैनगुर्जर कविओ से भी मैं बहुत प्रभावित हूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ की कतिपय विशेषताएं--

प्रस्तुत ग्रन्थ की दो विशेषताओ (अज्ञात ग्रन्थो का ही विवरण लेना एवं आवश्यक ज्ञातव्य को ग्रन्थकार के शब्दो मे ही अधिक से अधिक रखना) का ऊपर निर्देश किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त तीन विशेषताये और भी है जो पूर्व प्रकाशित विवरण ग्रन्थों से तुलना करने पर महत्व की प्रतीत होगी उनका भी संक्षेप मे उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हूँ।

(१) अन्य सब हिन्दी ग्रन्थों के विवरणग्रन्थों से भिन्न इसमे एक-एक विषय के अधिक से अधिक अज्ञात ग्रन्थो का विवरण संग्रहीत किया गया है और उनका विषय वर्गीकरण कर दिया गया है। इसमे मेरा प्रधान लक्ष्य यह रहा है कि अभी तक हमारे हिंदी साहित्य का अनुशीलन विषयवर्गीकरण की दृष्टि से नहीं किया गया। इसके बिना हमारे साहित्य की समृद्धता एवं उपयोगिता का उचित मूल्याङ्कन नहीं हो सकता। श्रीयुत डॉ० रामकुमार वर्मा के हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास के प्रारंभ मे कतिपय विषयों के हिन्दीग्रन्थो की तालिका दी गई है पर वह बहुत ही सीमित एवं अपूर्ण है। मेरी राय मे जिस प्रकार विविध धाराओ की आलोचना की जा रही है उसी प्रकार प्रत्येक विषय के जितने भी ग्रन्थ हिन्दी साहित्य मे है उन सब का अध्ययन कर किस कवि मे क्या विशेषता थी ? किन-किन नवीन बातो को कवि ने अपनी अनुभूति के बलपर नवीन रूप मे या नवीन शैली से प्रतिपादित किया, किसने किन-किन ग्रन्थो से प्रेरणा ली, अनुकरण किया, किन-किन विषयो पर वर्त्तमान जगत आगे बढ़ चुका है या पीछे रह गया है, उस साहित्य का विकास कबसे व कैसे हुआ ? इत्यादि उस विषय सम्बन्धी जितने भी तथ्यों पर विचार किया जा सके करके प्रकाश डाला जाय, इससे महत्वपूर्ण ग्रन्थों का पता चलेगा, वे प्रकाशित किये जाकर हमारी ज्ञानवृद्धि करेगे। हमारे विद्वानो का ध्यान आकर्षित करने के लिये मैंने छंद[1], कोष, रत्नपरीक्षा, संगीत[2], वैद्यक आदि विषयो एवं शतक, बावनी, गजल आदि

प्रकारों के हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में कई लेख प्रकाशित किये हैं। उनसे स्पष्ट है कि किन-किन विषयों के कितने ग्रन्थों का अभी तक पता चल चुका था और उस विषय के मुझे प्राप्त अज्ञात ग्रन्थ कितने है। मेरे उन लेखो से पाठक स्वयं समझ सकेंगे कि प्रस्तुत विवरणी द्वारा किस-किस विषय के नवीन ग्रन्थ किस परिमाण मे प्रकाश में आये है।

(२) प्रस्तुत विवरण मे कतिपय ऐसे विषय एवं ग्रन्थो के विवरण है जो हिन्दी साहित्य के इतिहास मे एक नवीन जानकारी उपस्थित करते हैं जैसे नगर-वर्णनात्मक गजल-साहित्य। ऐसी एक भी रचना अभी तक किसी विवरण मे प्राप्त नहीं हुई एवं ये सभी गजले जैनकवियों की रचित है (एक आबूगजल जैनेतर-रचित है। वह भी जैन गजलो की प्रेरणा पाकर ही रची गयी ज्ञात होती है)। एवं 'हिन्दी ग्रन्थो की टीकाएं' विभाग मे हिन्दी ग्रन्थो पर तीन संस्कृत टीकाएँ एवं एक राजस्थानी टीका का विवरण आया है। अभी तक हिन्दी ग्रन्थो पर संस्कृत मे टीकाये रची जाने की जानकारी शायद यहाँ पहला ही बार दी गई है।

(३) अन्य विवरण-ग्रन्थों मे राजस्थानी लोकभाषा व साहित्यिक भाषा डिंगल और गुजराती आदि के ग्रन्थो को भी हिन्दी के अंतर्गत मानकर उनका सम्मिलित विवरण दिया गया है। मेरी राय मे राजस्थानी भाषा एक स्वतंत्र भाषा है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से उसका मेल हिन्दी की अपेक्षा गुजराती से ज्यादा है। अत: मैंने राजस्थानी बोल-चाल की भाषा (जिसमे जैन कवियो ने बहुत विशाल साहित्य निर्माण किया एवं बाता ख्यात आदि गद्य रचनाओं मे तथा लोक साहित्य मे जो अधिक रूप से व्यवहृत हुई है) एवं साहित्यिक (चारण बारहठ प्रभृति रचित गीत आदि) डिंगल भाषा के ग्रन्थो के विवरण स्वतंत्र ग्रन्थ मे लेने की योजना बनाई है और प्रस्तुत विवरण मे हिन्दीप्रधान । मिश्रित राजस्थानी ग्रन्थों को सम्मिलित

[पृष्ठ ८ की अन्तिम लाइन के–छन्द[1], संगीत[2], वैद्यक[3], बावनी[4] का फुटनोट यहाँ देखे]

१. देखे, सम्मेलनपत्रिका, माघ-चैत्र का अंक। विविध विषयक जैन ग्रन्थो के सम्बन्ध में इसी पत्रिका के वर्ष २८ अंक ११ में लेख प्रकाशित है।

२. कोष—नाममाला, रत्नपरीक्षा और संगीतविषयक ग्रन्थो की सूची राजस्थान साहित्य वर्ष १ अंक १-२-४ मे प्रकाशित की गयी है जो कि राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित है।

३. हिन्दुस्तानी वर्ष ११ अंक २।

४. शतक और बावनी के सम्बन्ध मे मधुकर वर्ष ५ अंक १५-१९ में प्रकाश डाला गया है। गजलसाहित्य मुनि कान्तिसागरजी शीघ्र ही प्रकाशित कर रहे है।

करने के कारण) ग्रन्थों के ही विवरण लिये गये हैं। प्रारंभिक खोज के समय हिन्दी ग्रन्थो की इतनी अधिक उपलब्धि नहीं हुई थी अतः अन्य प्रान्तीय भाषाओं के विवरण भी उन्हें हिन्दी की शाखा मानकर साथ ले लिये गये, वह अनुचित नहीं था। पर अब जब हिन्दी के ही हजारों ग्रन्थों का पता चल चुका व चल रहा है, अन्य भाषा के साहित्य को भी साथ में निभाये जाना भारी पड़ जाता है। राजस्थानी ग्रन्थो का विवरण-ग्रन्थ स्वतंत्र रूप से प्रकाशित किया जायगा एवं उसके साहित्य का इतिहास भी प्रकाशित करने का मेरा विचार है।

कवि-परिचय में भी समस्त कवियों का यथाज्ञात संक्षिप्त परिचय दिया गया है एवं परिशिष्टत्रय में अज्ञातकर्तृक ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार और अपूर्ण प्राप्त ग्रन्थों की सूची देदी गई है।

अब इस ग्रन्थ की कुछ अन्य आवश्यक बातों का परिचय भी करा दिया जाता है जिससे सरसरी तौर से ग्रन्थ के सम्बन्ध में जानकारी हो जाय—

(१) प्रस्तुत ग्रन्थ १२ विभागों में विभक्त है जिनके नाम एवं विवरण लिये गये ग्रन्थों की संख्या इस प्रकार है—

		विषय	पृष्ठ	ग्रन्थ
१.	(क)	नाममाला (कोष)	पृ० १ से ८	१०
२.	(ख)	छंद	पृ० ९ से १४	८
३.	(ग)	अलंकार	पृ० १५ से ३७	३१
४.	(घ)	वैद्यक	पृ० ३८ से ५४	२१
५.	(ङ)	रत्नपरीक्षा	पृ० ५५ से ६०	१६
६.	(च)	संगीत	पृ० ६१ से ६८	१२
७.	(छ)	नाटक	पृ० ६९ से ७०	३
८.	(ज)	कथा	पृ० ७१ से ९१	२३
९.	(झ)	ऐ० काव्य	पृ० ९२ से ९८	८
१०.	(ञ)	नगर-वर्णन	पृ० ९९ से ११६	३२
११.	(ट)	शकुन'सामुद्रिक' ज्योतिष, स्वरोदय, रमल, इन्द्रजाल	पृ० ११७ से १३४	२८
१२.	(ठ)	हिन्दी ग्रन्थो की टीकाये	पृ० १३५ से १४०	४

इनमें से मिश्र-बन्धु-विनोद[1] देखने पर १. ख्यालकबारी २. लखपत जस सिंधु और ३. चम्पूसमुद्र तीन ग्रन्थों का उल्लेख उसमें प्राप्त होता है अवशेष १८३ ग्रन्थ उसमें अनिर्दिष्ट हैं।

(२) जैसा कि कविनामानुक्रमणिका से स्पष्ट है इसमें १०२ कवियों की १३८ रचनाओं का विवरण है। इनका परिचय कविपरिचय मे दिया गया है। इसमें से मिश्र-बन्धु-विनोद[1] मे २० कवियो का उल्लेख है। कई अन्य कवियो के भी नाम वहाँ मिलते हैं पर वे विवरणोक्त ही है या समनाम वाले भिन्न कवि हैं, यह निश्चय करने का साधन नही है। मेनारियाजी के ग्रन्थ मे जान एवं गणेशदास दो कवियो का उल्लेख आ चुका है। प्राय: ८० कवि इस ग्रन्थ द्वारा ही सर्व प्रथम प्रकाश मे आ रहे हैं। ४८ रचनाये अज्ञातकर्तृक है जिनकी सूची परिशिष्ट मे दे दी गयी है।

(३) इस विवरणी मे जिन-जिन पुस्तकालयो की प्रतियो का उपयोग किया गया है उनका भी उल्लेख कर देना यहाँ आवश्यक है। इनमें से सबसे अधिक विवरण (१) अभय जैन ग्रन्थालय (जो कि हमारा निजी संग्रह है) तत्पश्चात् अनूप संस्कृत लायब्रेरी (बीकानेर का राजकीय पुस्तकालय) के है। इनके अतिरिक्त (२) बृहत् ज्ञान भंडार (खरतरगच्छीय बड़ा उपासरे मे स्थित) जिसके अंतर्गत महिमा भक्ति भंडार, दानसागर भंडार, वर्द्धमान भंडार, जिनहर्षसूरि भंडार आदि भी आजाते है (४) श्री जिन चारित्र सूरि ज्ञान भंडार (५) जयचन्द्रजी ज्ञान भंडार (६) आचार्य शाखा भंडार (७) पन्नीबाई उपासरा का संग्रह (८) गोविन्द पुस्तकालय (९) लछीरामयति संग्रह (१०) राव गोपाल सिहजी वैद का संग्रह (११) कविराज सुखदानजी का संग्रह (१२) विनय सागरजीका संग्रह (हमारे यहीं है) (१३) नवल नाथजी बगीची। ये तो बीकानेर में ही हैं। बाहर के संग्रहालयों मे (१४) श्रीचंद्रजी गधैया संग्रह, सरदार शहर (१५) सीताराम शर्मा राजगढ़ (१६) यतिवर्य ऋद्धि करणजी का संग्रह, चुरु, ये बीकानेर रियासत मे है[2] (१७) यति विष्णुदयालजी का संग्रह फतेपुर, जयपुर रियासत मे है। (१८) जिनभद्र सूरि

१—मिश्र-बन्धु-विनोद मे सैकडों भूल-भ्रान्तियें हैं जिसका परिमार्जन प्रस्तुत ग्रन्थ के कवि-परिचय मे किया गया है। मैंने अपने 'मिश्र-बन्धु-विनोद की भद्दी भूलें" शीर्षक लेख में इस सम्बन्ध मे विशेष रूप से प्रकाश डाला है जो कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका में शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

२—नं० १ से ९ और १४ वें १६ वें संग्रहालयों के, सम्बन्ध में मेरा "बीकानेर के जैन ज्ञानभंडार" शीर्षक निबंध देखना चाहिये जो कि 'वरदा' में प्रकाशित हो चुका है।

भंडार (१९) वृद्धिचंद्रजी यति संग्रह (२०) चुन्नी संग्रह, ये तीन जैसलमेर मे[१] हैं। (२१) हरि सागर सूरि भंडार, लोहावट जोधपुर रियासत मे है। इन इक्कीस संग्रहालयों की प्रतियो का विवरण है। प्रसंगवश विवरण लिये गये ग्रन्थो की अन्य प्रतियाँ जो राजस्थान के बाहर के संग्रहालयो मे भी ज्ञात हैं उन पांच संग्रहालयो (१) दि० जैन मन्दिर देहली, सेठ कुचेवाली गली मे अवस्थित (२) भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना (३) नकोदर जैन-ज्ञानभंडार पंजाब (४) गुलाब कुमारी लायब्रेरी कलकत्ता (५) साहित्यालंकार मुनि कान्ति सागरजी संग्रह का भी उल्लेख किया गया है।

आभार—

कोई भी साहित्यिक कार्य प्रायः अनेक व्यक्तियों के सहयोग से ही सम्पन्न होता है। अतः जिन-जिन महानुभावों का सहाय प्राप्त हो उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाश मे आने के निमित्तभूत एवं सुविधा देकर कार्य मे सुगमता एवं शीघ्रता करने के लिये श्रीजनार्दनरायजी नागर, बीकानेर पधार कर कई दिन लगातार मेरे साथ श्रम उठाकर विवरण-संग्रह मे सहायता एवं प्रेस-कोपी तैयार करने-करवाने के लिये श्रीपुरुषोत्तमजी मेनारिया और विषय-वर्गीकरण आदि कार्यों में सत्परामर्श देने एवं प्रूफ संशोधन मे सहायता करने के लिये माननीय स्वामी नरोत्तमदासजी का मैं बड़ा अभारी हूँ। सबसे अधिक आभार तो जिन संग्रहालयो की प्रतियो का विवरण लिया गया है उनके संचालकों का मानना आवश्यक है जिनकी कृपा के बिना यह ग्रन्थ संकलित हो ही नहीं सकता था। उन संचालकों मे से श्री अनूप संस्कृत लायब्रेरी की प्रतियो के यथावश्यक नोटस लेने की आज्ञा एवं सुविधा देने के लिये डायरेक्टर शिक्षाविभाग राज श्री बीकानेर, एवं क्यूरेटर महोदय का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ।

प्रस्तावना मे कुछ अधिक लिखने का विचार था। जिन-जिन विषयो के ग्रन्थो का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया गया है उन सभी विषयो के अद्यावधि प्राप्त समस्त ग्रन्थो की सूची एवं उनके विकास और हिन्दी साहित्य पर अन्य प्रासंगिक विचार प्रकट करने का विचार था पर ग्रन्थ को रोके रहना उचित नहीं समझ अत्यंत संक्षेप मे समाप्त की जा रही है। समय ने साथ दिया तो मेरे सम्पादित आगामी भागो के प्रकाशन के समय विस्तार से प्रकाश डालने की भावना है।

बीकानेर]

—अगरचन्द नाहटा

---

(१)—जैसलमेर के ज्ञान भंडारो एवं वहाँ के अज्ञात ग्रन्थो के सम्बन्ध में मेरे निम्नोक्त दो लेख प्रकाशित है :—(क) जैसलमेर के भंडारो की कुछ ताड़पत्रीय अज्ञात प्रतियें (प्र० अनेकान्त वर्ष ८ अंक १), (ख) जैसलमेर के भंडारो के अन्यत्र अप्राप्त ग्रन्थ (प्र० जैन साहित्य प्रकाश वर्ष ११ अंक ४)।

कवि नामानुक्रमणिका

ग्रन्थनामानुक्रमणिका

राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

(द्वितीय भाग)

(क) कोष-ग्रन्थ

(१) अनेकार्थ नाममाला । पद्य १२० । रचयिता—महासिंह । रचनासंवत—१५६०

आदि—

प्रारम्भ का एक पत्र खो जाने से ९ पद्य नहीं हैं । ९ वाँ पद्य इस प्रकार है—

> अग्नि धनंजय कहत कवि, पवन धनंजय आहि ।
> अर्जुन कहुयौ धनंजय, कृष्ण सारथी जाहि ॥ ९ ॥

अंत—

> जो इह अनेकार्थ कौ, पढ़ै सुनै नर कोइ ।
> ताके अनेका अर्थ इह, पुनि परमारथ होइ ।
> मो मनु निसु दिनु तुम बसौ, सदा भिखारीदास ।
> महासिंह तुम जाय जीयत, मो मन करौ निवास ॥ २० ॥

लेखन—सं० १७३० ज्येष्ठ मासे कृष्णपक्षे १२ शनौ । पातस्याहि श्री मनोविनोद अवरंगजेब राज्ये लि० पांडे महासिंह ।

> अमर आदि कोस जु घनै, तिनि कोस तु इहा लीन ।
> महासिंह कवि यों भनै, अनेकार्थ यह कीन ॥

प्रति—गुटकाकार पत्र १४ । पंक्ति १४-१५ । प्रति पंक्ति अक्षर १७—१६ । साइज ५॥×४॥ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) अनेकार्थ नाममाला। पत्र १८। विनयसागर । सं० १७०२ कार्तिक पूर्णिमा गुरुवार।

आदि—

दूहा गुन दीरघ ३, लघु ४२ अक्षर ४५

सदय हृदय गुन गन भरन, असरन ऋषभ जिनंद।
भव भय दुह दुहग टरहि, सुखवर करन दिनंद ॥ १ ॥

× × ×

अनेकारथ अनेक विधि, प्रबल बुद्धि प्रकाश।
शास्त्र समूह सोधि करि, विरचित विनय विलास ॥ ५ ॥

अंत—

धर्म पाटि कल्यान गुर, अचलगण सिणगार।
विनयसागर इम कहै, अनेकार्थ अधिकार ॥ ६८ ॥
सतरसहि बिडोतरे, कार्तिक मास निधान।
पूनमि दिन गुरुवासरे, पूरण एहि प्रधान ॥ ६९ ॥

इति श्री विनयसागरोपाध्याय विरचितायां दूहा बन्धानेकार्थनाममालायां तृतीयाधिकार संपूर्ण ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र १२। पंक्ति ११। अक्षर ३५।

(प्रति—भंडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) अनेकार्थी। पद्य ६० । सागर

आदि—

सारंग शब्द नाम—

कमल कुरंग मराल ससि, पावस कुसुमअनंग।
चातिक केहर दीप पिक, हेम राग सारंग ॥ १ ॥

अंत—

पिता सुपुत्र हित ध्यान मन, रति कौतक हित काम।
रसना षट-रस स्वाद हित पंच सुनो रस नाम ॥ ६० ॥

इति अनेकार्थी सागर कृत।
लेखन काल—१९ वीं शताब्दी।
प्रति—गुटकाकार बड़ा साइज। (अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(४) आतमबोध नाममाला । पद्य ७७२ । चतनविजय । सं० १८४७ माघ शुक्ला १० ।

आदि—

अथ नाममाला लिख्यते ।

दोहा—

सिद्ध सरभ(सर्व)चित धारि के, प्रणमु सारद पाय ।
मुझ ऊपर कीजे कृपा, मेधा दीज माय ॥ १ ॥
गुरु उपगारी जगत में, जाने सब संसार ।
चरन कमल समार के, वंदो बारमवार ॥ २ ॥
भाषा आतम बोध का, रचना रचो सुठाम ।
बहुत वस्तु है जगत में तिनको कहुँ बखान ॥ ३ ॥

अंत—

इह शुद्ध आतमबोधमाला, किये रचना नाम का ।
शुभ कुसुम मेधा सरस गुंथ्या, हिय धर इह दाम का ॥
अति महक आ,, ग्यान पावै, चतुरता उपज सही ।
चित चत चेतन समझ लीजे, नाम जग सोभा लही ॥ ७१ ॥
इक अष्ट चार अरु सात धरिय, माघ सुद दसमी रची ।
इह साख विक्रमराज का है, चित धार लीजे कवी ॥
इह नाममाला अति विमाला, कंठ धारे जे नरा ।
बहु बुद्धि उपज हिय माहि, ज्ञान जग में है खरा ॥ ७२ ॥

इति श्री आतमबोध नाममाला समाप्त ।

लेखनकाल—लिपिकर्त्ता श्र, मज्ज सं० १९२३ ।

प्रति — पत्र १८ । पंक्ति १२ । अक्षर ५० । साइज १० × ४॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) आगम नाममाला । मुग्राह ।

आदि—

आदि पुरुष गुरु शिष वर, जियदाता जगपाल ।
पावन पतित उधार अरु, दीनानाथ दयाल ॥ १ ॥
× × ×
अमर ग्रन्थ मे ज कहे, सुन लहे करि शुद्ध ।
कछु उपजाय अर्थ सो, नग नाउ निज बुद्ध ॥ ५ ॥
× × ×

भाषा महिमा अधिक है, दिन २ गुन अधिकाहि ।
मृतक जीवत मंत्र सो, तुहो तो भाषा माहि ॥ ९ ॥
× × ×
जे कवित्त भाषा पढ़ें, जोरत भाषा शुद्ध ।
तिनके समुझन कौ इते, बरनै विविध सुबुद्ध ॥ १३ ॥
× × ×

अंत—

सूरजसुत जम जगतभारि, जिर्यानपात कर जान ।
शिष्टभर्वा निर्दई अयुनि, रविनन ओपरि बान ॥

पद्य ६७ के बाद पद्यांक नहीं दिये ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—पत्र १४ । पंक्ति ११ से १४ । अक्षर ३६ से ४८ ।

विशेष—प्रति पर कर्ता का नाम सुबुद्धि दिया गया है जिस का आधार अज्ञात है, केवल छंद ११—१३ में सुबुद्धि नाम आता है पर वहां रचयिता के अर्थ में नहीं प्रतीत होता । आदि अंत दोनों ही भाग नाममय है (आदि का करतार नाम, अंत का जम नाम) कविका परिचय, रचना—समय आदि का कोई पता नहीं चलता ।

(जयचन्द्रजी भण्डार)

(६) ख्वालकबारी । पद्य १५४ ।

आदि—

ख्वालिकबारी सिरजनहार । वाहद् एक सदा करतार ॥ १ ॥
इस्म अल्लाह खुदायका नाउ । गरमा धूप सायह इह छाउ ॥ २ ॥
रसूल पइगंबर जानि बसीठ । यार दोस्त बोलीजइ ईठ ॥ ३ ॥
राह तरीक सबील पहिछानि । अरथ तिहु का मारग जानि ॥ ४ ॥
ससियर मह दिणयर खुरसेद् । काला उजला स्याह सफेद् ॥ ५ ॥
नीला पीला जर्द कबूद् । तांना बाना तानिस्तह पूद ॥ ६ ॥

अंत—

ख्वोहम् गुफ्त कहैगा है, ख्वाहम् करद् करूगा हूं ।
ख्वाहम् आमद् आऊंगा है, ख्वाहम् जिह मारूंगा हूं ।
ख्वाहम् शिस्त बइठउ काहु, ख्वाहम् शस्त बइठउ कातूं ।
यारमनी तो सिरजन मेरा, जानमनी तो जीवरा मेरा ॥ ८३ ॥

नम तमामसु । ख्वालकबारी ।। लेखन—पं० अभयसोमेनालेखि ।।
प्रति—पत्र २ । पंक्ति १७ । अक्षर ६० । साइज ९।।+४ ।

विशेष—प्रति में ग्रन्थ दो विभागों में लिखा हुआ है जिनमें क्रमश ७१ और ४३ पद्य हैं । प्रथम विभाग का अन्तिम पद्य इस प्रकार है--

तमन्ना वहम आरजू चाह कहीयइ ।
इतो दस्त हाथों कदम पाउ गहियइ ।। ७१ ।।

(अभयजैन ग्रन्थालय)

(७) धनजी नाममाला । पद्य १४५ । सागर कवि

आदि—

दोहा

पसुया (पशु) पति सिव सुत ईस्वरी, कवलासन अरु सभु ।
करि प्रणान(म) सुभ देव को, सागर करहु अरंभु ।। १ ।।
विश्नुनाम—विश्नु ना(न)रायण नरपति वंनवाली हरि स्याम ।
मधुसूदन अरु दैत्य रिपु, रावण- अरि श्रीराम ।। २ ।।

अंत—

अंतरध्यान नाम—गुप्त तिरोहित अंतरित, गूढ दुरूहनिलीय ।
लोकाजन में लुकि सर्वो इह विधि नाय ।। ४० ।।

इति श्री धनजी नाममाला सागर कृति समापूर्ण ।
लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।
प्रति- गुटकाकार बडा साइज । विविध कृतियों के साथ में यह कृति है ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(८) प्रदीपिका नाममाला । पद्य ३५५ । रघुनाथ ।

आदि—

अविरल मद रेखा दिप, गनपति ललित कपोल ।
गंध लुब्ध मनु मगन है, षटपद करत कलोल ।। १ ।।
हंस जान श्री सारदा, करत मधुर धुनि बीन ।
संत सकल सुरगन सदा, चरण कमल आधीन ।। २ ।।
बानी बरन सकें नहीं, मन पहुंचे नहि नाहिं ।
निराकार निरगुण जु है, सो सुर वे सुर आहि ।। ३ ।।

मान के नाम

> दर्पक मद अहंकार, मान गर्व मति छोह भरि।
> बर्द्धाम अपार, मानकि कौ अभिमान सुभ ॥ ३ ॥

अंत —

जुगल के नाम

> द्वै जग द्वै जमल बीय, मिथुन अरु बिंब उभै।
> नितही कीसोर जुगल, समरन बर्द्धदास कै ॥ ११३ ॥

इति श्रीमानमंजरी संपूर्ण ॥

ले०—संवत् १७७५ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने श्री जयतारिणी मध्ये लि० पं० श्री यशोलाभ गणिना वाच्यमाना चिरं नंदतात्।

प्रति—पत्र १० । पंक्ति १५ । अक्षर ४० । साइज ९॥ x ४॥ । अक्षर सुन्दर हैं। किनारे से पत्र उदेई द्वारा भक्षित होने से कुछ पाठ खण्डित हो गया है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(ख) छंद ग्रन्थ

(१) छंद मालिका । पत्र १९.२ । हेमसागर । सं० १७०६ हंसपुरी ।

आदि

अलख लख्यो काहू[1] न परै, सब विधि करन प्रवीन ।
हेम सुमति वंदित चरन, घट घट अंतर लीन ॥ १ ॥

× × ×

कल्याणसागर गुरु मुनिराज वंदौ । जामैं करहु भवसागर मान फंदौ ।
गच्छाधिराज विधिपक्ष सरूप धारी । सोहैं सदा विविध मार्ग सरूपकारी ॥ [illegible] ॥

दोहा

सूरत बिंदर के निकट, नगर हंसपुर एक ।
लघु साजन तहां वसै, श्रावक बहु सुविवेक ॥ ५ ॥
राखे पूजि चौमास तहिं, सूरीश्वर कल्याण ।
सतरसैं छीडोतरैं, प्रगट्यो सुजश महान ॥ ६ ॥
हेम सुकवि चौमास मैं, छंद मालिका कीन ।
भादौं वदि नौमी सरस, भाषा कवि हित लीन ॥ ७ ॥

अंत

संवत सत्तरसैं हो वरष, षट ऊपरि जानो ।
हंसपुरी चौमासि, सूरि कल्याण बखानो ।
शांतिनाथ सुपसाय करी, छंदन की माला ।
सुकवि कंठ अति सोभ, सुगन सुभ वरन विशाला ।
छंद जु हर्षा मुनि कहे, हेम सुकवि आनंद धरी ।
साह कुंआ परबोध कू, छंदमालिका मैं करी ॥ १ ॥

इति छप्पय

१ —पाठान्तर —परत न कहू ।

इति श्री सत्यासी छंद समाप्त। पूज्य पुरंदर युग प्रधान श्री श्री कल्याणसागर सूरीश्वर विजयराज्ये शिष्य कवि श्री हेमसागर गणि कृत छंदमालिका संपूर्ण।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—१. छतीबाई उपाश्रय के संग्रह से, (प्रतिलिपि, अभय जैन ग्रन्थालयमें)।

२. हरिसागर सूरि भंडार। पत्र १३ संवत् १७०७ लि० छंद ८५—२०७

३. जैसलमेर भंडार

(२) छंदसार। पद्य २६७। सूरत मिश्र।

आदि—

अथ छंदसार लिख्यते—

सोरठा

कृष्ण चरन चित आन कहूँ सुमत पिंगल कथु।
जिहि तें उर हि जान, प्रभु गन तामैं वरनिये॥ १॥

चौपाई

प्रथमहि संख्या कर्म बताय, प्रस्तारहि सूची चितलाय।
पुन उद्दिष्ट नष्ट सुबखान, मेरु पताका मर्कटि जान॥ २॥

दोहा

अष्ट कर्म ए मत्त के, पुनवर्त्तन के जान।
इहि विधि षोडश कर्म ए, कहै सुकवि सुग्यान॥ ३॥

अंत—

रसीले रूप आगर विलासी सुख सागर, सुन्यों जू स्याम नागर हते हैं नै टरियें।
सुबसी के बजावत छबीली के रिझावत, सुबैंइ चित्त भावन भुवंग परि हरियें।
श्री वृन्दावन नाइक समस्त इष्टदायक, सुने हो अवलायक बकें मैं धीर धरियें।
त्रसर्गा सैन सूरत न देविये सहूरत, पुकारै द्वार सूरत कृपा की दृष्टि करियें॥ २१॥

छंद बंध जो बरनि तो, छंद बंध चितलाय।
छंद बंधि सब छाड के, नंद नंद गुन गाय॥ २२॥

(१) प्रति—(१) हमारे संग्रह की प्रति अपूर्ण (पत्र १५ से २१) है अत अन्त का पद्य बृहत् ज्ञान भंडार की प्रति से लिखा गया है।

(२) पत्र ३। पंक्ति ९। अक्षर २४। साइज ७॥ × ४॥

(३) पत्र १२। पंक्ति १२। अक्षर ५८। साइज १०। × ४॥

(महिमाभक्ति-भंडार)

(३) छन्दो हृदयप्रकाश । मुरलीधर । सं० १७२३ कार्तिक शु० १५ ।

आदि—

श्री विनती सुकविमिल जो, लिखीके मन भर धरा भरिकै ।
छन्द भुजंगप्रयात बखानि, गो मत्त महोदधि को तरिकै ।
नष्ट उदिष्टनि मेरु पताकनि, मर्कटि जालनि को धरिकै ।
भूषण सोई जगे जग में, फुनि पिंगल मंगल को करिकै ॥ १ ॥

अंत—

राहवर गुन पंडित कवि मंडित रामकृष्ण कश्यप कुल भूषन ।
रामेश्वर ता तनय सुकवि जो अहिन निरखेउ नेकु दूषन ।
मुरलीधर तासुअनु सुपचम देवसिंह कियउ कवि भूषन ।
छन्दोहृदयप्रकासु रचउ तिन जगमगातु जिमि मोहरू मयूखन ॥ २ ॥

समत सत्रह सय वर्ष तईस कातिक मास ।
पूनिव को पूरन भयो, छन्दो हृदय प्रकास ॥

इति श्री पौलस्त्यप्रभवारिनविकासनसमानगङ्गाहठुर्गावरान्वयलदमारभगाविचलगा-
ही सह चतुःषष्टिकलाविलासिनी भुजगमहार्णवाधिवीर राजाधिराज श्री महाराज
उदयनारायणदेव प्रोत्साहित त्रिपाठी रामेश्वरात्मज मुरलीधर कवि भूषण विरचित
छन्दो हृदयप्रकाशे गणविवरणनाम त्रयोदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

लेखन—लिखितमिदं पुस्तकं त्रिपाठी रामुनाथेन सं० १८८८ माघ सुदी ११ हरिधवलपुर ग्रामे समाप्तं ।

प्रति—पत्र ४७ । पंक्ति १२ । अक्षर ३२ । साइज ९।।x५ ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(४) प्रस्तार प्रभाकर । पत्र ८९ । रसपुंज । सं. १८७१ चैत्र कृष्णा ५ गुरुवार ।

आदि—

दोहा

शाशक यह मत धुरा, प्रभु मैं हुता सुढार ।
हर लीजो ढाकार तिन, गोपी अम्बर हार ॥

अंत—

समत ससि[1] मुनि[7] वसु[8] मही[1], चैत्र कृष्ण पछ सार ।
पंचमी गुरु पूरण भयो, प्रभाकर सु प्रस्तार ॥

प्रति—गुटकाकार ।

(कविराज सुखदानजी चारण के संग्रह से)

(५) माला पिंगल । पद्य १५३ । ज्ञानसार । सं० १८७६, फा० सु० ९ ।

आदि—

श्री अरिहंत सु सिद्ध पद, आचारज उवझाय ।
सरव लोक के साधु कु, प्रणमूं श्री गुरुपाय ॥ १ ॥
प्राकृत तें भाषा करूं, मालापिंगल नाम ।
मुग्ध बोध बालक लहै, परसम कौ नहि काम ॥ २ ॥

अंत—

जम्बूदीप मेरु सम, अवर न को उत्तुंग ।
त्युं शरीर सम गच्छ सकल, खरतर गच्छ उत्तमंग ॥ १४५ ॥
गीर्वाण वाणी सारदा, मुख तें भई प्रगट्ट ।
यातें खरतर गच्छ में, विद्या को आभट्ट ॥ १४८ ॥
ताके शिष्य समान विभु, श्री जिनलाभ सुरीस ।
ज्ञानसार भाषा रची रत्नराज गणि सीस ॥ १४९ ॥

चौपाई

संवत[६] काय फिर भय[७] दुय । प्रवचनमाये[८] सिधसिल[१] लय ।
फागुण नवमी ऊजल पक्ष । कीनों लक्षण लक्ष विपक्ष ॥ १५० ॥
रूपदीप न बावन किए । वृत्तरत्न ने केने लिए ।
चिन्तामणि ने केई देख । रचना कीनी कवि मति पेख ॥ १५१ ॥
नहि प्रस्तार न कर उद्दिष्ट, मेरु मर्कटी न किया नष्ट ।
आधुनकाली पंडित लोक, ग्रंथ कठिन लखि दहै धोक ॥ १५१ ॥

दोहा

इकसो अरु दो सर के, वृत्ति किए मतिमन्द ।
यातें याकू भाखियो, नामै माला छंद ॥ १५२ ॥

इति श्री माला पिंगल छंद संपूर्णम् ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १३ । पंक्ति १३ । अक्षर २७ से ३२ । साइज ९॥। × ४॥।

विशेष—प्रस्तुत छंद-ग्रन्थ में ११० छंदों का वर्णन है । इसकी दो अपूर्ण प्रतियां भी हमारे संग्रह में है ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(८) लघु पिंगल । पद्य १११ । चेतनविजय । सं० १८४७ पौष शुक्ला ७ गुरुवार । बंगदेश ।

आदि—

अथ लघु पिंगल भाषा लिख्यते

दोहा

चरन कमल गुरुदेव के, वंदा शीश नवाय ।
लघुपिंगल भाषा करूं, सारद देहु बनाय ॥ १ ॥
छाया विन नहीं कर सकें, पिंगल छंद अपार ।
रूपदीप चिंतामणि, ए पिंगल मन धार ॥ २ ॥
चेतन लघुपिंगल कहे, गुनिया वचन प्रमान ।
कवित्त छंद केइ जातके, जान चतुर सुजान ॥ ३ ॥
लघु दीरघ गण अगण है, अक्षर मत्त समान ।
चेतन बरनै स्यान सु, लघुपिंगल गुन खान ॥ ४ ॥

अंत —

रूपदीपक चिंतामणि, इन पिंगल को देख ।
भाषा लघुपिंगल रची कीन्हो सुगम विशेष ॥ १०५ ॥
छंद ख्यालिमे जान के, लघु पिंगल सो जान ।
भण गुण ... करे, उपजे बुद्धि निधान ॥ १०६ ॥

× × ×

ऋद्धि विजय वाचक गुरू, बहु आगम के जान ।
तस शिष्य लघु चेतन भये, जनमे बंग सुथान ॥ १०९ ॥
दिक्षा ले यात्रा किये, फिरि आए निज देश ।
सगत पाये साध की, मेटे सकल कलेश ॥ ११० ॥
चंद[1] सिद्ध[8] वेद[4] मुनि[7], मास पोष गुनखान ।
श्वेत बीज गुरुवार को, पूरे ग्रन्थ सुजान ॥ १११ ॥

इति लघु पिंगल भाषा संपूर्ण ।

लेखनकाल—संवत १९२३ मिती श्रावन वद ७ मी । लिखत भजूलाल ।

प्रति—पत्र ११ । पं० २२ । अक्षर ५० । साइज १० × ४॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

ज्ञान अनूप अनूप गुण, भाग अनूप सरूप ।
धाम अनूप अनूप खग, राजे राज अनूप ॥ ४ ॥
ता हित चित करिकै रच्यो, ग्रन्थ अनूप रसाल ।
कवि कोकिल कुल सुख सदन, सरस मधुर सुविशाल ॥ ५ ॥

अंत —

संवत सत्तरैसे अठइसें आसु सुदी दसमि गुरु दीसें ।
श्री बीकापुर नगर सुहावा । तहा ग्रन्थ पूरणता पावा ॥ ३५ ॥

इति श्रीमन्महाराजा श्रीअनूपसिंह विरचिते श्रीअनूपरसाल तृतीय स्तवक संपूर्ण ।
लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।
प्रति—गुटकाकार । पत्र १३ । पंक्ति १७ । अक्षर ११ । साइज ६ x ५॥
विशेष—प्रथम स्तवक पत्र ६१, नायिका वर्णन, द्वितीय स्तवक पत्र ७८, नायक वर्णन; तृतीय स्तवक पत्र ८५, अलंकार वर्णन । प्रति की प्रारंभिक सूची में इसका कर्ता 'मथेन चंदैचन्द कृत' लिखा है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(३) **अनूप शृंगार** । अभयराम सनाढ्य । सं० १७५४ आगहन सुदी ७ रविवार ।

आदि—

गिरजासुत को सुमरिकै, एक रदन सुख सोइ ।
प्रगट बुद्धि कवि कौं दई, भाषा कृत गुण होइ ॥ १ ॥
×　　　　×　　　　×
ब्रह्मा तें प्रगटित भये, भारद्वाज रिषराज ।
जिनके कवि-कुल में तहा, कोविद के सिरताज ॥ ४२ ॥
खाम पदारथ चद ये, जिन के केसवदास ।
मेरमाहि सब विधि भले, भाषा चतुर निवास ॥ ४३ ॥
अभैराम जिनके भये, सब कवि ताके दास ।
रणथंभोर गढ़ की तली, गांव वैहरना वास ॥ ४४ ॥
जाति सनावट गोति करैया, अभैनाम हरि दीनो ।
जासो कृपा करि महाराजा, जब गिरथ यह कीनो ॥ ४५ ॥
सुनी कान बाचे यथा, दुख को काटणहार ।
नांव धर्यो या ग्रन्थ को, यह अनूप शृङ्गार ॥ ४६ ॥
कृपा करि महाराज ने, बकस्यो बहुत बनाय ।
रोग हरे सब दुख गयो, नासु दियो कविराय ॥ ४७ ॥

संवत सतरेसै चौपना, ग्रन्थ जन्म जग जानि।
अगहिन सुदि का ह्वैज यह आदितवार बखानि ॥ ४१ ॥

अंत—

यह अनूप सिंगार रस, मुनिया कहै सुनाइ।
अछिर चूक्यौ होइ जो, लीजो सुकवि बनाइ ॥

इति श्री महाराजाधिराज महाराज श्रीमदनूपसिंह देवस्याज्ञा पांडे अमैराम विरचिते अनूप शृंगारे नायकावर्णनम्।

लेखनकाल — १८ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र [illegible]। पंक्ति [illegible]। अक्षर [illegible]। साइज ६ × १०

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(४) अलस मेदनी। पद्य। [illegible] नंदराम। अनूपसिंह कारित।

आदि

बन्दन करि उर ध्यान धरि, बाम तनय अभिराम।
अलससमेदिनी सरस रस, बरनत सुकवि नंदराम ॥ १ ॥
विक्रमपुर नायक भये, रायसिंह नर राज।
एक सोज अगनित दये, जिन माते गजराज ॥ २ ॥
सूरसिंह तिनके भये, मनों दूसरे सूर।
जिनके तीछन तेज तें, दुरयो तिमिर सब दूर ॥ ३ ॥
बाँके बाँके अरिन के, गढ तोर बर जोरि।
कर्णसिंघ तिनके तनय, नय कोविद सिरमोरि ॥ ४ ॥
दान दया अरु जुद्ध यह, तीन भाँति रस वीर।
सो जान्यो नृप कर्ण अरु, भये भक्ति रस धीर ॥ ५ ॥
चारि पुत्र नृप कर्ण के, जेठे राव अनूप।
तेग त्याग जीते जिनहु, सब देसन के भूप ॥ ६ ॥
विक्रमपुर बैठे तखत, करि जन मन आनंद।
सुथिर राज तौ लौं करो, जौं लगि धरनी चंद ॥ ७ ॥
मौजनि सों दारिद हरन, फौजनि रिपु कुल सूल।
नन्दराम जाके सदा, हर घरिनी अनुकूल ॥ ८ ॥
नृप अनूप गुण रतन को, जलनिधि ज्यों आधार।
तत्र गुनी सब देस के, सवत हैं दरबार ॥ ९ ॥
नृप अनूप के हुकम तें, कोविद कवि नन्दराम।
रस ग्रन्थन को सार ले, बरनत ग्रन्थ अभिराम ॥ १० ॥

अंत—

बड़े ग्रन्थ देखन करैं, जे आरस सुकुमार।
तिनके हित नंदराम कवि, रच्यो नयो परकार ॥ ३३ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज अनूपसिंह विरचितायामलसमोदिन्यामलंकार निरूपण नाम तृतीय प्रमोद संपूर्ण।

लेखनकाल १८ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ११। पंक्ति १४। अक्षर १२। साइज़ ६×५॥

विशेष—नायिकावर्णन प्रथमप्रमोद पत्र ६४ नायकवर्णन द्वितीय प्रमोद पत्र १८, अलंकार वर्णन तृतीय प्रमोद पत्र ३३ कुल पत्र ११५।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(५) कवि वल्लभ। कवि जान। साहजहां राज्ये। सं० १७०४

आदि—

अगम अगोचर निरंजन निराकार करतार।
अविगत अविनासी अलख, निरंजन अपरपार ॥ १ ॥

× × ×

रवि ससि धू आकास धर, पानी पवन पहार।
तौ लौं अविचल जांन कहि, साहिजहां संसार ॥ ८ ॥
जौ लौं या संसार मैं, निसि दिन आवै जांहि।
तौ लौं अविचल राज सौं, चगता जगती मांहि ॥ ९ ॥
कहत जान कवि तान हितु, ग्रन्थ करौं उचारु।
अलंकार समुझाइहौं, अपनी मति अनुसारु ॥ १० ॥
कवित करन की इच्छा जिहि, ताके आवत काम।
यातें राख्यो समुझि कैं, कवि वल्लभ यह नाम ॥ ११ ॥

अंत —

साहिजहां जगपतिहि दाइक, चंन की सैन सरूप सुहावै।
वंस अकब्बर साहि है लायक, वैन को ऐन सु सूर कहावै।
साहन सूरति साहि है मोहन, माननि मान गुमानि मिटावै।
जांन अनुपम साहि है सोहन, कामनि प्रान दहूंसि लगावै।

इसके बाद कई चित्र-काव्य हैं।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ९६। पंक्ति १८। अक्षर २२। साइज ६×९॥

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(६) **काव्य प्रबन्ध** । लालस बगसीराम । सं० १९१२ आ० शु० १५ ।

आदि—

श्री चिंतामणि सगुनम, सर्व बीज बीजाक्षर सगुनम ।
तम् नमामि पद त्रिगुनम्, बगसीराम जय जय जय जगवदं ।। १ ।।
दोहा — श्री वाणी जय जय शक (ति) बगसीराम निहि वद ।
सकल वर्ण वर्णात्म सिध, अथग करण आणद ।। २ ।।
श्री लम्बोदर बुध सदन, चारु बदन सिर चद ।
इन्द्रासन बगसा अभय, विघन विनासन चद ।। ३ ।।
भोवानी गनपति बिभू, दान सुबुध क्षय दुद ।
सो ह्वै है तुमतै सहज, पूरण काव्य प्रबंध ।। ४ ।।
श्री सादूल रतनेस सुव, नरियन्द बीकानेर ।
छाया छत्र छिनास की, फेर काव्य चहु फेर ।। ५ ।।

× × ×

समत उगनीसै तीन दस, सुक्र क्वार सुख सिध ।
तिथ पून्यू बीकाण तह, बरण्या काव्य प्रबंध ।। १४ ।।
गुनकरन या ग्रन्थ को, रच्या सु बगसीराम ।
प्रस्नोत्तर परबंध मै, सो लिखहै तिह नाम ।। १५ ।।

(कविराज मुरारदानजी के संग्रह में)

(७) कृष्णचरित्र सटीक । कर्ण नृपति ।

आदि—

श्रीमत्कर्ण क्षितिपतिरर्थालंकारदीपमातनुत ।
मुग्ध व्युत्पत्ति कृते भाषामयमाज्ञया प्रिय पन्यु ।। १ ।।
ग्रथान् कुवलयानंद प्रमुखान् वीक्ष्य यत्नत ।
श्रीकृष्णचरित ग्रथ कुरुते कर्ण-भूपतिः ।। २ ।।
कृन्याकृतमहादेव श्रीकर्णनृपनिर्मितात
ग्रंथात् स्फुटीकरोत्यर्थालंकारान् सम्यगाज्ञया ।। ३ ।।

श्री लक्ष्मीनारायण गुणरूपसि (धु) पुन करन प्रभु की सुदरता की कहा जात न बात ।
नेनासी नउवां ठोर रमे सु सो मन जमुना नीर ज्यों रोक न राख्यो जात ।।१।।

संक्षिप्त तात्पर्य याको यह । जो श्री लक्ष्मीनारायण जी है सो गुण अरु रूप इनको समुद्र है । एसो सब कवि बरनतु है ।

अंत—

प्रति अपूर्ण है ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ७१ । पंक्ति ९ से १० । अक्षर २४ से २८ । साइज़ १०+५

विशेष—करणी भूपति रचित कृष्णचरित्र पर गद्य में टीका है । ग्रन्थ में अलं-कारों का वर्णन है ।

(अनूप संस्कृत-पुस्तकालय)

(८) **चित्रविलास** । पद्य १३१ । अमृतराइ भट्ट शिष्य चतुर्भुदासजी । सं० १७३६ का० शुक्ला ९ । लाहौर ।

आदि—

छप्पय छंद

सुंडा दंड भसूंड मंड, सिंदूर अम्बर ।
केसर गुंड अलि झुंड लसं, शशि खंड भाल पर ।
मुकट चंड सुचंड गंड, मद झरन चलतच्चं ।
कुंडल करन अखंड चंड, जनु मारतंड द्वं ।
भुजदंड नुर बलकर अति, नवौं खंड वंदत चरन ।
रंक विकट मत खंड कर, लंबोदर संकट हरन ॥ १ ॥

× × ×

वाना पै घर पाउ के, पुन नदी मिरनाइ ।
भाषा गुरु सब विध चतुर, जैं श्री अमृतराइ ॥ ३ ॥

× × ×

बेठे हैं बहु मित्र मिल, कवि अमृत के धाम ।
तिन सर्वहित मिल यों कह्यो, रच्या ग्रन्थ अभिराम ॥ ५ ॥

कुंडलिया

पंडित बड़े लाहौर मे, अंत गुनन का नाहि ।
कछु ऐसी विध कीजिये, ज्यो सब मोहे जांहि ।
ज्यो सब मोहे जाहि, ग्रन्थ रचिये अति रुचकर ।
आगे भयो न होइ, और भाषा मे सरवर ।
हो तुम चतुर सुजान, सबै विद्या गुनमंडित ।
कीज वहै उपाय, जाहि सुन रीझत पंडित ॥ ६ ॥

तिन की आज्ञा न भयो, कवि के चित्त हुलास।
चतुरदास छत्री वहल, वरन्यो चित्र विलास ॥ ७ ॥
संवत् सत्रहसे वरष, बीते अधिक छतीस।
कार्तिक सुदि नवमी सु तिथ, वार चारु दिनईस ॥ ८ ॥
चौगत्ता कौ राज। राजत आदि जुगादिजग,''
तिनके कुल सिरताज, अवरंग साह महाबली ॥९॥
तिनके सहर बडे वडे, अपनी अपनी ठौर।
तिन सब में सब विध अधिक, नागर नगर लाहौर ॥ १० ॥
× × ×
चित्र प्रकार अनंत गति, कहि आए कविराइ।
कवि अमृत द्वै विध रचै, अभरन भरन बनाइ ॥ १५ ॥

अंत —

चित्रजात अभरन कछु, वरनी अमृतराइ।
भरे चित्र की वृत्त अब, कहि चतुरग बनाइ ॥ १३१ ॥

इति श्री चित्रविलास ग्रन्थ अभरन, अमृतराय भट्ट कृत संपूर्णम्।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ६। पंक्ति १७। अक्षर ४५ से ५८।

विशेष—इसके आगे चित्र भरे वृत्त होने चाहिए थे पर वह खंड इसमें नहीं है। कर्ता अमृतराइ भट्ट प्रति में लिखा है पर प्रारंभ से चतुर्दास खत्री कर्ता ज्ञात होता है।

(जयचन्द्रजी भंडार)

(७) दंपतिरंग। पत्र ७३। लछीराम। सं० १७०९ से पूर्व।

आदि—

अथ दंपतिरंग लिख्यते।

दोहा

करि प्रनाम मन वचन क्रम, गहि कविता को व्योहारु।
प्रकृति पुरिष वरनन करूं, अघमोचन सुख सारु ॥ १ ॥
रसिक भगत कारन सदा, धरत अलख अवतार।
कान्हकुवर रव नीर वन, प्रगट भये ससार ॥ २ ॥
जिहि विधि नाइक नाइका, वरनै रिझिनि बनाइ।
लछीराम तिहि विधि कहत, सो कवियन की सिख पाइ ॥ ३ ॥

अंत—

सवैया

जा तियके निसि प्रोसु रहे पति, सो तिग काहे कौ नेह कसे।
घन बार छुटे दृग अंजन हो, नतमोर विना मुख लाल हसे।
सखि स्याम महावर पाइ दयो, सु विलोकि विलोकि विचारि रसे।
मन आनै नहीं बनितांज वर्नो, सब ही के सिगारनि देखि हसे॥ ७३॥

इति सौन्दर्यगर्विता अरु प्रेम गर्विता कही॥ इति श्री दंपतिरंग शृंगार अष्ट-नाइका भेद संपूर्ण।

लिखत संवत् १७८९ का वैशाख सुदि ३ दिने श्री जगतारिणी मध्ये प० चारित्र विजय लिखत वाचनार्थे दीर्घायु भवतु। भंडारी श्री कपूरचंद्रजी री पोथी उपरि लिखि आण्या तोज हे दिन शुक्रवार। श्रीरस्तु।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ६ (१४२ से १४७)। पंक्ति १९। अक्षर ३८। साइज ७॥×५

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१८) दुर्गासिंह शृंगार। जनार्दन भट्ट। सं० १७३५। ज्येष्ठ शुक्ला ९ रविवार।

आदि—

प्रथम के २३ पत्र नहीं है।

अंत—

तिय तरवनि जावक लसे, सब सोभा आगार।
नव पल्लव पंकज मनो, दयो डारि निज सार॥ ३४३॥
सत्तरेसै पैंतीस सम, जेठ शुक्ल रविवार।
तिथि नौमि पूर्ण भयो, दुर्गासिंह शृङ्गार॥ ३४४॥
छन्द अर्थ अक्षर कहे, भयो होइ जो हान।
लीज्यो सकल सुधारिके, सो या माझ प्रवीन॥ ३४५॥

इति श्री गोस्वामी जनार्दन कृत श्री दुर्गासिंह शृङ्गार संपूर्ण। श्री शुभमस्तु। श्रीरस्तु संख्या ९००।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र २४ से ४६। पंक्ति ९। अक्षर २८। साइज १०×५

विशेष—प्रारम्भिक अंश मिलने पर संभव है दुर्गासिंह के बारे में नई जानकारी प्राप्त हो।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(११) दूलह विनोद । दूलह ?

आदि—

अथ दूलह विनोद लिख्यते

दोहरा

अलख अमूरति अगम गति, कहत न जीभ समाय ।
अद्भुत अयगति जात की, सो क्या वरनी जाहि ॥ १ ॥

× × ×

आदि जन्म सब एक है, अरु पुनि अंतहु एक ।
बीच ते जग कहतु है हिंदू तुरक विवेक ॥ ६ ॥

× × ×

मोहन रूप अनुप सि मूरति, गुरु बलि विधि रूप सुधारो ।
तेग बली अरु त्याग बलि, अरु भाग्य बलि सिरताज सवारो ।
साहि सुजान विहान को भान, जिहांन जान औ नैननि तारो ।
साहिब आलम साहिन साहि, महम्मद साहि सुजा जगि प्यारो ॥ ७ ॥

अंत—अप्राप्त

केवल प्रथम पत्र ही प्राप्त है ।

प्रति—पंक्ति १२ । अक्षर ३२ । साइज ९×४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१२) नखसिख । पत्र ६३ । घनश्याम । सं० १८०५ कार्ती सुदी बुधवार

आदि—

अथ राधाजी को नखसिख वर्णनं लिख्यते । पुरोहित घनश्याम कृत ।

कवित्त छप्पय

श्री बल्लभ नित समर, करत मति निरमल लायक ।
विट्ठलेस प्रभु समर, सरन गत सदा सहायक ।
गोवर्द्धन धुर सुमिर, सकल व्रज जुवती नायक ।
निज गुरु गिरिवर सुमिर, सदा मंगल बुधदायक ।
इन चरनन को अनुसरहु, हरदासन को हुवै सरन ।
राधा अदभुत रूप तिहा, घनश्याम नखसिख वरन ॥ १ ॥

अंत—

अष्टादस सत पंचए, संवत् कातिक मास ।
सुकल पछि पद बुध दिवस, नख सिख भयो प्रकास ॥ ६१ ॥

बिनुहि समझ वर्णन करयो, लघु दीरघ सम साध।
श्री वल्लभकुल को दास गनि, छमहु सु कवि अपराध ॥ ६२ ॥
श्री वल्लभ प्रभु सरन ह्वै, ज्ञान कह्यो सब पाय।
घनस्याम अच्छर सबै, पीतो नव जदुराय ॥ ६३ ॥

इति नखसिख वर्णन संपूर्ण।

लेखनकाल—सं० १८२८ माघवदी १४ दिने वा० कुशलभक्ति गणी लिखतं वा० पंचभद्रामध्ये।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ६। पंक्ति १९। अक्षर ३८। साइज ५×५॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१३) **नखसिख।**

आदि—

अथ नखसिख वर्णनम्

रसदायिनी दायिनी सरस, परस समोह सयाम।
विमल वदन वाणी विनय, नमन निरंतर दाम ॥ १ ॥
रसिकनि हेतु सिगार रस, नखसिख अग विचार।
निरुपम रुचि नव नागरा, ताके कहत सिगार ॥ २ ॥

× × ×

अथांघ्रिवर्णनम्

कमल कुलीन किधुं कूरम मुलीन जर जार गति नार निधि काम करि ठए हि।
गति के करीश किधु मोहन मृणाल दल सायक कहू पांचउ पुन्य पूरन के नए हि।
पदमा के पीन नवनीत सुं सुधारे डारे अमल अमोल छवि छाहेर रस दए हि।
किधु पद युग नव तरुनी के राजतहि बाजने नृपुर गज गाह धरि लए हि। १ ॥

अंत—

पत्र ३ के बाद पत्र नहीं मिलने से ग्रन्थ अधूरा रह गया है।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

प्रति—पत्र ३। पंक्ति १३ से १४। अक्षर ५० से ५७। साइज १०।×४।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) **नखशिख। सवैये ३०।**

आदि—

जोबन सरोवर के कोमल सिवाल मूल, काम तंतु तूल मखतूल कैधे तार है।
पंच सर सिधुर के स्याह और किधौं मौर किधौ सिरि सहज सिंगार रस सार है।

माथैं मार मरकत मनि के मयूख, किधों वेरैं चद को तिमिर परवार हैं।
लामैं लामैं जामैं जोति लता के वितान किधों, किधों स्यामवरन छबीले छूटे वार हैं ॥ १ ॥

अंत—

बीजुरी ताक किधौ रतन सलाक किधौं, कोमल परम किधौं प्रीतिलता पी की है।
रूप रस मंजरी कि मजुल चपक दाम, किधौं कामदेव के अमर मूरि जी की है।
चन्द्रकला सकलक मालिन कमल माल, जाके आगे लागति प्रदीप जोति फीकी है।
दूजी सुर नर नाग पुरन बिरञ्ची रची, जैसी नखसिख अग राधिकाजू नीकी है ॥ ३० ॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ३। पंक्ति १६ से १८। अक्षर ३६ से ४०। साइज ९×४

(श्री जिन चारित्र सूरि संग्रह)

(१५) प्रेममंजरी। पद्य ९७। प्रेम। स० १७४० चैत्र सुदी १० सोमवार

आदि—

मन वच करूं प्रणाम, प्रथमहि गुरु गोविन्द कू।
पूजें मन का काम, जिनकी कृपा सुदृष्टि तैं ॥ १ ॥

अत—

सतरैसे चालीतरा, चैत्र मास उजियार।
अटकनि अटकहि लिख चुके, तिथि दसमी शिववार ॥

लेखन—सवत १७५४ अनुपसिंह राज्ये कुंवर सरूपसिंह चिरंजीयात् महाराज कुंवर आणंदसिहजी भाणेज जोरावरसिंह र्मम दिया ह जूर अथेण रावेचा लि० आदूणी गढ़े।

प्रति—पत्र १४

(खरतर आचार्य शाखा चुन्नी-भडार, जैसलमेर)

(१६) भाषा कवि रस मंजरी। पद्य। १०७। मान

आदि—

सकल कलानिधि वादि गज, पंचानन परधान।
श्री शिवनिधान पाठक चरण, प्रणमि वदे मुनि मान ॥ १ ॥
नव अकुर जोवन भई, लाल मनोहर होइ।
कोपि सरल भूषण भई, चेष्टा मुग्धा सोइ ॥ २ ॥

अत—

नारि नारि सबको कहै, किउ नाइकासु होइ।
निज गुण मनि मति रीति (ध) रि, मान [illegible] ॥ १०७ ॥

इति भाषा कवि रस मंजरी नायका ८, नायक ४ [illegible] दूती १७ भेद समाप्ताः।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—पत्र ४। पंक्ति १९। २०। अक्षर ५६ से ६०। साइज १०। × ४।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) मनोहर मंजरी। पद्य १४८। सं १६९१। मथुरा।

आदि—

अथ मनोहर मंजरी लिख्यते

एक दंत गुणवत महा बलवंत विराजै,
लंबोदर बहु विघन हरत, सुमिरन सुख राजै।
भुजा चारि गज वदन अदन मोदक मद गाजै,
गवरिनंद आनंद कंद जगदंब सदा जै॥ १॥

दोहा

कछु अनुभव कछु लोक ते, कछु बि रीति बखानि।
करत मनोहरमंजरी, रसिक लेहु पहिचानि॥ २॥

अंत—

वरन येक नव रस मही, मधु पूरन दिनरात।
करी मनोहर मजरी, रसना कहि न अघात॥ ४७॥
मथुरा को हो मधुपुरी, बसत महौली पौर।
करी मनोहरमंजरी, अति अनूप रस सौर॥ ४८॥
इति मनोहर मंजरी संपूर्ण शुभमस्तु।

लेखनकाल—२० वीं शताब्दी

प्रति पत्र ५। पंक्ति २३। अक्षर ५६। साइज १०× ५

विशेष— नायिका भेद आदि का वर्णन है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१८) रतिभूषण। जगन्नाथ। स० १७१४ जे० शु० १० चंद्रवार। जैसलमेर

आदि—

पहिले करो प्रणाम, गणपति सरसति सुगुरुको।
द्यो मोहे मति अभिराम, तिय पिय केलि सु वरणवों॥ १॥

अंत—

प्रीत प्रभाव के दर्शन चार प्रकार।
जोरि करि जगन्नाथ कवि, ऐसी भांति विचार॥ १४॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

विशेष—जैसलमेर के रावल सबलसिंह के पुत्र अमरसिंह के लिये रचित। ग्रन्थ मे ६ अध्याय हैं।

(जिनभद्रसूरि भंडार, जैसलमेर)

(१९) रस तरंगिनी भाषा। कवि जांन। सं० १७११ माघ

आदि—

अलख अगोचर सिमरिये, हित सौं आठौं याम।
तो निहचै कवि जान कहि, पूजै मनसा काम ॥ १ ॥

दीन दयाल कृपाल अति, निराकार करतार।
सब को पोषण भरण है, मन इच्छा दातार ॥ २ ॥

नबी महम्मद समरिये, जिन सज्यौ करतार।
वारापार जिहाज बिन, कैसे कीजै पार ॥ ४ ॥

साहिजहां जुग जुग जिऔ, सुलताननि सुलतान।
जान कहै जिह राज मैं, करत अनंद जहांन ॥ ४ ॥

रसुतरंगिणी संस्कृत, कृते कोविद भान।
ताकी मैं टीका करी, भाषा कहि कवि जान ॥ ५ ॥

सब कोइ समझत नहीं, संस्कृत दुगम बखान।
तातै मैं कीनी सुगम, रसकनि हित कहि जान ॥ ६ ॥

अंत—

सन् हजार जु पैसठो, रबिउल अव्वल मास।
रसुतरंगिणी जान कवि, भाषा करी प्रकाश ॥ ३२६ ॥
संवत सतरहसै भयौ, इग्यारह तापर और।
माह मास पूरण भई साहिजहां के दौर ॥ ३२७ ॥

लेखनकाल— सं० १७२४ प्रथम आषाढ शुक्ल ९ चन्द्रवासरे लिखितम्
प्रति—पत्र २८ सं० १०५४

(आचार्य शाखा भंडार, बीकानेर)

(२०) रस रत्नाकर। मिश्र हृदयराम। सं० १७३१ वै० शु० ५.

आदि—

शिव(र!), पर सरस सिंगार सो सहित सोहै, सारस मैं जैतवार सखी मैं सहास है।
ओर देवतानि के बदन मांह निब्द मय, महानदी मांह महा रोस को प्रकास है।

फुंकरत लखि फणपति मे सभय हरि, लोचन चरित मोह विस्मय विलास है।
जयति जयंती जूकी दीठि भाव रसमय, करुण सहित शुभ जहां शिवदास है।

कवि वंश वर्णनम्

ब्रह्मा कीनी सृष्टि सब, पहिलें करि सप्तर्षि।
तिनि सातनि के वंश सों, उपजे बहु ब्रह्मर्षि ॥ १ ॥
पंच गौड द्विज जगत में, पंच द्राविड जांनि।
जहं जह देस बसे तहां, नाम विशेष बखानि ॥ २ ॥
जनमेजय के यज्ञ मैं, हरि आने जे विप्र।
इन्द्रप्रस्थ के निकट तिन, ग्राम दये नृप क्षिप्र ॥ ३ ॥
गौड देस तें आनि के, बसे सबै कुरु खेत।
विप्र गौड हरि आनियो, कहे जगत इहि हेत ॥ ४ ॥
तिनमैं एक भटानिया, जोशी जग इहि ख्याति।
यजुर्वेद माध्यन्दिनी, शाखा सहित सुजाति ॥ ५ ॥
गोत कलित कौशल्ये गनौ घरोंडा ग्राम।
उपजै निज कुल कमल रवि, विष्णुदत्त इहि नाम ॥ ६ ॥
विष्णुदत्त को सुत भयो, नारायण विख्यात।
ताको दामोदर भयो, जग मै जस अवदात ॥ ७ ॥
भाष्य सहित कैयट सकल, पढ्यो पढ़ायो धार।
षट दर्शन साहित्य मे, जाको ज्ञान गंभीर ॥ ८ ॥
स्वारथ परमारथ प्रदा, विद्या आयुर्वेद।
श्री दामोदर मिश्र सब, ताको जानै भेद ॥ ९ ॥
हरिविदन के नाम जिन, ग्रंथ कर्यो विस्तार।
कर्मविपाक निदान युत, और चिकित्सासार ॥ १० ॥
करी चाकरी बहुत दिन, बैरम-सुत के पास।
बहुरि वृद्ध ताके भये, कीनो कासी वास ॥ ११ ॥
रामकृष्ण ताको तनय, विद्या विविध विलास।
विप्र नगर के सिष्य सब, कियो जौनपुर वास ॥ १२ ॥

इसके पश्चात् भुवनेश मिश्र के २ संस्कृत पद्य आदि हैं।

× × ×

आसफखां जू को अनुज, यातिकादखां वीर।
ताकों करि कृपा महा, जानि गुणनि गंभीर ॥
रामकृष्ण के तनय त्रय, जेठे तुलसीराम।
मझिले माधवराम बुध, लहुरे गंगाराम ॥

× × ×

रामकृष्ण को पौत्र है, हृदयराम कवि मित्र।
उद्धव पुत्र प्रयाग द्विज, दीक्षित को दौहित्र ॥ १५ ॥
रामकृष्ण को पुत्र मणि, माधवराम सुजान।
साहि सुजा की चाकरी, करी बहुत दिन मान ॥ १६ ॥
नंदन माधवराम को, हृदयराम अभिराम।
नवरस को वर्णन करे, यथा सुमति सदाम ॥ १७ ॥

× × ×

समत सत्तरैमे बरस, बाते अरु एकतीस।
माधव सुदि तिथि पचमि, बार बरनि बागीस ॥ २१ ॥
भानुदत्त कृत संस्कृत, रसतरंगिणी भाइ।
रसिक वृंद के पढ़न कौ पोथी करी बनाइ ॥ २२ ॥

अंत—

ज्यो समुद्र मथि देवतनि, पाये रतन अमाल।
त्योहा नवरस रतन लहीं, मथि तेरह कल्लोल ॥ १७ ॥
रसरत्नाकर ग्रन्थ यह, पढ़ै जु नर मन लाइ।
ताकौ ह्वै हैं हृदय मै, नव रस ज्ञान बनाइ ॥ १८ ॥
करि प्रनाम कछु करत हौ, बिनती बुध सौ लेखि।
जहे असुद्ध तह सोधियो, सहृदय बुद्धि बिशेषि ॥ १९ ॥

इति श्री मिश्र माधवरामात्मज श्री मिश्र हृदयराम विरचिते रस रत्नाकरे, रसालंकारे, रसाभिव्यक्ति वर्णनम् नाम द्वादश कल्लोलः समाप्तः।

लेखन—सं० १७४८ वर्षे कुंवार शुक्ल पक्षे ५ शुभमस्तु ग्रन्थ संख्या १८८०

प्रति—गुटकाकार। पत्र ७५। पंक्ति २०। अक्षर १८। साइज ७ × ९

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२१) **रस विलास।** गोपाल (लाहोरी) सं० १६४४ वैशाख शुक्ला ३। मिरजाखांन के लिये।

आदि—

प्रस्तुत ग्रन्थ का केवल अंतिम पद्य ही प्राप्त है अत: आदि के पद्य नहीं दिये जा सके।

अंत—

रुकुमनी लछनि रूप गुनही, को कवि कहे निवाहि।
मे जानहु तेही कहे, गोविंद रानी आहि ॥ ४१ ॥

संवत सोरहसइ वरस, बीते चोतालीस।
सोमतीज वैशाख को, करी कमध्वज ईस ॥ ४२ ॥
वरनि मेनि बैकुंठ की, सची वेलि संसार।
सुने सुनावइ जिन नसनु, प्रेम उतारइ पार ॥ ४३ ॥
आज्ञा मिरजाखान की, भई करी गोपाल।
वेल कहे को गुन यहइ, कृष्ण करो प्रतिपाल ॥ ४४ ॥
मरुभापा निरजल तजी, करि ब्रजभाषा चोज।
अब गुपाल याते लहैं, सरस अनोपम मोज ॥ ४५ ॥
कवि गुपाल यह ग्रन्थ रचि, लायो मिरजां पास।
रस विलास दे नांउ उनि, कवि की पूरी आस। ४६ ।

इति श्रीमन् ति(नि।)खिल खांन शिरोरत्न श्रीमान् मुसाहिब खांन तनुज श्रीमन्नबाप सिरदारखांनात्मज श्रीमन्मिरजांखांन मनोविनोदार्थे पंडित लाहोरी कृतं। रस-विलास समाप्त।

लेखन—संवत् १७४९ वर्षे पं० प्रेमराजेन लिपी कृता श्री भुज नगरे।

प्रति—अंत का आठवा पत्रांक प्राप्त। साइज १०। × ४॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) रसिक हुलास सूरदत्त सं० १७१६ फागुन शुक्ला ५ अमरसर।

आदि—

आनद के कद जगवंद, दुजुत चद सोहे, पारवती के नद हरें विपति कुमति कौं।
बुधि के सदन गजवदन रदन सुभ, दुख के कदन सुख देत है सपत्ति कौं।
विघन हरन सब कै भरन पापन हो, असरन सरन सो सुमति को।
श्रीपति सिवापति सिकराय सुरपति, करत प्रनाम प्रेम महा गनपति को ॥ १ ॥

नगर अमरसर अमरपुर, रचना भुव कर्तार।
वसैं जहा चारों वरन, दाता वनिक अपार ॥ २ ।

× × ×

राय मनोहर नृपति तहँ, रच्यो एक कर्तार।
सेखाउत कछवाह मनि, पारथ को अवतार ॥ ६ ॥
मिरजाई तिह को दई, अकबर साहि सुजान।
सुत सम बहु आदर करै, जानै सकल जहान ॥ ७ ॥
ताको सुत जग मे विदित कहिये पृथिराचंद।
सुमिरत जाके नाम को, मिटे सकल दुख दंद ॥ ८ ॥
कृष्णचन्द्र ताको तनय, मनसिज सौ अभिराम।
साहि समान प्रसिद्ध जग, सुर तरवर को धाम ॥ ९ ॥

रसिकराय सों तिन कह्यो, करिके बहुत सनेहु ।
हमकों रसिक हुलास करि, रसतरंगिनि देहु ॥ १० ॥

दोहा

संवत सतरैसे वरस, सोरह ऊपर जानि ।
फागुन सुदि तिथि पंचमि, सु महूरत सो मानि ॥ ११ ॥

ता दिन ते आरंभ यह, कीन्हा रसिक हुलास ।
समुझि परै जाके पढ़ें, (र)स * सबै विलास ॥ १२ ॥

पढ़ें जो रसिकहुलास वह, नर नर वर म कोइ ।
जानै गति रस भाव की, मजिलिस मडन होइ ॥ १३ ॥

सूरदत्त कवि अलप मति, कासी जाको वास ।
अति प्रवीन तिन सरस यह, कीनो रसिकहुलास ॥ १४ ॥

अंत—

बुध वारिद वरषहु सदा, तातें नह नर्वान ।
जातें रसिकहुलास की, वृद्धि होहि परवान ॥

जावत सूर सुता रहै, धरती मैं सुख पाइ ।
तावत सूरदत्त कृत, रसिकहुलास सुहाइ ॥

इति श्री सूरदत्त विरचित रसिक हुलासे दृष्टि आदि निरूपणं नाम अष्टमो हुल।। समाप्तं ।

लेखनकाल—सं १७४९ । मिती कातिक वदी सप्तमी ।

प्रति— पत्र ४५ । पंक्ति । २२ । अक्षर १७ । रस रत्नाकर वाले गुटके में है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२३) रसिक आराम पद्य १०० । सतीदास व्यास । सं० १७३३ माघ शुक्ला २ बीकानेर

आदि—

नमन करि हलधार कु, नव जलधर वर स्याम ।
सतीदास सछेप सुं, रचति रसिकआराम ॥ १ ॥

शुभ सवत सै सप्तदश, वरस वरन तेतीस ।
मास माघ सित पछ तिथि, दूज भ वार दिन ईश ॥ २ ॥

बीकानेर सुहावनों, सुख संपति गुन रूप ।
सुथिर राज महि मैरू को, अधिपति भूप अनूप ॥ ३ ॥

अत—

देवीदास वियास मनि, गुननिधि विद्या धाम।
तिनके सुत के सुत रच्यो, पूरन रसिकाराम ॥ २ ॥

बीकानेर पुरे श्रिया सुख करे नृपस्य भूमीपतेः।
देवीदास इति त्रिलोक विदितो व्यासान्वयोऽस्ति प्रधी
तत्पुत्र किल देवजाति विदितो स्तत्सूनुनायं कृत
श्रृङ्गारात्मक कैकरूप रसिका रामः सुबोध्यो बुधैः ॥ ११ ॥

लेखन—संवत १७५२ वर्षे माघमासे शुक्लपक्ष तिथौ ११ एकादश्या सोमवासरे लिखतं ब्रा० बदरा दाहिवा ओझा, बांचे तिने राम राम।

प्रति—गुटकाकार। पत्र १८ से ६१। पंक्ति १३। अक्षर १८। साइज ६ × ६

विशेष—प्रथम अध्याय—नायिका निरूपण पद्य ४३ द्वितीय अध्याय—नायक निरूपण पद्य १६, तृतीय अध्याय अलंकार निरूपण पद्य ३१।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२४) रसिक मंजरी भाषा। हरिवंश।

आदि—

कल कपोल मद लोभ रस, कल गुंजत रोलंब।
कवि कदंब आनंद करहि, लंबोदर अवलंब ॥ १ ॥

अति पुनीत, कलि कलुष विहंडन, सांइ सभा सबहिनि सिर मंडन।
खुलित खग्ग खत्तिय सिर खंडन, जगमगात हक्कु इक्कुल तंडन ॥ २ ॥

पद्धरी छंद

तिह वंस किय उद्योत, तिहि कित्ति सुरसरि सोत।
छज्जमल सुअ आनंद, मसनंद परमानंद ॥ ३ ॥

कुल कमल मानस हंस, जसु कित्ति जगत प्रसंस।
मसनंद सुअ अवतंस, जयवंस मनि हरिवंस ॥ ४ ॥

रसिकाई हरिवंस तिनि, चंचरीक निज हेत।
भानु उदित रसमंजरी, मधुर मधुर रस लेत ॥ ५ ॥

अंत—

साक्षात् दर्शन—

हा हा तजि रे चित चंचलता, जीवरा निज लाजन लोलुप हैं।
करुणा करि नैननि नीर भये, तुम्हकू न परौ पलके पल है।

सिर सोहत मोरनिके चंद्रूवा, मुरली मधुरा धर तै मधु ह्वै।
नव नीरद सुंदर स्यामल होत, इहा हरि लोचन गोचर ह्वै ॥ २७ ॥

इति श्री रस मंजरी भाषा; हरिवंस कृत संपूर्ण। श्री श्री श्री श्री।

लेखन—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—१–गुटकाकार। पत्र २९। पं० १३। अक्षर २५। साइज ६×५॥।

२–विनय सागरजी संग्रह, (जयचंद्रजी भंडार)

(२५) रसिक विलास। कवि केसरी।

आदि—

जासु लगत सर निकट, कम्ह वृन्दावन नचिय।
चलत जुद्ध जिहि क्रुद्ध मुद्ध, सकरु नहि रचिय॥
जेहि वस कियउ भ्रमग्ग, अमर दानव किन्नर नर।
जड़ जगम केहरि जाहि, सेवत निस वासर॥
जिन रचिय जग तुभन वन विधि नमुनि जानत जिमि रत्ति वरु।
नेही तजि अवरु केहि वंदियइ, परम पुरुस प्रभु पचसरु॥
महा महाकवि ह्वै गये, कीरे धरनि अनेक।
बहु रतना वसुधा कही, गुनी एक न एक॥
निज भाषा मै केहरी, कंचित भयो प्रकास।
श्री ब्रजराज सुजान हित, कीनो रसिक विलास॥

अंत—

कहरी मे धन आस बरषा, मनु दाहै सरोद वउया प्रमदा हो।
कह्यो पयोद्व रहे मर्जाद, सुनि नाह सो ही नित न्हु निबाहो॥ १॥

इति श्री कवि केशरि कृते शृंगार रसे नायिका भेदे रसिकविलासोल्लासे सप्तम: प्रभाव:। संपूर्णोयं ग्रन्थ:।

लेखन—१८ वीं शताब्दी। लिखतमिदं पुस्तक महानंदात्मज कृष्णदत्त व्यासेन।

प्रति—गुटकाकार। पत्र २१। पंक्ति १८ से २२। अक्षर २० से २४। साइज ६×९॥।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२६) रसकोष—जान कवि सं० १६७६।

ग्रन्थ रस कोष।

आदि—

अलख अगोचर निरंजन, निराकार अविनास।
काहू को पटंतर नहीं, ना को पटतर तास॥ १॥

निमसकार ताकों करो, नांउ महमद जाहि ।
असरन सरन अभरन भरन, मै भंजन गुन ताहि ॥ २ ॥
जबहि बखानौ नाइका, नाइक कहि कवि जान ।
मथूं कथूं रसमजरी, सुनो सबै धर कांन ॥ ३ ॥
तन मन मैं सतोष है, मिटै चित को सोष ।
आरस दोषन नास है, धर्यौ नांउ रसकोष ॥ ४ ॥
× × ×

अंत –

जहांगीर के राज्य मे, हरन चित का दोष ।
सोलहसै षटहुतरै, कियौ जान रसकोष ॥ १४१ ॥
चौपाइ ५०

लेखन—सौलहसै चोरासिय, नग्र फतेपुर थान ।
हुता जु सातै जेठ बदि, लिख्या भीखजनु जान ॥ १ ॥ (ग्र० २००)
प्रति—गुटकाकार, जिसमें पहले आनंद रचित कोकसार (सं० १६८२ लिखित) है ।
(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

× × ×

(२७) लखपति जस सिन्धु । तपागच्छीय कनककुशल शिष्य कुंवरकुशल ।

आदि—

सकल देव सिर सेहरा, परम करन परकास ।
कविता कविता दे सफल, इच्छित पूरै आस ॥ १ ॥

अंत —

कवि प्रथम जे जे कहे, अलकार उपजाय ।
कुवर कुशल ते ते लहे, उदाहरन सुखदाय ॥ ८२ ॥

इति श्री महामहाराज लखपति आदेशात् सकल भट्टारक पुरन्दर भ० श्री कनक कुशल सूरि शि० कुंअरकुशल विरचिते, लखपति जससिन्धु शब्दालङ्कारार्थलंकार त्रयोदश तरंग ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ५३ ।
(यति ऋद्धिकरणजी भंडार, चूरू)

(२७) विक्रम विलास । लालदास ।

आदि—

जिहिन सुन्यौ हरिवंस जिमि, विक्रम माहि विलास ।
तजहिनते रसराज वर, तनै जनम सुख आस ॥ १ ॥

कथा माधवानल करी, नाटक उदाहार ।
नृपति न मानी लाल तब, नव रस कियो विचार ॥ २ ॥
नीरसु गहे न भाव रस, रसिकु भजे रस भाव ।
गाड़ी चले न सलिल मे, सूखि चले न नाव ॥ ३ ॥

अंत—

चरित राम सुग्रीव के, सोरि नन्द व्यवहार ।
इत्यादिक में जानियो, प्रिय रस के अवतार ॥ ४ ॥

इति श्री लालदास विरचिते विक्रम विलासे रसान्तरोपि समाप्त. ।

लेखन—सवत् १७२९ वर्ष शाके १५९४ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रद माघ मासे, शुक्लपक्षे पूर्णमास्या तिथौ सौम्यवासरे श्री नासिक महानगरे श्री गोदावरी महातटे श्री महाराजाधिराज श्री महाराज श्री ५ अनूपसिंहजी चिरंजीवी पोथी लिखावितं । शुभं भवतु श्री मथेन सांमा लिखत ॥

प्रति—(१) - पत्र ३१ । पंक्ति १९, अक्षर १६ । साइज ६ × ९॥

(२) – पत्र २७ । पंक्ति ८ । अक्षर ३५

विशेष - प्रति मे प्रथम अलसमेदनी, अनूपरसाल, योगवाशिष्टभाषा, विक्रम-विलास, सतवंती कथा, बीबी बांदी झगड़ो, कथा मोहिनी, जगत बत्तीसी, रसिक विलास ग्रन्थ है । दूसरी प्रति मे विक्रम विलास का निम्नोक्त अन्त पद्य अधिक है --

विवरण सेरस भीम के, आरण पायो लाल ॥ ३१८ ॥
जहां जांन अजान से, कियो कछु अविचारि ।
तहा कृपा करि सोधियो, सज्जन सबै विचारि ॥ ३१९ ॥

इति लाल कवि विरचित विक्रम विलासे रसान्तर रस वर्णन समाप्त । श्लोक ५६१

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२०) वैद्य विरहिणि प्रबंध । दोहा ७८ । उदैराज । सं० १७७२ से पूर्व

आदि—

एकन दिन व्रज वासिनी, दिल मे दई उहार ।
हो दुखहारा वैद पै, जाइ दिखाऊ नारि ॥ १ ॥
की विरहिन जिय सोच मैं, धर अपनी जिय आस ।
रिगत पान क्यों कर हने, गयो वैद पै पास ॥ २ ॥

अंत—

अपनें अपने कंत सूं, रस वस रहिया जोइ ।
उदैराज उन नारि कूं, जमे दुहागन होइ ॥ ७७ ॥
जां लगि गिरि सायर अचल, जांम अचल द्रू राज ।
तां लगि रग राता रहै, अचल जोति व्रजराज ॥ ७८ ॥

इति श्री वैद्य विरहिणी संपूर्णा ।

लेखनकाल—संवत् १७७२ वर्षे कार्तिक सुदि १४ तिथौ

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १७ । अक्षर ५२ । । साइज १० × ४॥।

विशेष—अक्षर बहुत सुन्दर है । विरहिणी नारी वैद्य के पास जाती है और कामातुर हो अपना सतीत्व नष्ट कर देती है । इसका शृंगार रसमय वर्णन है ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३०) साहित्य महोदधि सटीक । रावत गुलाबसिंह । स० १९३० लग० ।

आदि—

गवरा उवटणो करत, गुटिका किय चुनि गाद ।
ताके अंगज त्रय भये, सुतरु तुमरु नाद ॥ १ ॥

अर्थ—एक समय गवरी कैलास में उवटणो नाम, अन्न विकार को मालस व रावत हुते । तदा वह उवटणा की गाद परिमणु तिको भेगी करिकें तीनि गुटका कीनी । पुरुष रूप की वह गुटिका के तीन पुत्र प्रगट कीन्हे । वडा पुत्र को नाम मृतजी, दूजा को नाम तुमुलजी तीजा को नाम नादजी यह तीन पुत्र गवरी के भये ।

अंत—

एक दिवस उदल नृप, मम प्रति कहा यह कथ ।
रचिदो ऐसो ग्रन्थ तित, मिले काव्य कृत सत्थ ॥ १० ॥
तब में कीनो ग्रन्थ यह, शिशु हित सुधपलेत ।
काव्य अग वेदांत अरु, प्राकृत राग समेत ॥ ११ ॥

इति श्री चारणान्वय महडू कवि रावत गुलाबसिंह विरचित साहित्यमहो । स्तरणी टीकायां नृपवंश निरूपणे अमुक खंड ॥ ११ ॥

लेखनकाल—सं १९६३

प्रति—पत्र १७.

विशेष—साहित्य महोदधि का यह खंड कवि वंश वर्णन और प्रतापगढ़ राज वंश वर्णन के रूप मे है ।

(कविराज सुखदानजी के संग्रह मे)

(३१) संयोग द्वात्रिंशिका । पद्य । ३७. मान. । सं० १७३१ चैत्र शुक्ला ६.

आदि—

अथ संयोग द्वात्रिंशिका लिख्यते

बुद्धि वचन वरदायिनी, सिद्धि करन सुभ काम ।
सारद सो माननि सखर, हिय की पूरे हांम ॥ १ ॥
राग सुभाषित रसन रस, तिहुन मे ओ गूढ ।
जो जोगीसर उगली, न लहै तिनको मूढ ॥ २ ॥

अत

आदि सुराग सुभाषित सुंदर, रूप अगूढ सरूप छतीसी ।
पत्र सयोग कहे तदनंतर, प्रीति की रीति बखान तितीसी ।
सवत चद' समुद्र ' शिवाक्ष ', शशी' युति वास विचार इतीसी ।
चैत सिता सु छट्टि गिरापति, मान रची सु सयोग छ (ब?)त्तीसी ॥२ ।

दोहा

अमर चद मुनि आग्रहै, समर भट्ट सरसत्ति ।
सगम बत्तीसी रची, आछी आनि उकत्ति ॥ ७० ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिताया संयोग द्वात्रिंशिकायां नायका नायक परस्पर संयोग नाम चतुर्थोन्माद ॥ ४ ॥ इति संगम बत्तीसी सपूर्णम् ।

लेखन—लिखितं वा० कुशलभक्ति गणिना पं० हर्षचंद्र सहितेन पंचभदरा मध्ये सं०१८२८ रा माह वदि २ बुधौ लिखित अति हर्षेन प० हरनाथ वाचनार्थे लिखिता ।

प्रति—पत्र ५

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(ग) वैद्यक-ग्रन्थ

(१) अतिसार निदान

आदि--

अथ अतीसार को निदान कथ्यते ।

परिहां—अजीर्ण रसहि विकार रुच मद पांनहीं ।
सीतल उष्ण स्निग्ध गमन जल पांनही ।
कृम मिथ्या भय सोक करें बहु खेद ही ।
उपजें यु अतिसार वखांन्यो वेद ही ॥ १ ॥

× × ×

आंबा गिटक अरु बिल्व पतीस, ए सब दारू सम कर पीस ।
तंदुल जल चूरणहु खाय, रक्त सकल अतिसार मिटाइ ॥ १९ ॥

इसके बाद मधुरा लक्षण, मुखवात लक्षणादि लिखे हैं । प्रति पत्र २ की अपूर्ण है । पता नहीं यह स्वतन्त्र रचित पद्य है या किसी अन्य भाषा वैद्यक ग्रन्थ से उद्धृत है । इसी प्रकार मूत्र परीक्षा का १ आदि (अपूर्ण) पत्र उपलब्ध है—

घटी च्यारि निसि पाछली, रोगी कुं जु उठाइ ।
रोग परीक्षा कारणें, तब पेसाब कराइ ॥ १ ।
आदि अंत की धार तजि, मध्य धार तहां लेहु ।
सेवत काच के पाच महि, एकंत ढांकि धरेहु ॥ २ ॥

ये पद्य भी किसी वैद्यक भाषा ग्रन्थ से उद्धृत हैं या स्वतन्त्र हैं यह अज्ञात है ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) कवि प्रमोद । पद्य २९४४ । मांन । सं० १७४६ कार्तिक शुक्ला २ ।

आदि—

कवित्त

प्रथम मंगल पद, हरित दुरित गद, विजित कमद मद, तासों चित्त लाईयइ ।
जाके नाम क्रूर करम, छिनहीं में होत नरम, जगत विख्यात धर्म, तिनहीं को गाईयइ ।
अश्वसेन वामा ताको अंगज प्रसिद्ध जगि, उरग लछन पग जिनमत गाईयइ ।
धर्मध्वज धर्म रूप परम दयाल भूप, कहत मुमुक्ष मांन ऐसे ही को ध्याईयइ ॥ १ ॥

× × ×

युगप्रधान जिनचंद प्रभु, जगत माहि परधान ।
विद्या चौदह प्रगट मुख, दिशि चारो मधि आंन ॥ ९ ॥
खरतर गच्छ शिर पर मुकुट, सविता जेम प्रकाश ।
जाके देखे भविक जन, हरखै मन उल्लास ॥ १० ॥
सुमतिमेर वाचक प्रकट, पाठक श्री विनैमेर ।
ताको शिष्य मुनि मानजी, वासी बीकानेर ॥ ११ ॥
संवत सतर छयाल शुभ, कातिक सुदि तिथि दोज ।
कवि प्रमोद रस नाम यह, सर्व ग्रंथनि को खोज ॥ १२ ॥
संस्कृत वानी कविनि की, मूढ़ न समझे कोई ।
तातै भाषा सुगम करि, रसना सुललित होइ ॥ १३ ॥
ग्रंथ बहुत अरु तुच्छ मति, ताको यह परधान ।
सब ग्रन्थनि को मथन करि, कीयो एह मइ आन ॥ १४ ॥

अंत—

वाग्भट सुश्रुत चरक मुनि, अरु निबंध आत्रेय ।
खारनाद अरु भेड ऋषि, रच्या तहा सो लेय ॥ ९१ ॥
मन मैं उपजी बुधि यह, भाषा कीजै आन ।
सब सुख दायक ग्रंथ मत, भाषा मे परधान ॥ ९३ ॥
घटि बधि अक्षर चूक यह, सुजन होय के सोध ।
रस ही महि जु विरस जउ, नाहिन उपजे बोध ॥ ९४ ॥
रोग हरन सब सुख करन, सबही के हित काज ।
और जु भाषा नाव सम, कीनो एह जहाज ॥ ९५ ॥
कवित्त छंद दोहे सरस, ता महि कीने जोग ।
प्रथम कीए मइ आप कर, भए प्रसन सब लोग ॥ ९६ ॥
अभिमांनी अरु उपजसी, हीन शास्त्र नर होय ।
हाथ न ताके दीजियो, अवगुन काढे कोय ॥ ९७ ॥

खरतर गच्छ परसिद्ध जगि, वाचक सुमतिमेर ।
विनयमेर पाठक प्रगट, कीये दुष्ट जग जेर ॥ ९८ ॥
ताकौ शिष्य मुनि मानजी, भयौ सबनि परसिद्ध ।
गुरु प्रसाद के वचन ते, भाषा को नव निद्ध ॥ ९९ ॥
कवि प्रमोद ए नाम रस, कीयो प्रगट यह मुख ।
जो नर चाहे याहि कौं, सदा होय मन सुख ॥ १०० ॥
सब सुख दायक ग्रन्थ यह, हरै पाप सब दूर ।
जे नर राखै कंठ मधि, ताहि म्हैं सब पूर ॥ १ ॥

इति श्री खरतर गच्छीय वाचक श्री सुमति मेरु गणि तच्छात् पाठक श्री विनैमेरु गणि शिष्य मानजी विरचिते भाषा कविप्रमोद रस ग्रन्थे पंच कर्म स्नेह धुन्तादि ज्वर चिकित्सा कवित्त बध चौपई दोधक वर्णनो नाम नवमोद्देस ॥ ९ ॥

लेखन—१८ वीं शताब्दी

प्रति पत्र १८० । पंक्ति १५ । अक्षर ३२ । पद्य २९,४४ ।

(श्री जिनचारित्र सूरि संग्रह)

(३) कवि विनोद । मान । सं० १७४५ वैशाख शुक्ला ५ सोमवार । लाहोर

आदि—

उदित उद्योत, जगिमगि रह्यो चित्र भानु, ऐसेह प्रताप आदि रूप को कहत है ।
ताको प्रतिबिंब देख, भगवान रुप लेख ताहि नमो पाय पेखि मगल चहत है ।
ऐसौ दया करौ मोहि, ग्रंथ करौं टोहि टोहि, धरौ ध्यान तब तोहि उमग गहतु है ।
बीच न विघन कोऊ, अच्छर सरल दोउ, नर पढ़ै जोऊ सोऊ सुख कौ लहतु है ॥ १ ॥

× × ×

गुरु प्रसाद भाषा करूं, समझ सकै सब कोई ।
औषद रोग निदान कछु, कविविनोद यह होई ॥ ५ ॥

× × ×

संवत सतरहसइ समइ, पैताले वैशाख ।
शुकल पक्ष पचम दिनइ, सोमवार यह भाख ॥ ९ ॥
और ग्रंथ सब मथन करि, भाषा कहौ बखान ।
काढ़ा औषधि चूर्ण गुटी, करै प्रगट मतिमांन ॥ १० ॥
भट्टारक जिनचद्र गुरु, सब गच्छ के सिरदार ।
खरतर गच्छ महिमानिलो, सब जन कौ सुखकार ॥ ११ ॥
जाको गच्छवासी प्रगट, वाचक सुमति सुमेर ।
ताको शिष्य मुनि मानजी, वासी बीकानेर ॥ १२ ॥

कीयो ग्रंथ लाहोर मइं, उपजी बुद्धि की वृद्धि ।
जो नर राखे कंठ मइ, सो होवै परसिद्ध ।। १३ ।।

अंत (प्रथम खंड)--

गुनपानी अरु क्वाथ क्रम, कहे जु आद कै खंड ।
खरतर गच्छ मुनि मांनजी, कीयो प्रगट इह मंड ।। २६५ ।।

इति श्री ख० मानजी, विरचितायां वैद्यक भाषा कविविनोद नाम प्रथम खंड समाप्तं ।

अंत— (द्वितीय खंड) —

द्वितीय खंड ज्वर की कथा, कही सुगम मति आन ।
समझ परै सब ग्रंथ की, पढ़े सु पंडित जान ।। २७७ ।।
खरतर गच्छ साखा प्रगट, वाचक सुमति सुमेर ।
ताकौ शिष्य मुनि मानजी, कीनी भाषा फेर ।। २७८ ।।
संस्कृत शब्द न पढ़ि सकै, अरु अच्छर मै हीन ।
ताके कारण सुगम ए, तातै भाषा कीन ।। २७६ ।।

इति ख० मुनि मानजी विरचितायां ज्वर निदान, ज्वर चिकित्सा, सन्निपात तेरह निदान चिकित्सा नाम द्वितीय खंड ।

लेखन—१८ वी शताब्दी

प्रति १—पत्र १४ उपरोक्त दो खंड मात्र (जयचन्द्रजी भंडार बस्ता नं० ४१)
२—पत्र ४२ (,, बस्ता नं० १०)
३—पत्र ४५ । पंक्ति १३ । अक्षर ३८ । साइज १०।। × ४।। ।
(नकोदर भंडार पंजाब)

(४) कालज्ञान । पत्र १७८ । लक्ष्मीवल्लभ । सं० १७४१ श्रावण शुक्ल १५ ।

आदि—

सकति शंभु शंभू-सुतन, धरि तीनो को ध्यान ।
सुंदर भाषा बंध करि, करिहुं काल ग्यांन ।। १ ।।
भाषित शंभुनाथ कौ, जानत काल ग्यान ।
जानै आउ छ मास थे, धुर तैं वैद्य सुजान ।। २ ।।
× × ×
जग वैद्यक विद्या जिसी, नहीं न विद्या और ।
फलदायक परतखि प्रगट, सब विद्या कौ मौर ।।६५।।
× × ×

चंद्र[१] वेद[४] मुनि[७] भू[१] प्रमित, संवत्सर नभ मास ।
पुनिम दिन गुरवार युत, सिद्ध योग सुविलास ॥७०॥
श्री जिनकुशल सूरीस गुरु, भए खरतर प्रभु मुख्य ।
खेमकीर्ति वाचक भए, तासु परपर शिष्य ॥७१॥
ता साखा मे दीपते, भए अधिक परसिद्ध ।
श्री लक्ष्मीकीर्ति तिहां, उपाध्याय बहु बुद्धि ॥७२॥
श्री लक्ष्मीवल्लभ भए, पाठक ताके शिष्य ।
कालग्यान भाषा रच्यो, प्रगट अरथ परतक्ष ॥७३॥
पंडित मोसु करि कृपा, शुद्ध करहु सुविचार ।
पंडित मान करै नहीं, करै सबसुं उपगार ॥७४॥

× × ×

अंत—

ऐसे काल ग्यान कौ, कह्यौ पंचम समुदेस ।
सुगुरु इष्ट सुप्रसाद तैं, निरख्यौ अर्थ लवलेश ॥७८॥

इति कालग्याने भाषा प्रबन्धे उपाध्याय श्री लक्ष्मीवल्लभ विरचिते पंचम समुद्देस ॥ ५ ॥

लेखन—संवत १७६० वर्ष वैशाख सुदि ८ दिने पं० आणन्दधीर लिखिता ।

प्रति—पत्र ३ । पंक्ति १७ से २१ । अक्षर ५८ से ६८ । साइज ९॥×४।

विशेष—इस ग्रन्थ की कई प्रतियाँ हमारे संग्रह मे है ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) गज शास्त्र (अमर-सुबोधिनी भाषा टीका) सं० १७२८ ।

आदि—

प्रथम पत्र पश्चात् ३ पत्र नही मिलते, पीछे का अश—

—इनके वंस के तिनके भेद । जु पांडुर वर्ण होइ । भूरे केस । नखछवि पृछ होइ । धीर होइ । रिस कराई करे । सु एरापति के वंस को । आगी ते काहू ते न डर (डरे?) नही । दांत सेत । आगिलो ऊंचो गात्र । मरताई छवि । राते नेत्र । सेत सुधेदा । सु पुंडरीक के वंस को जानिवे ।

अंत—

हस्ती को यंत्र लिखि जो हस्ती को जंत्र करी । जुद्ध मांझ अथवा लराई मे

बांधिजै तौ जयु होइ । हाथी भागे नहीं । गोरोचन सों भोज पत्र मे लिखी हाथी के दांत किवा कांन बांधिजै । (इसके पश्चात् हाथियों के १४२ नाम लिखे गये है)

इति पालकाप्य रिपि विरचिताया तद्बापाथ नाम अमर सुबोधिनी नाम भाषार्थ प्रकाशिकायां समाप्ता शुभं भवतु ।

लेखन—सं० १७२८ वर्षे जेठ सुदी ७ दिने महाराजाधिराज महाराजा श्रीअनूपसिंहजी पुस्तक लिखापित' । मथेन राखेचा लिखतम् । श्री औरंगाबाद मध्ये ।

प्रति—पत्र ९५ । पंक्ति ९ । अक्षर ३० । साइज १०॥ × ५। ।

विशेष—हाथियों के प्रकार और उनके रोगों का सुन्दर वर्णन है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(६) गंधक कल्प—आंवलासार । दोहा ४६ । कृष्णानंद ।

आदि—

गंधक कल्प आवलासार, दुहा ।

सुन देवी अब कहत है गधक विध समझाय ।
अजर अमर होय जगत मे, जो कोइ ऐसे खाय ॥ १ ॥
यथा जोग्य सब कहतु है, भिन्न २ समझाय ।
जब लू द्रव्य आकाश है, तब लू काल न खाय ॥ २ ॥

अंत —

कृष्णानंद विचार कर, कह्या पदारथ सार ।
सिद्ध होय या ग्रन्थ (जगत?) मे, अमर देव आकार । ४५ ॥
गधक विधि गु ते चूगी, और कहे उपदेश ।
जरा मोत कु जीत के, जीवन रहे हमेश ॥ ४६ ॥

लेखन—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १३ । अक्षर ४० । साइज ९॥ × ४। ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) डंभ क्रिया । पद्य २१ । धर्मसी । सं० १७४० विजय दशमी ।

आदि—

आदि का पद्य प्राप्त नहीं है ।

अंत—

सतरसे चालीसे विजय दशमी दिने, गच्छ खरतर जग जीत सर्व विद्या जिनै ।
विजय हर्ष विद्यमान शिष्य तिनके सही, कवि धर्मसी उपगारे, डंभ क्रिया कही ॥ २१ ॥

लेखन—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ९८, कवि की अन्य कृतियों के साथ

(बड़ा ज्ञान भंडार)

(८) **नाडी परीक्षा, मान परिमाण** । पद्य ४५+१३ । रामचंद्र ।

आदि—

> सुभ मति सरसति समरिये, शुद्ध चित्त हित आण ।
> प्रगट परीक्षा जीवनी, लहीयो चतुर सुजाण ॥ १ ॥

अंत—

> सौम्य दृष्टि सुप्रसन्न सदाई भार्लाये, प्रकृति चित्त इहु दुख सहू ही रार्लायै ।
> शीघ्र शांति होइ रोग सदा सुख संदही, नाडि परीक्षा एह कही रामचदही ॥ ४५ ॥

आगे मान परिमाण के १३ इस प्रकार कुल ५८ पद्य है । हमारे संग्रह मे सं० १७६१ की लिखित रामविनोद की प्रति पत्र ४७ के शेष मे है ।

विशेष—रामविनोद की किसी किसी प्रति मे मान परिमाण के इन पद्यो को उसी मे सम्मिलित कर दिया है ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) **निजोपाय** । पद्य ९६ ।

आदि —

> दोहा अथ ग्रन्थ निजोपाय लिख्यते । दोहा ।
>
> आदि सुमरु अलख, दोम महमद नाम ।
> इनहीं को कलमां कहूं, नसदिन आठूं जांम ॥ १ ॥
> मानस रोगी कारणे, ओषद रची अपार ।
> सीत गरम पुनि रक्त हुं, दोनो भेद विचार ॥ २ ॥
> चार तत्व पैदा किया, आदम कै तन माहि ।
> खाक अग्नि पाणी पवन, सब सै मैं परिछांई ॥ ३ ॥

अंत—

इलाज नेत्रांजन का—

> एक पीपा अर आवरे, दार चीणी से आनि ।
> महलोठी मिश्री जु सग, सब ही पीस समान ॥ ९५ ॥
> जल सौं गोली बांधिए, गुंजा के प्रमान ।
> अंजन करि है नैन कुं, सकल दोष होइ हानि ॥ ९६ ॥

इति श्री निजोपाय छुटकर दवा संपूर्णम् ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र १४ । पंक्ति ८ । अक्षर १४ ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१०) **प्राणसुख** । पद्य १८७ । दरवेश हकीम ।

आदि—

सुनिरे वैद वेद क्या बोला, उत्तमु इहि बिद्या पढो अमोला ।
वायु पित्त कफु तीनो जानो, रोगां का घरु यही वखांनो ॥ १ ॥

अंत—

यहि प्राणसुख पोथी के, ओषध सकल प्रमांन ।
कवि दरवेस हकीम की सुनायो वैद सुजान ॥ ८० ॥

इति प्राणसुख वैद्यक चिकित्सा संपूर्ण ।

लेखन—सं० १८०६ चै व. १२ देरागममाइल खांन मध्ये ।

प्रति—पत्र ११ । पंक्ति १५ । अक्षर ४८ करीब ।

(श्री जिन चारित्र सूरि संग्रह)

(११) **बालतंत्र भाषा वचनिका** । दीपचन्द ।

आदि—

– अथ बालतंत्र ग्रन्थ भाषा वचनिका बंध लिख्यते ।

प्रथमहि श्री गणेशजी कुं नमस्कार करिके । शास्त्र के आद । कैसे है गणेशजी । कल्याण नामा पंडित कहते हैं । मैं प्रथम ही ग्रन्थ के धूर गणेशजी कु नमस्कार करता हूँ । बालतंत्र ग्रन्थ कौ आरंभ करता हूँ । मूर्ख प्राणी के तांई ज्ञान होणे के खातरै इनका प्रयोग उपचार शास्त्र के अनुसार करै । कौण कौण से शास्त्र श्रुश्रुत, हारित, चरख, वागभट, इन शास्त्रां की शाखा की अनुसार कर सबै एकत्र करूं हूँ । इस बाल (तंत्र) ग्रन्थ विषै बाल चिकित्सा कौ अधिकार कहे है ।

अंत—

ग्रंथकर्ता कहै है मैंने जो यह बाल चिकित्सा ग्रंथ कीया है । नाना प्रकार का ग्रंथ कूं देख किया है सो ग्रन्थ कौण कौण से आत्रेय १, चरख २, श्रुश्रुत ३, वागभट ४, हारीत ५, जोगसत ६, सनिपात कलिका ७, बंगसेन ८, भाव प्रकाश ९, भेड १०, जोग-

रत्नावली ११, टोडरानंद १२, वैद्य विनोद १३, वैद्यकसारोद्धार १४, श्रुश्रुत १५ (?) जोग चिन्तामणि १६ इत्यादिक ग्रन्था कि साखा लेकर मे यह संस्कृत सलोक बंध कीया है। कल्याणदास पंडित कहता है, बालक की चिकित्सा का उपाय को देख कीजे। अहिछत्रा नगर के विषे बहू पडितां के विषे सिरोमण रामचंद नामा पंडित रामचन्द्रजी की पूजा विषे सावधान। सो रामचन्द्र पंडित कैसो है। सातां कहतां सजनां के विषे पंडित मनुष्यां ने प्रीय छै। तिसके महिधर नामा पुत्र भयौ। सो कशो हुवौ। पंडत मनुस्यां के तांइ खुस्यालि के करणहारे हुये। अत्यंत महापंडित होत भये। सर्व पंडित जनौ के बंदनीक भये। फेर महिधर पंडित कैसे होत भये। श्री लक्ष्मीजी के नृसिंघजी के चरण कमल सेवन के विषे भृग कहतां भंवरा समान होत भयो। माहा वेदांती भये। आतम ग्यानी भये। सर्व शास्त्र आगम अर्थ तिसके जांगणहार भये। महा परमागम शास्त्र के वकता भये। तिसके पुत्र कल्याणदास नामा होत भये। माहा पंडित सर्व शास्त्र के वकता जाणणहार वैद्यक चिकित्सा विषे महा प्रविण सर्व सास्त्र वैद्यक का देख कर परोपगार के निमित्त पडिता का ग्यान के वास्ते यह बाल चिकित्सा ग्रन्थ करण वास्ते कल्याणदास पडित नामा होत भये। तीसे करी सलोक बंध। तिसकी भाषा खरतर गच्छ मांहि जनि वाचक पदवी धारक दीपचन्द इसे नामै, तिसनै कह्या यह संस्कृत ग्रन्थ कठिन है सो अग्यानी मद बुद्धि मनुष्य समझे नहीं तिस वास्तै बालतंत्र ग्रन्थ भाषा वचनिका करे, मंद बुद्धि के वास्ते और या ग्रन्थ विषै षोडश प्रकार की बाँझ स्त्री कथन, नामर्द का उपाय, कथन, गर्भ रक्षा विधान कथन, बंध्या स्त्रि का रुद्र (ऋतु) स्नान कथन, कष्ट्रि स्त्रि का उपाय, बालक की दिन मास वर्ष की चिकत्सा कथन, बलि विधन कथन, धाय का लक्षण कथन, दुध शुद्ध कर्ण का उपाय, और सर्व बालक का रोगा का उपाय कथन, इसौ जो बालतत्र ग्रन्थ सर्व जन कौ सुखकारी हुवौ। इति बालतंत्र ग्रन्थ भाषा वचनिका सर्व उपाय कथन पनरमौ पटल पूरो हूवौ ॥ १५ ॥ इति श्री बालतंत्र ग्रन्थ वचनिका बंध पूरी पूर्णमस्तु ॥

लेखन—लिपीकृतं पाराश्वर ब्राह्मण शिवनाथ, नीवाज ग्राम मध्ये। संवत् १९३६ रा वर्ष १८०१ असाढ़ शुक्ल ९ शनी।

प्रति—पत्र ७२, । पंक्ति ११, । अन्तर ४०, । साइज ११ × ५

विशेष—मूल ग्रन्थकार के सम्बन्ध मे देखे "ऐतिहासिक संशोधन" ग्रन्थ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१२) माधव निदान भाषा

आदि—

अथ रोग परीक्षा निदान लिख्यते ।

प्रणमेति ग्रन्थकार इयुं कहेइ । रोगां का निश्चय ज्ञान होइ । जिसतें सो ऐसा ग्रन्थ करो । हो क्यूं करि करहू । सिव को आदि हां नमस्कार करिये । महादेव के नाम बहुत हई । सिव नाम जो आनिया सा ग्रन्थकार । दोह नाम महादेव का कियु न आनि राख्या । इस ग्रन्थ को जो पढ़ाए तथा पढ़े । तिनादे कल्याण भ्वेर्नमिति ।

अंत—

अंत के पत्र अप्राप्य हैं ।

प्रति—पत्र १३३, । पंक्ति ९, । अन्तर ३०, । साइज १० × ५

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१३) माल कांगणी कल्प (गद्य)

आदि

अथ माल कांगणी कल्प लिख्यते ।

माल कागणी सेर २। तेल तिली का सेर २। गऊ का घृत सेर २। मधु सेर २। गऊ का मूत्र सेर ४। माटी के पात्र मध्ये सब एकत्र करके मुख मूंदी करा दीपाग्नि देणी । पहर । ७ ।
अंत—द्वादश अत परह (पहर?) जोग कार्य सिद्धी होइ । गेहूँ घृत खाय । निश्च सिद्ध होई । खाटाखारा वर्जनीक ।

प्रति—पत्र २, पंक्ति ११, अक्षर ३०, साइज ९।।। × ५।।।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

१४ मूत्र परीक्षा । पद्य ३७ लक्ष्मी वल्लभ ।

आदि—

आदि का पत्र अप्राप्य है ।

अंत—

मूत्र परीक्षा यह कही, लच्छि वल्लभ कविराज ।
भाषा बंध सु अति सुगम, बाल बोध के काज ॥ ३७ ॥

लेखन—सं० १७५१ वर्ष कार्तिक वदि ६ दिने श्री बीकानेर मध्ये ।

प्रति—पत्र १.

(नवलनाथजी की बगीची)

(१५) रस मंजरी । समरथ । सं० १७६४ फाल्गुन ५ रविवार, देरा

आदि—

शिव संकर प्रणमुं सदा, उमा धरै अरधग ।
जटा मुकुट जाके प्रगट, वहत जु निरमल गंग ॥ १ ॥
ताकौं दो कर जोरि कै, करूं एह अरदास ।
वछित वर मोहि दीजिये, हरहु विघन परकास ॥ २ ॥

× × ×

वैद्यनाथ ब्राह्मण भयौ, ताको पुत्र परसिद्ध ।
शालिनाथ जसु नाम है, शुचि रुचि सदा सुबुद्धि ॥ ५ ॥
शास्त्र अनेक विचार कं, देखि वैद्य सकेत ।
तिसने करी रसमजरी, सुकृति जन के हेत ॥ ६ ॥
काविद मधुभृत धृंद के, हरे निरंतर चित्त ।
रस अनेक जामैं वसैं, अनुभव कीए जु नित्त ॥ ७ ॥
किये शालिनाथ रस मजरी, सम्कृत भाषा माहि ।
समझि न सकति मूढ की, व्याकुल होत है आहि ॥ ८ ॥
तातैं भाषा करत है, श्वेताम्बर समरत्थ ।
सुगम अरथ सरलता, मूरख जन के अरथ ॥ ९ ॥

अत—

संवत सतेरेसय चौसठि समै, १७६७ (?) फा (गु) न मास सब जन कौ रमैं ।
पांचमि तिथि अरु आदित्यवार, रच्यौ ग्रन्थ देरै मझारि ॥ ४१ ॥
श्री मतिरतन गुरु परसाद, भाषा सरस करी अति साद ।
ताको शिष्य समरथ है नाम, तिसने करि(यह)भाषा अभिराम ॥ ४२ ॥
रस मंजरी तौ रस सों भरी, पढ़ो सुनहु तुम आ [दर करी]
वनवालों को आग्रह पाइ, कीयो ग्रंथ मूरख समझाई ॥ ४३ ॥
रस विद्या में निपुण जु होइ, जस कीरति पाये बहु लोइ ।
जहां तहा सुख पावै सही, सो रस विद्या प्रगटावै[1] कही ॥ ४४ ॥

इति श्वेताम्बर समर्थ विरचितायां रस मंजरी—

चिकित्सा छाया पुरुष लक्षण कथन दसमोध्यायः ॥ १० ॥ समाप्तोयं रसमंजरी भाषा ग्रंथ शुभं ।

लेखन—१८ वी शताब्दी ।

प्रति—१—पत्र ३० । पंक्ति १३ । अक्षर ४४ । साइज १० × ४॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

---

१ पाठा० रस जाणही ।

२—अपूर्ण । महिमा भक्ति ज्ञान भंडार ब० नं० ८७ ।

विशेष—प्रस्तुत ग्रन्थ के १० अध्यायों के नाम व पद्य संख्या इस प्रकार है—

१—रस शोधन कथन प्रथमोध्याय:	पद्य ३७
२—रस जारण मारणादि कथन द्वितीयोध्याय:	,, ६८
३—उपरस शोधन मारण सत्व नियात माणिक्य सोधन मारण कथन तृतीयोध्याय:	पद्य १०
४—विष लक्षण, विष सेवा, विष परिहार, कथन चतुर्थोध्याय:	पद्य ३२
५—स्वर्णादि धातु शोधन मारण कथन पंचमोध्याय:	,, ८४
६—रसमारण कथन षष्ठोध्याय:	,, २६४
७—वीर्य रोधनाधिकार सप्तमोध्याय:	,, २२
८— ? नाम अप्राप्य	
९—मिश्रकाध्याय: नवम:	,, ७९
१०—छाया पुरख लक्षण कथन दशमोध्याय	,, ४४

(१६) वैदक मति । दोहा १०१ । कवि जान । सं० १६९५

आदि—

अथ वैदकमति पद नांवों ।

आदि अलह को नाम ले, दोम महमद नाम ।
वैदक मत की सीख ये, कहत जान अभिराम ॥ १ ॥
कहत जान कवि यों लिख्यौ वैदक ग्रन्थन माहि ।
अनुरुचि ह्वै तौ लीजीयें, अनरुचि लीजै नांहि ॥ २ ।

अंत—

जौबत तथा क्रोध करि, काहू काटे आइ ।
फूल करर दोनुं सदल, ता ऊपरि घसलाइ ॥ १०० ॥
सौरहसै पचानवै, ग्रन्थ कीयो यहु जांन ।
वैदकमति यह नाम है, भाख्यौ बुद्धि प्रमान ॥ १०१ ॥

इति पद नावां वैदकमति संपूर्ण ।

लेखन—सं० १८०१ वर्षे वैशाख वदि ३ श्री मरोटे लि० पं० भुवनविशाल मुनिना ।

प्रति—शिक्षासागर की प्रति के ५ वे पत्र के द्वितीय पृष्ठ से इसका प्रारंभ हुआ है और ७ वे पत्र मे संपूर्ण हुआ है । अत: पत्र २ पंक्ति १६, अक्षर ५० साइज १० × ४।

विशेष—प्रारंभ मे स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयोगी शिक्षाओ के बाद कई औषध प्रयोग है। जनसाधारण के लिये प्रस्तुत ग्रन्थ विशेष उपयोगी है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) वैद्यक सार। जोगीदास (दास कवि)। सं. १७६२ आश्विन शुक्ला १०। बीकानेर।

आदि—

विघ्न हरण सब सुख करन, भाल विराजत चद।
सिद्ध रिद्ध जाके सदा, जय जय गवरी नद॥ १॥
प्रथम गणेश्वर पाय लग, अपने चित्त के चाय।
भाषा शुभ करिकै कहूं, वैद्यकसार बनाय॥ २॥
नव कोटि मै मुकुट मन, बीकानेर शुभ थान।
राज करै राजा तहाँ, नृप मन नृपति सुजान॥ ३॥
जाकै कुँवर प्रसिद्ध जग, सब गुण ज्ञान अनूप।
जोरावर सिंह नाम जिह, राज सभा कौ रूप॥ ४॥

× × ×

तिन महाराज कुवार की, उपज लखी कविराय।
अपने मन उछाह सौं, भाषा करी बनाय॥ ११॥

× × ×

अंत—

अथ कवि वर्णन—

बीकानेर वासी विसद, धर्म कथा जिह धांम।
स्वेताम्बर लेखक सरस, जोसी जिनकौ नाम॥ ७२॥
अधिपति भूप अनूप जिहि, तिनसौं करि सुभ भाय।
दीय दुसालौ वरि करै, कह्यो जु जोसीराय॥ ७३॥
जिनि वह जासीराय सुत, जांनहु जोगीदास।
सस्कृत भाषा भनि सुनत, भौ भारती प्रकाश॥ ७४॥
जहां महाराज सुजांन जय, वरसलपुर लिय आंन।
छन्द प्रबन्ध कवित करि, रासौ कह्यौ बखांन॥ ७५॥
श्री महाराज सुजान जब, धरम ललक मन आंन।
वर्षासन संकल्प सौं, दीय सांसण करि दांन॥ ७६॥
व्यतीपात के पर्व विच, परवानो पुनि कीन।
छाप आपनी आप करी, दास कविनि कौं दीन॥ ७७॥

सब गुन जांन सुजांनसिंघ, सब रायनि के राय ।
कविराज सु करि कृपा, बहुरि दयो सिरपाय ॥ ७८ ।
जिन महाराज सुजांन के, जोरौ कुंवर सुजान ।
कलि में दाता कर्ण सो, सूरज तेज समांन ॥ ७९ ॥
जिनकै नामै ग्रन्थ यहु, कर्‌यो दास कवि जान ।
राज कुंवर की रीझ को, अब कवि करै बखान ॥ ८० ॥

अंत—

नयन२ खड६ सागर७ अवनि१, ऊजल आश्विन मास ।
दसम द्यौस कवि दास कहि, पूरन भयो प्रकाश ॥

इति श्रीमन्महाराज कुंवार जोरावरसिंह विरचितायां वैद्यक सारे । प्रथम पुरुष मर्दा उपाय + + + अर्शा कर्णो छूटे नाल परावर्त्ति वर्नेनं नाम सप्तमो अध्यायः । ७ शुभं भवतु । कल्याण मस्तु ॥

लेखन—१९ वी शताब्दी ।

प्रति—पत्र ३९, पंक्ति १०, अक्षर ३२, साइज ९×५

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१८) वैद्य विनोद (सारंगधर भाषा) । पद्य २५२५, । रामचन्द्र । सं०१७२६ वै० शु० १५ । मरोट

आदि—

श्री सुखदायक सलहीयें, ज्योति रूप जगदीस ।
सकल करी सोभइ सदा, श्री भगवत निशदीस ॥ १ ॥
हेमाचल ओपद करी, ज्यूं गजै भू मांह ।
युं उमापति राज है, प्रणम्यां आपद जांहि ॥ २ ॥
युगवर श्री जिनसिंहजी, खरतर गच्छ राजांन ।
शिष्य भए ताके भले, पद्मकीर्ति परधान ॥ ३ ॥
ताकें विनय वणारसी, पद्मरंग गुणराज ।
रामचन्द गुर देव को, नीकै प्रणमें आज ॥ ४ ॥
सारगधर अति कठिन है, बाल न पावे भेद ।
ता कारण भाषा कहुं, उपजै ज्ञान उमेद ॥ ५ ॥
पहिली गुरु मुख सांभली, भाव भेद परिज्ञान ।
ता पीछें भाषा करी, मेटन सकल अज्ञांन ॥ ६ ॥
पंडित भाषा देखि के, करिस्यें मोकुं हासि ।
सारंगधर तो सुगम है, योहि कीयो प्रकास ॥ ७ ॥

तेट पंडित बचन छे, ताको सुणि अधिकार ।
ज्यो तागौ मणि के विषे, छिन्न करे पैसार ॥ ८ ॥
ऐसी विधि मारग लह्यौ, मेरी मति अनुसार ।
कहूँ चिकित्सा सांभलौ, दोस न देहु लिगार ॥ ९ ॥
विविध चिकित्सा रोग की, करी सुगम हित आंणि ।
वैद्यविनोद इण नांम धरि, यामैं कीयौ बखाण ॥ १० ॥

अंत—

पहिली कीनौ रामविनोद, व्याधि निकंदन करण प्रमोद ।
वैद्य विनोद इह दूजा कीया, सज्जन देखि खुसी होइ रहीया ॥ ६० ॥

× × ×

कविकुल वर्णन चौपाई ।

गरुआ खरतरगछि सिणगार, जाणे जाकुं सकल ससार
जिनके साहिब श्री जिनसिंघ, धरा माहि हुए नरसिंघ ॥६४॥
दिल्लीपति श्री साहि सलेम, जाकुं मान्यो बहु धरि प्रेम ।
बहु विद्या जिनकु दिखलाय, दयावांन कीने पतिसाहि ॥६५॥
शिष्य भले जिनके सुखकार, पद्मकीरति गुण के भंडार ।
ताके शिष्य महा सुखदाई, सकल लोक में सोभ सवाई ।६६॥
वाचनाचार्य श्री पद्मरंग, बहु विद्या जांने उछरंग ।
चिर जीवौ ध्रू रवि चंद, देख्या उपजै अतिहि आणद ।६७।
रामचंद अपणी मतिसार, वैद्य विनोद कीनो सुखकार ।
पर उपगार कारण कै लई, भाषा सुगम जो मइ करि दई ॥६८॥
रस[६] दग[२] सागर[७] शशि[१] भयौ, रित वसत वैसाख ।
पूरणिमा शुभ तिथि भली, ग्रन्थ समाप्ति इह भाख ।६९॥
साहिन साहिपति राजतौ, औरंगजेब नरिंद ।
तास राज में ए रच्यौ, भलौ ग्रन्थ सुखकद ।७०॥
गछनायक है दीपता, श्री जिनचंद राजान ।
सोभागी सिर सेहरौ, वंदें सकल जिहांन ॥७१॥
मरोट कोट शुभ थान है, वसै लोक सुखकार ।
ए रचना तिहां किन रची, सबही कुं हितकार ।७२॥
पर उपगारी ग्रंथ है, सकल जीव सुखकार ।
थिर रहिज्यौ जां लगि सदा, तां लगि ध्रू इकतार ।७३॥

इति श्री वणारस पद्मरंग गणि शिष्य रामचंद विरचिते श्री वैद्यविनोदे नेत्र प्रसादन कल्प नामाध्याय । इति श्री वैद्य विनोद संपूर्ण । ग्रन्थ संख्या २७०० ।

लेखनकाल—सं० १८१० फाल्गुण शुक्ला ६ सहजहानाबाद। रत्नकलशभ्रात हितधर्म लि.

प्रति—पत्र ९८

विशेष—प्रस्तुत ग्रन्थ तीन खण्डों में विभक्त है, जिनकी क्रमशः पद्य संख्या ४५६+१२९२+७७७=२५२५ है।

(दान सागर भंडार बं० नं० २५)

(१९) वैद्यहुलास (तिब्ब सहावी भाषा)। पद्य ४०४। मलूकचंद।

आदि—

अथ वैद्य हुलास—तिब सहावी भाषा लिख्यते।

दोहरा

निकु (ख ? क्ष) त देव चित्त धरन धर, रिद्धि सिद्धि दातार।
विमल बुद्धि देवे सदा, कुमति विनासन हार ॥ १ ॥
दूजे सरस्वती ध्याइये, अरु सिमरो सारद माइ।
सुगम चिकित्सा चित्त रची, गुरु चरणे चितु लाइ ॥ २ ॥
श्रवणे प्रथमे सुनि लई, तिब सहावी आहि।
पाछे भाषा ही रची, गुनजन सुनिओ ताहि ॥ ३ ॥

× × ×

वैद्य हुलास जो नाम धरि, कीयो ग्रन्थ अमीकंद।
श्रावक धर्म्म कुल पक्ष(जन्म) को, ना (म) मलूक सु (सौं) चंद ॥ ५॥

अंत—

कुलांजण ककडासिंही, लौंग कुठ सु कचूर।
भांडगी जल वपत सों, महाकास हुइ दूर ॥४०४॥

इति श्री मलूकचंद विरचिते तिब्ब सहावी भाषा कृत नाम वैद्य हुलास समाप्तं १॥

लेखन—पं० प्र० श्री १०८ श्री चैनरूपजी पं० प्र० श्री १०५ श्री श्रीचंदजी पं० पनालालि लिखतं समाप्ता। समत १८७१ मिती ज्येष्ठ वदि ४ अदितवार। श्री मौजगढ़ मध्ये।

प्रति—पत्र २६। पंक्ति १३। अक्षर ३०। साइज १०×४।

विशेष—इसकी एक अपूर्ण प्रति भी हमारे संग्रह में है। एक अन्य पूर्ण प्रति कृपाचंद्रसूरि ज्ञान भंडार में थी जिसमें इसके पद्य ५१८ थे।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२०) सत श्लोकी भाषा टीका । चैनसुख जर्ता । सं० १८२० भाद्रपद कृष्णा १२ शनिवार ।

आदि—प्रति अभी पास मे न होने से नहीं दिया जा सकता ।

अंत—संवत अठारे वीस के, मास भाद्रपद जाण ।
कृष्णपक्ष तिथ द्वादशी, वार शनिश्चर मान ॥ १ ॥
टीका करी सुधारि के, चैनसुख कविराय ।
आज्ञा पाय महेस की, रतनचन्द के भाय ॥ २ ॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

विशेष—टीका गद्य मे है ।

(यति विष्णुदयालजी, फतहपुर)

(२१) हरि प्रकाश—

आदि—

अथ हरि प्रकाशाभिधस्य वैद्यक ग्रन्थस्य व्रजभाषा प्रमादि शोधन मारण विधान ।

रस उपरस, विष उपविषहि, सबै धातु उपधातु ।
कहौ रतन, उपरतन औ, शोधनीक जे बात ॥ १ ॥

अंत—

भल्ला तरु पुरु राम बहि, पच लौण त्रय क्षार ।
सोधण कहे निघंट मै, गुण मारण नहि धार ॥११॥

कही रसादिक विधि सबै ... ।

प्रति—पत्र ९ । पंक्ति १२ । अक्षर ४५ । साइज १० × ७ अंगुल

(श्री जिनचारित्र सूरि संग्रह)

(ङ) रत्न परीक्षा विषयक ग्रन्थ

(१) **पाहन परीक्षा** । जान कवि । सं १६९१ ।

आदि—

करता सुमरण कीजिये, निश वासर यह तथु ।
निस्तारण तारण जगत, पोषण भरण समत्थु ॥
नबी महमद मुसथकार, चाहत जिहा सीसू ।
ताको चाहत आस सब, धर्मी पुनि पापीसू ॥
पाहन की परिख्या कहूँ, जेम ग्रन्थ बखान ।
को मुहरो किन काम को, प्रगट कहत कवि जान ॥
हिन्दी तुरका मति मथो, कथो खड बखानि ।
कहत जान जानत नहीं, मोउ लहत मुजानि ॥

अंत –

रखत कपूर जु अपने पास, कवल बात दुख देत न तास ।
अन्द नारिवर कोयउ आदि, तिनको उडि लागत है ताहि ।
पाहन परिख्या भाखि जान, जैसी विधि ग्रन्थनि परमानि ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—(१) दानसागर भंडार ।

(२) गुलाब कुमारी लायब्रेरी, कलकत्ता । गुटका नं० ३९

(२) **पाहन परिक्षा** (संग वर्णन)

आदि—

दोहा

किसन देव गुरु ध्यान कर, शिव सुत गौरि मनाय ।
संग जाति बर्नन करुं, पढ़त ग्यान होय ताय ॥ १ ॥

संग कहत कवी संग कुं, जुगल मिलण कहै सग ।
संग नाम पाषाण को, ताके अद्भुत रंग ॥ २ ॥

× × ×

संग गिलोला नाम है, अवलाखा रंग ताहि ।
जहा तहां कहु होत हे, जान खार कै मांहि ॥ ८० ॥
नाम जराहि संग है, असमानी फीका ताहि ।
पूरब दक्षिण देस मे, भरै घाव मिट जाय ॥ ८१ ॥
पचभदरा संग नाम है, लूण होत है तांह ।

विशेष— (ग्रन्थ अपूर्ण)

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १६ । अक्षर ४२ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) रत्न परीक्षा । पद्य १३६ । कृष्णदास । सं० १९०४ कार्तिक कृष्णा २

आदि—

कृष्णदेव गुरु ध्यान करि, सिव सुत गौरी मनाय ।
रग जाति वर्णन करौं, पढ़त ज्ञान हाय नांहि ॥ १ ॥

अंत—

चन्द्र चाप मुनि वेद हीं, सम्वत उरजु जु मास ।
कृष्ण पक्ष तिथि दूज हीं, भूसुर कृष्ण जु दास ॥
भूसुर कृष्ण जु दास की, मन सुख नाम हैं ।
आया बीकानेर ग्राम, तोसाम है ॥ १३२ ॥
कृती करी यह ताहि, मित्र सुन लीजिये ।
छंद भग कहि होय, सुद्ध कर दीजिये ॥ १३३ ॥
जोहरी कृष्ण जु चंद हीं, श्रावग कुल हि निवास ।
विक्रमपुर का वासिन, पुनि दिल्ली मे वास ॥१३४ ॥
जाति बोथरा नाम हैं, सुनो सबन दे ताय ।
ताहीं पढन के कारणे, मै भाषा रची बनाय ॥ १३५ ॥
रत्न परिच्छा ग्रन्थ ही, पढ़े सुने जो कोय ।
रत्न परीक्षा मुनि करे, रत्न सरीखा होय ॥
रत्न सरीखा होय, मान नहा कीजिये ।
दया धर्म के बीच, मीत चित दीजिये ।

कहिये वचन विचारि, कपट तजि दीजिये।
भज कमला-पति चरण, सुरग-सुख लीजिये ॥ १३६ ॥

इति रत्नपरीक्षा ग्रन्थ।

लेखनकाल—संमत् १९०४ कातिक वदि ९ लि० महात्मा हरखचंद विक्रमपुर मध्ये।

प्रति—गुटकाकार नं० ३९

(वृहद् ज्ञानभंडार)

(४) रत्न-परीक्षा। तत्व कुमार। सं० १८४५ श्रावण कृष्णा १०

आदि—

आदि पुरख आदीसरु, आदिराय आदेय।
परमातम परमेसरु, नमो नमो नाभेय ॥ १ ॥

अंत—

श्रावण वदि दसमी दिनै, संवत अठार पैंताल।
सोमवार साचो सुखद, ग्रन्थ रच्यो सुविशाल।
खरतर गच्छ जाणे खलक, मोटिम बड़े मंडाण ॥ ३ ॥
सागरचद सूरीस की, ता मझि साखा भाण ॥ ४ ॥
ता शाखा में दीपते, महोपाध्याय जगीस।
आगम अरथ भंडार है, पदमकुशल गणिश ॥ ५ ॥
प्रथम शिष्य तिनके कहूँ, वाचक के पद धार।
दर्शनलाभ गणि कहे, ताहि शिष्य सुविचार ॥ ६ ॥
५० संज्ञा धारक प्रवर, तत्वकुमार सुजाण।
ग्रन्थ रच्यौ बहु हेत धर, दिन दिन अधिक बखाण ॥ ७ ॥

लेखनकाल—सं० १८४७

विशेष—बंग देश के राजगंज के चंडालिया आसकरण के लिये रचित।

प्रति—(१) प्रतिलिपि—अभयजन ग्रन्थालय।

(२) गुटकाकार—वृद्धिचंद्रजी यति संग्रह जेसलमेर।

(३) मुनि कांतिसागरजी साहित्यालंकार।

(२) रत्न परीक्षा। पद्य ५७०। रत्नशेखर। सं० १७६१ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ गुरुवार। सूरत। शंकर के लिये।

आदि—

ऊंकार अनेक गुण, सिद्ध रूप परगास।
पांचु पद यामैं प्रगट, सुमिन पूरन आस ॥ १ ॥

अलख रूप यामें बसे, अनहद नाद अनूप।
ब्रह्मरंध्र आसन सजै, रच्यौ अनादि सरूप ॥ २ ॥
सुमिरन याको साधिकें, रचिहु ग्रन्थ मति आनि।
रत्न परीक्षा देखि कै, भाषा करहु बखानि ॥ ३ ॥
आन कवीसर के किए, संस्कृती सब ग्रन्थ।
तातें मो मन में भई, भाषा रस गुन ग्रथ ॥ ४ ॥

सोरठा

भाषा रस को मूल, भाषा सब कौ बोध कर।
तातें हम अनुकूल, भाषा कारन मन करयौ ॥ ६ ॥
सूरति गुन मूरति जिहां, वसत लोग धन आढ।
ताहि विलोक कुबेर कत, मान धरत मनि गाढ ॥ ७ ॥
तहाँ वसत दातार मनि, गुना धनी सुचिसील।
भाग्यवंत चतुरन चतुर, भीम साहि लछि लील ॥ ८ ॥
शंकर शंकर तास सुत, कुल मडन जस जास।
ताहि विलोक विचछन ही, होवत हीयै प्रकास ॥ ९ ॥
श्री श्रीवंश उद्योत कर धरमवंत धुरि धीर।
सकल साह सिरदार वर, भजन दारिद नीर ॥१०॥
ताकी इच्छा इह भई, रतन सबन तै सार।
या की भाषा करि पढ़ै, गहै हीयन दिढ हार ॥११॥
ताकी रुचि सुचि साधकें, रचिहुं चित्त धरि चुप।
मन वच क्रम मग पाइ वर, मनि जिन आनहु कोप ॥१२॥
वाचक रत्न प्रकास कर, रत्न परिच्छा भेद।
कहत रत्न व्यवहार इह, मनसां धरयो उमेद ॥१३॥
संवत सतरह सै अधिक, साठि एक करि औन।
अगहन सुदि पचम दिने, गुरु मुख लहि गुरु भौन ॥१४॥
ऋषि सबै कर जोरि कै, मुनि अगस्ति ढिग आइ।
पूछन रत्न विचार सब, विधि सों प्रणमी पाय ॥१५॥

अंत—

छप्पय

विद्या विनय विवेक विभौ वानी विधि ग्याता।
जानत सकल विचार सार शास्त्रन रस श्रोता।
भीमसाहि कुलभान साहि शकर शुभ लछन।
पढत गुनत दिन रयन विविध गुन जानि विचछन।
कुलदीपक जीपक अरपि भरीया लछि भडार जिहि।
दोहि रत्न व्यवहार रस इह प्रारथना कीन तिहि ॥७७॥

दोहा

ता कारन कीनो अलप ग्रन्थ जु मो मति मानि ।
सज्जन सुनि सुध कीजीयउ, जहाँ घट मात्रा जानि ॥७८॥
अंचल गछपति श्री अमर, सागर सूरि सुजान ।
ताके पछि वाचक रतन, शेखर इमि अभिधान ॥७९॥
तिन कीनी भाषा सरस, पढ़त होत बहु मान ।
प्रथम लेख सुंदर लिख्यौ, विबुध कपूर सग्यान ॥८०॥
रवि शशि मंडल मेरु महि, जो लौं ध्रुव आकाश ।
पढ़े सौ तौ लु थिर रहै, लीला लछि विलास ॥८१॥

इति श्री वाचक रत्नशेखर विरचिते रत्नव्यवहारसारे श्रीमच्छ्रीशंकरदास प्रिये मणिव्यवहारो नामाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

इति रत्न परीक्षा ग्रन्थ संपूर्णमिदं ॥

प्रतिपरिचय-(१) पत्र ३२ । पंक्ति १३ । अक्षर २५ से ४५ तक । साइज ११ × ५ ।
(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) अन्यप्रति —(वृहद् ज्ञान भंडार)

विशेष—वर्गनाम व पद्यसंख्या—१ वज्र पद्य १०५, मौक्तिक १२९, माणिक्य ९०, नीलमणि ४३, मरकत मणि ३३, उपरत्न ४७, नानोरत्न १८, माणिक्य ८१, प्रारंभिक १४ । कुल पद्य संख्या ५७० ।

(६) रत्न परीक्षा । पद्य ७० । रामचन्द्र ।

आदि—

प्रथमहि सुमर गनेश को, जातैं बाधे बुद्ध ।
ता पीछे रचना रचौ, रतन परिच्छा सुध ॥ १ ॥
रत्न दीपका ग्रन्थ में, रतन परिच्छा जानि ।
रामचन्द्र सौ समझि कै, भाषा करनो आनि ॥ २ ॥

अंत—

सवैया

मधुकर परीक्षा—निसा मुख ससी बुध गाइहू को कार्चौ लेइ,
ताके बिच मनिह कौं मेलि‍ह निसा ठानिये ।
भा (तु उ) दे देखत ही दुद्ध लाल रंग होत,
तातैं जानो सत्रुन सौं जुद्ध जीत जानिये ।

काल रंग विष हरे पीले पित वाय नसै,
बीतड्यौ सो पेट सुलंनिलोपित दांनिये ।
नीर पय जैसो य सोई राज मांन देत,
हहै बीध ननि के गुननि पहिचानिये ।

इति रत्नपरीक्षा संपूर्ण ।

लेखन काल—सं० १९३७ रा मिति आसु वदि १२ शनिवारे । शुभंभूयात् ।

प्रति—पत्र ११ । पंक्ति १३ । अक्षर २५ से ३० ।

(दानसागर भंडार ब० नं० २५)

(च) संगीत-ग्रंथ

(१) रागमाला । पद्य ३८४ । उस्तत । सं० १७५८ मगसर सुदी १३ । भेहरा ।

आदि—

भरथनाद ग्रंथ ताकी साख (१) 'नादग्राम स्वरापदा ।' आदि श्लोक। सर्व संगीत विधि

आद नाद ध्यावै गुणगराम को मरम पावै सातो सुर सगम पधन बृतंत है ।
चित बीच लै लागै गम कामै जोत जागै मूर्छना अ क ताल बरग अनंत है ।
आलत्या उघट किलक तानि निरत हमै राग रागनी सरूप बूझमै अनंत है ।
इंद्री भेद जानै सो सनि पिहछानै जोग सोई राग मह जान सोई कलावंत है ।। २ ।।

नाद वर्णण—

दोहा

एक आप हर रुप है, अनहद अगम अतोल ।
लख चौरासी मै बन्यो, जोन अनूपम बोल ।। ३ ।।
बोलन मैं अरु पठन मै, राग कला मै सोय ।
जोग सबन मै नाद है, बिना नाद नहि कोइ ।। ४ ।।

× × ×

अंत—

जो कछु देख्यो भरथ मै, कीनो योग विचार ।
जो कुछ चूक परी कहूँ, सुरजन लेहू सुधार ।। ७६ ।।
नगर भेहरो बसत है, नदी सरश्वती कूल ।
च्यार वर्ण चारों सुखी, धर्म कर्म को मूल ।। ७७ ।।
उत्तर दिसि पछिम हित, अमर कुंड तट धन्य ।
षट रस भोजन सोज जिह, तिनि की सँधवारम्य ।। ७८ ।।

औरंग साह महा बली, साहन के सिरताज।
करी रागमाला सर (स), ताके अवचल राज ॥ ७९ ॥
चौरासी उदेस है, अरु चौरासी राग।
देस देस में राग है, गावत गुनी सुभाग ॥ ८० ॥
चतुरासी जो देस है, सुन ले ताके नाम।
पातसाह उस्तत कहै, गुनी जोग सुभ काम ॥ ८१ ॥
संमत विक्रम जोत को, सतरै सै पंचास।
आठ वरस दुन और संग, कीनो ग्रन्थ प्रकास ॥ ८२ ॥
बुद्धवार तिथि त्रयोदशी, सुकल पख्य परधान।
कहि राग-माला प्रगट, मगसिर मास प्रधान ॥ ८३ ॥
राग की माल श्री माल बनी चुनि अच्छर फूल समो संगवासी।
नाद को मेरु धरयो पट नारन कंठ कहैऽनुराग हुलासी।
सत्संग विचार हजार हजार परे सुन ते रस मै बुध जोग प्रकासी।
राग सगीत के भेद को देख कै नाउ करयो तिह राग चौरासी॥ ८४ ॥

इति रागमाला। श्रीरस्तु। शुभं भवतु। लेखक पाठकयो।

लेखनकाल—१८ वीं शती।

प्रति—(१) पत्र ११। पंक्ति १७ से १९। अक्षर ५० से ५५। साइज १०×४।

(महिमा भक्ति भंडार)

(२) पत्र ४। अपूर्ण। (हमारे संग्रह में)

(९) राग विचार। पद्य ९८। लछीराम।

आदि—

गुरु गनेश मन सुमरि कछु, कहौ कामिनी कंत।
राग ताल मिति नाहिनै, गुरु कहि गये अनन्त ॥ १ ॥
देव रिषिनि कीने विविध, मत संगीत विचार।
लछीराम हनिवन्त मतु, कहै सुमति अनुसार ॥

अन्त—

धैवतु ग्रह सुर रागना अरु कामोद सुनाउ।
लछीराम ए जानि कै तन मन आणंद पाउ ॥ ९७ ॥

प्रति—(१) पत्र ५ (अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२) पत्र ९ सं० १७३२ चै० सु० ७। लि० जनार्दन।

(१०) राग माला। पद्य ८५। सागर।

आदि—　　　　　　अथ रागमाला लिखते—

गुरु प्रसाद सागर सुकवि, कृष्ण चरण रिदै धारि।
उतपंत जो षट राग की, ताका कहै विचार ॥ १ ॥
कहां तां उपजे रागषट, सुत नारी पित मात।
देस समो रुति पर तिनिह, तिनकी वरनो बात ॥ २ ॥

अंत—

राग रागिणी पन सर्वों, गावत समे ज कोइ।
सख सिध सागर सुकवि, सो फल दायक होइ।

लेखनकाल -१८ वीं शती।

प्रति—पत्र २। पंक्ति ११-१२। अक्षर २५ से ३२। साइज १०×४। पत्र २५+११ के बाद (आगे के पत्र न होने से) ग्रन्थ अधूरा रह गया है। अतः अन्त का अंश अनूप संस्कृत लायब्रेरी के गुटके से लिखा गया है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) रागमाला—पद्य ६१। हीरचन्द। सं० १६९१। माडलिनगर।

आदि—

अकल अरूप अमेय गुन, सुदर रै जसु दीन।
परम पुरुष पय लागि कै रागमाल यह कीन ॥ १ ॥
ब्रह्मादिक हरिहर सबै अहि निसि सब जग आहि।
कोटि कल्प युग वीहि(नि) गए, भेद न पायो ताहि ॥ २ ॥
सुर नर मुनिवर गन असुर, नाद ध्यान सब लीन।
आप आपनी बुद्धि तें, है कोइ नहीं हीन ॥ ३ ॥

अन्त—

असित देह रमणी कलभ, लिखित कुसुम पीय हास।
मुगध धनासी लोचनह, मृगमद तिलक सुवास ॥५९॥
सवत सोलै एकानवैं मांडलि नयरि मझारि।
राग रागिनी भेव कीय, गुणी जन लेहु बिचार ॥६०॥
सब जन कारन यह रची, रागमाल सुचि भेव।
हीरचन्द कवि सुचि कीयैं, नागरि जन कैं हेव ॥६१॥

इति रागमाला समाप्ता।

लेखन काल—१८ वीं शती।

प्रति—(१) पत्र ३। पंक्ति २७। अक्षर १८। साईज ४।×७।

(२) गुटकाकार प्रति में गाथा ५६ पीछे लिखते-लिखते छोड़ दिया है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) राग माला। पद्य ९०। सं० १७४६ वि०।

आदि—

अथ गान कतुहल भाषायां राग संयोगः॥ कानरउ॥
शुद्ध कानरउ आदि दे, भेद कानरे पंच।
कहु तिम तैं संगीत कै, गुन जन मानस संच॥ १॥
प्रथम कहत हौं गाइ कै, शुद्ध कानरउ एक।
भेद चार के गाईयइ, ताकौ सुनहु विवेक॥ २॥

वागेसरी—कारउ इहौं धनासरी दोउ मिलि अभिराम।
एकै सुर करि गाइये वागेसरी सुनाम॥ ३॥

अंत—

स्वर साधारण काकली श्रुत संगीति निवेद।
बिनु स्वर कैहू न समझीए विस्तर तांन सुभेद॥ ९०॥

सर्व गाथा सलो (क) १०४। इतिरागमाला सम्पूर्ण।

लेखन—संवत् १७४६ वर्षे माह वदि कृष्ण पक्षे तिथि इग्या (र) रस दे (दि) न बोधवारे पंडिते रामचन्द गणि लीपीकृतं भटनेर मध्ये श्री रसते सोभ भवतो। श्री छ।

प्रति—पत्रा २। पंक्ति २०। अक्षर ५०। साईज १०×४।।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) रागमाला

आदि—

चले कामनी कंत के, गृह सुर अरु सब मेव।
रहनि ! रुप लक्षन कहौं करो कृपा गुरु देव॥ १॥

भैरव राग लछनं

सोरठा

धरे रुद्र को भेष, तीनि नैन माथे जटा।
भालचंद्र की रेख, भैरव को लछन सरस॥ २॥

अन्त—

देसकार लछन—

नैन कमल मुख चंद, कुछ कठौर कंचन वरन।
हरति नाह दुख दंद, देसकार सुकुमार तन।

इति षट राग तीस रागिनी समेत समापतं ।

लेखनकाल—१९ वीं शती ।

प्रति—पत्र १ । लम्बी पंक्ति ४५+४३ । अक्षर १७ । साईज ४॥ × १६ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) रागमाला

आदि—

भैरु शिव मुख तें भयो, धर्ना सुगति सुर सोय ।
सरद प्रात ही गाइयै, जाति सु भडो होय ॥ १ ॥

मोदक छन्द

धैवत सुर गृह ताकौ जानौ, शिव मूरति संगीन बखानौ ।
कंकन उरग और शशि भाल, सुर सुरि जटा गरै रुड माल ।
सेत वसन नैन फुनि तीन, सिद्धि सरुप अरु महा प्रवीन ॥ २ ॥

सोरठा

कहो भैरवी नारि, वैराडी मधु मधु धुनी ।
सैंधवि तेहु बिचारि, बगाली हु जानियौ ॥ ३ ॥

विशेष—प्रथम पत्र ही उपलब्ध है । ग्रन्थ अधूरा ही प्राप्त हुआ है ।

लेखनकाल—१९ वीं शती ।

प्रति—पत्र १ (एक तरफ) । पंक्ति १३ । अक्षर ४८ । साईज १० × ४। ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) रागमाला । दोहा ३६ ।

आदि—

अथ रागमाला दूहा

स्याम वरन तन दुख हरन सब रागन कौ राइ ।
चवर ढुरै मरदन करैं, वनिता भैरौं भाइ ॥ १ ॥
पुहप माल गल छाजि है, राग करत दै ताल ।
धाम फटक सर्पा तरग भाव भैरवी बाल ॥ २ ॥

अन्त—

वैनी लाबी स्याम वह, बंगाला रंग सेत ।
राग ागना तास पट, सुनि राइ कर हेत ॥ ३६ ॥

लेखनकाल—१८ वीं शती।

प्रति—पत्र २। पंक्ति २७। अक्षर २०। साइज ४|×७।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) रागमाला। पद्य ८६।

आदि—

रसनिधि गुननिधि रूपनिधि राग रंग निधि श्याम।
श्री नट नारायण प्रगट, ताकौं करूं प्रणाम॥ १॥
गुण निधि गंगादास, हरिजन साह कल्याण सुव।
हरिजस केलि निवास, रागमाला ता हित गुही॥ ५॥

अन्त—

मधु माधुवा मिलि गोर तनु, धूमल हार श्रृंगार।
भस्म पुण्ड अति अगन तनु सब भूषण उतार॥ ८६॥

प्रति—पत्र २। लक्ष्मीप्रभु लिखित।

(श्री सीताराम शर्म्मा, राजगढ़)

(८) राग मंजरी—। शाकद्वीपी भूधर मिश्र। सं० १७३० माघ वदि ९।

आदि—

स्याम घन-स्याम सुख आनन्द को धाम, जाको,
राधावर नाम काम मोहन बखानिऐ।
मन अभिराम मुरली को मर ग्राम धरें,
याम याम यम यम ध्यान उर आनिऐ।
लसे वनमाला दाम वाम प्यारी गोपीवाम,
मुनि गावें जाको साम काम रूप जानिऐ।
भूधर नेवाज्यो राम चल्यो आए नन्द ग्राम,
तिहु लोक ऐक धाम साची जिअ मानिऐ॥ १॥

दोहा

रंध्र° राम³ मुनि⁷ चन्द्रमा¹, नौमी माघ की स्याम।
दछिन गढ़ नादेरि लगु, उपज्यो मन यह काम॥ २॥
सुबा नाम विहार है, गढ़ मुगेरि निज धाम।
आजम साह पयान मैं, देख्यो दन्तिन ग्राम॥ ३॥
साकं द्वीपी भूमिसुर, मिश्र भार्गव राम।
ता सुत भूधर यहो कही, राग मंजरी नाम॥ ४॥

ले दर्पन संगीत को, मतो कहे कछु भेद।
राग रागिनी समय अरु, लछन पंचम वेद ॥ ८ ॥

× × ×

इति सोमेश्वर मते राग रागिनी प्रथम प्रकास। अथ हनुमन्मते।

अंत—

सत्रह से चालीस में, दूज उजरी पाख।
नीरा तीर लिखी रहे, कटक ख्वार तहा लाख ॥ ३ ॥
आजम साह महाबली, आए उनहके साथ।
भूधर करि यह पुस्तकी, दीन्ही गिरिश के हाथ ॥ ४ ॥

इति श्री मिश्र भूधर वैद्य राज पंडित सकल विद्या विनोद शाकद्वीपि द्विजवर विरचित रागमंजरी पुस्तक संपूर्ण।

लेखनकाल— सं० १७४२ कार्ती वदी १२ बुध बीजापुर मध्ये लिखितं प्रो० विद्यापति तत्पुत्र हरिरामेण।

प्रति—पत्र २७। पंक्ति ८। अक्षर ३२।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१०) संगीत मालिका महमद साहि।

आदि—

प्रारंभ के १० पत्र नहीं होने से नहीं दिया जा सका।

मध्य—

एक पताक त्रिपताक कहि ... कोष पुनि होए।
अलि पद्म कह शास्त्र पुनि, सस पक्ष मुनि लोए ॥२४१॥

गद्य

पहिले ही पाउको फिराई स्वस्तिक बांधयाहि हाथे। (फिराई स्वस्तिक बांधयहि हाथे) फिराइ स्वस्तिक कीजहि। पीछे हाथ को स्वास्तिक अरु पाऊन को स्वस्तिक विलगाई फिरावन बाएं दाहिने ले जइये पीछे हाथ पाउ बेर हूँ ऊँचे नीचे कीजहि तिहि पीछे उद्दत अंगिहार उरो मंडर एर्तानिऊ करण कीजहि तब आखिरै चित नाम अग- हार होई।

अंत—

इति कल्पनृत्यं। इति श्री पेरोज साहा वंशान्वये मानिनी मनोहर कामिनी काम पूरन विरहनी विरह भंजन सदा वसतानंद कंदारि गज मस्तकांकुश श्री

मत्तत्तार साह्यात्मज महमदसाहि विरचितायां संगीतमालिकायां नृत्याध्याय समाप्त। शुभं भवतु।

लेखन काल—१९ वीं।

प्रति—पत्र ११ से ५३। पंक्ति २०। अक्षर १६। (मध्य के भी कई पत्र नहीं) (अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(११) हीय हुलास। सटीक। पद्य ६७।

आदि—

अथ राग रूपमाला लिख्यते।

दोहा—

प्रथमहि ताको सुमिरिये, जिणे दीनों गुरु ग्यान।
ज्ञानी गुन गावें सदा, ध्यानी धरे जु ध्यान॥ १॥
अंबर थम्यौ थंभ बिन, धरती अधर धराय।
मनुष्य रूप हुय अवतर्यों, देखन कलि का भाव॥ २॥
हीयें हुलास या ग्रन्थ को, राख्यो नाम विचार।
यामें सिगंर रागन के रचेय रूप सिगार॥ ३॥

अंत—

महलार—

बान गं॰ गावत बहुत, रोवत है जलधार।
तन दुर्बल विरह दह्यौ, विरहिन नाम मल्हार॥ ६६॥
सेझ बिछाई कमल दल, लेट रही मन मार।
लेत उसास निसियार तन, ननक वियोगिनी नार॥ ६७॥

इति हियहुलास ग्रन्थ रुपमाला संपूर्ण।

अथ रागमाला की टीका लिख्यते या को विचार याही मे यार्की मूर्छना याही मे तीन ग्राम सप्त स्वर याहि मे ग्राम १ ग्राम २ ग्राम ३। दूहा—

अन्त—

रागिनी पांचमी केदारा वखत घरी २ भारज्या २ भारज्या १ मारु वखत घटी २

इति रागमाला राग ६ रागिनी ३० भारज्या ४८ सर्व मिलि ८४ नाम संपूर्ण।

[इसके बाद रागिनी-उत्पत्ति दिवस-रागिनी, रात्रि-रागिनी आदि के कई पद्य हैं।]

इति छतीस राग रागिनी नाम संपूर्ण।

लेखन काल—१९ वीं शती।

प्रति—पत्र ४। पंक्ति १७। अक्षर ५२। साइज १०॥×५।

बिशेष—टीका-टिप्पणी रूप (संक्षिप्त स्पष्टीकरण मात्र) है।

(महिमा भक्ति भंडार)

(छ) नाटक ग्रन्थ

(१) प्रबोधचन्द्रोदय नाटक । हरि बल्लभ ।

आदि—

श्री राधा वल्लभ पद कमल मधु के भाइ ।
हित हरि वंश बडो रसिक, रह्यो तिननि लपटाइ ॥ १ ॥
ताके चरननि बंदि के, बन चन्द्रहि सिर नाइ ।
रचना पोथी का करौ, जात करैं सहाइ ॥ २ ॥
कियो प्रबोधचन्द्रोदय जु, नाटक दीनो तोहि ।
कृष्ण मिश्र रचि बहुत विधि, वह दिखाउ सुजाहि ॥१६॥
कीरति वर्मा की सभा, तिनकै चित यह चाउ ।
सो नाटकु नायक अबहि, इनकौ सजि दिखराउ । १७॥
यह बात गोपाल जु, मोसों कह्यो बनाइ ।
तातैं अब घर जाइ के, आनो नुवनि बुलाइ ॥१०॥

अन्त—

हरि वल्लभ भाषारच्यो चित मैं भयो निसंक ।
श्रीप्रबोध-चन्द्रोदयहि छठओ बीत्यो अंक ॥

समाप्ताय ग्रन्थ ।

लेखन काल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १४+१९+१५+१३+१२+१५ । पंक्ति ११ । अक्षर ३२ ।
साईज १०×५ ।

विशेष—राजा कीर्तिवर्मा तथा गोपाल का प्रारंभ मे उल्लेख मात्र है ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२) प्रबोधचन्द्रोदय नाटक

आदि—अथ प्रबोधचन्द्र नाटक लिख्यते ।

कवित्त

जैसे मृग तृष्णा विषे जल की प्रतीति होत,
रूपै को प्रतीति जैसें साँप विषै होत है ।
जैसे जाके बिनु जाने जगत सत जानियत—
विश्व सब तोत है ।
ऐसें जो अखड ज्ञान पूर्ण प्रकाशवान,
नित्त समसत्त सुध आनन्द उद्योत है ।
ताही परमातमा की करत उपासना है
निसन्देह जान्यो याकी चेतनाहीं जोत है ॥१॥

ऐसे मंगल पाठ करि सूत्रधार अपनी नटी बुलाई यहां आज्ञा दीज। ।
सूत्रधार बोल्या ।

अन्त—

विशेष—प्रति के केवल तीन पत्र होने से अंत का भाग नहीं मिला, तथा कर्ता का नाम भी ज्ञात नहीं हो सका ।

प्रति—पत्र ३ । अपूर्ण । पंक्ति २४ । अक्षर ६२ । साइज ९।'×४।" ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) हनुमान नाटक । जगजीवन ।

आदि—

श्रीमज्जगजीवन कवे आत्म विनोदार्थं हनुमान्नाम्ना नाटक पर(?)यतु समुद्यतः ।

कहे प्रिया कविराज कहि रामायन की बात ।
नाटक श्री हनुमान को नवौ अक है सात ॥

अन्त—

सातवे अंक का समाप्ति वाक्य—

उठि जानुकि रन स्रवन है दसआनन गत जोनि ।
दुदभिरि मृदंग धुनि उत सख धुनि होलि ॥ २९ ॥

इति श्री जगजीवन कृत महानाटके रावनानिदहनो नाम सप्तम अंकः ।
इसके बाद आठवे अंक के ५४ वे पद्य तक है । बाद के पत्र नहीं है ।
प्रति—पृष्ठ ७२ । पंक्ति १८ । अक्षर १२ । साईज ६"×५।" ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(ज) काव्य ग्रन्थ

(१) कथा

(१) **अंबड चरित्र।** हिन्दी गद्य । क्षमाकल्याण ।

आदि—

वर्द्धमान भगवन्त के पावन पद अरविंद ।
आतम चित्त अंतरधरी प्रणमीं नरपद वृंद ॥ १ ॥
अंबड नामे भवनिर्गात चरो चौथे काल ।
श्रावक वीर जिनेश को ताको चरित्र विशाल ॥ २ ॥
श्री मुनि रत्न सूरिन्द कृत संस्कृत मय सुबंध ।
वर्तमान अवलोक के । रचु भाषा बन्ध ॥ ३ ॥

गद्य —

धर्म मैं सर्व लक्ष्मी संपजै धर्म मैं प्रशंसनीक रूप संपजै, धर्म मैं सोभाग अरु बडौ आउखौ जीव पावै बहुत क्या कहै धर्म से सब मना वंछित मिलै जैसे अंबड क्षत्रिय के धर्म के प्रसादे सर्व संपदा मिली आपदा मिटी उस अंबड का दृष्टान्त दिखावै हैं ।

अन्त—

वाचक अमृतधर्म जस सीस क्षमाकल्याण,
पालीताना पुरवरै चरित रच्या यह जान ।
सय अठारा चौपन समै सुदि आषाढ सुमास ।
तृतीय तिथि कुजवार पुन सिद्ध योग सुप्रकास ॥
आर्या उत्तम धर्मरुचि पुनी सम सुविनीत ।
नाम खुश्याल श्री निमित, यहां कानौं धरि चित्त ॥ १ ॥

लेखन काल - १९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ३७ । (महिमा भक्ति भंडार)

(२) **कथामोहिनी।** पद्य २२५ । जान कवि । सं० १६९४ अगहन शुक्ला ४।

आदि—

आदि अगोचर अलख प्रभु निराकार करतार ।
दैनहार ज्यौं सकल जन, रचनहार संसार ॥ १ ॥

रवि ससि उडिन अकास सब पल मै करै प्रकास ।
देत हुलास उदास कौं पुजवन आस निरास ॥ २ ॥
नाम महंम्मद लीजिये, तन मन है आनंद ।
पूजैं मन की इच्छ सब, दूर होहि दुख दंद ॥ ३ ॥
अबहि बखानों जांनि काई, सुलप कथा चितु लाहि ।
पढत न हारै रसन जिह लिखत न कर अरसाइ ॥ ४ ॥

अन्त—

जौ लौ मोहन मोहनी जीये इह संसार ।
एक अग संगही रहे रचक घटया न प्यार ॥२११॥
सोरह सै चोरानवै ही अगहन सुद चार ।
पहर तान मे यह कथा, कीनी जांन विचार ।।२२॥

इति कथामोहनी कवि जान कृत संपूर्ण ।
लेखन काल– सं० १६३० वि० ।
प्रति—गुटकाकार पत्र ८ । पंक्ति १८ । अक्षर १७ । साइज ६×९॥ ।
इस प्रति मे कवि जान कृत सतवर्ती (१६७८) भी है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२) कुतबदीन साहिजादेरी वारता—

आदि—

अथ कुतबदीन साहिजादैरी वारता लिख्यते ।

वडा एक पातिस्याह । जिसका नाम सबल स्याह । गढ मांडव थांणा । जिसकै साहिजादा दाना । मौजे दरियावर्नार । जिसकै सहर मै वसै दान समद फकीर । जिसकी औरत का नाम मौजम खानू । सदावरत का नेम चलानू । जो ही फकीर आवै । तिसकुं खांणा खुलावै । एक रोज इक दीवान फकीर आया । दावल दांन घरां न पाया ।

अन्त—

बेटे बाप विसराया, भाई वीसारेह ।
सूरा पुरां गलउडी मांगण चीतारेह ॥१०७॥

बात—

ऐसा कुतबदीन साहिजादा दिल्ली बीच पिरोसाह पातस्याह का साहजादा भया दांवलदान फकीर का लडकी साहिबा से आसिक रह्या बहुत दिनां प्रीत लगी । दुख पीड आपदा सहु भागी । पीरोसाहि का तखत पाया साहजादा साह कहाया । यह सिफत कुतबदीन साहिजादे की पढै बहुत ही वखत सुख सै बढै यह बात गाइ जुग से रहि । ढढणी ने जोड कर कही ।

इति श्री दूतका ढढणी के प्रसंग कुतबदीन साहिजादै की वात संपूर्ण।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र २४ से ३०। पंक्ति ३२। अक्षर २४। साईज ६।×८।

(अभयजैन ग्रन्थालय)

विशेष—१०७ पद्य दोहे-सोरठे हैं, बाकी गद्य है, इस वार्ता की प्रचीन प्रति १७ वीं शताब्दी की भी उपलब्ध है, पर उसका पाठ इससे भिन्न प्रकार का है।

(४) चंद हंस कथा। टीकम। सं० १७०८ जेठ बदि ८ रवि।

आदि—

अथ चन्द्रहंश कथा लिखिते।

दोहा

ऊंकार अपार गुण, सबहीं आर आदि।
सिधि होय याकु जुपे, अक्षर एह अनादि ॥ १ ॥
जिण वांणी मुख उचरै, उं सबद सरुप।
विदित होये मति बीसरो, अखि (क्ष)र एह अनूप ॥ २ ॥

अंत—

ऐसी जुगति खैचीयो भार, जाणे ताकुं सब संसार।
संवत आठ सतरा सै वर्ष, करत चोपइ हुआ हरिष ॥ ४३८ ॥
पढित होय हसो मति कोय, बुरा भला अखिर जो होय।
जेठ मास अर पखि अंधियार, जाणो दोइज अर रविवार ॥ ४३९ ॥
टीकम तणी वीनती एह, लघु दीरघ सवारि जु लैह।
सुणत कथा होय जु पानि, हु तिनका चरणा कु दास। ४४० ॥
मन धरि कथा एई जो कहै, चद्रहश जेम सुख लहै।
रोग विजोग न व्यापै कोय, मन धार कथा सुणै जो कोय ॥ ४४१ ॥

इति श्री चंद्रहंश कथा संपूर्ण।

लेखनकाल—लिखित रिपि केसाजी पापडदा मध्ये संवत् १७६२ वर्ष मास काति वदि ११ सौमवार दिने कल्याणमस्तु।

प्रति—पत्र ३१। पंक्ति १४। अक्षर २५। साइज ८×६॥।

विशेष—भाषा राजस्थानी मिश्रित है। रचना साधारण है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) जम्बूचरित्र। चेतनविजय (ऋद्धिविजय शिष्य)। सं० १८५२ श्रावण सुदी ३ रविवार। अजीमगंज।

आदि— प्रति प्राप्त न होने से नहीं दिया गया।

अंत—

वाचक पद धारक भए, ऋद्धिविजय गुरु देव।
तिनके शिष चेतनविजय, नहीं ज्ञान का भेद॥ १७॥
श्री गुरु देव दया किया, उपर्जा मन में ज्ञान।
भाषा जंबू चरित की, रचना रची सुजान॥ १८॥
संवत अठारे बाच (वा') ने, श्रावण को है मास।
शुक्ल तीज रविवार को, पूरो ग्रन्थ विलास॥ १९॥
बग देश गंगा निकट, गंज अजीम पवित्र।
श्री चिन्तामणि पासना, देवल रचा विचित्र॥ २०॥
सतरै शिखर सुहावनौ, गुम्टी च्यार सुचंग।
शाभै करश सुवर्ण के, इकट् सरप अभग॥ २१॥
ऊपर चौमुख राजतें, श्री सीमंदर देव
भाव भगति चित लायके, सब जन करत सेव॥ २२॥

(जयचन्द्रजी भंडार)

(६) जम्बू स्वामी की कथा

आदि—

अथ जंबूस्वामी की कथा लिख्यत

एक समै श्री महावीर स्वामी राजगृही नगरे समवसर्या। राजा श्रेणिक वाणी सुणै छै। एता महं एक देवता आयो महाऋद्धवंत। श्री भगवन नै पूछै स्वामी मेरी थिति केती है। भगवंतजी ने कहा सात दिन आऊखा तेरा है। देवता सुण कै आपणै स्थानक पहुँचा। तद श्रेणिक पूछै स्वामी ए देवता कौन है कहा उपजैगा। तद श्री भगवान कह्यो ए देवता जंबूस्वामी का जीव छै हला केवली होयगा।

अंत—

हे श्रेणिक एह जंबुना पांच भवना दृष्टांत संक्षेपे जाणिवा। अनेरा ग्रन्थनि विषइ विस्तार प्रचुर घणो होसी। इहा संक्षेप छ। ए जंबुनुं चरित्र सांभली ने सदहसी ते आराधक जीव कह्या। ए जंबूना अध्ययन न विषै एकविशमो उद्देसम।

इति श्री जंबूस्वामी की कथा सम्पूर्णम्।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ५७ से ७७। पंक्ति ११। अक्षर २७। साईज ८×५॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) **दसकुमार प्रबन्ध** । शिवराम पुरोहित । सं० १७५४ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ मंगलवार ।

आदि—

श्री मम्मेघाभिधानाय मत्प्रशास्त्रे नमाम्यहं ।
गणेशाय सरस्वत्यै कथा–बोधः प्रदीयतां ॥

दूहा — नाम लियै नव निधि सवै, वधै ज्ञान गुन भेव ।
खल खंडन मंडन सुरिधि, विघन विहंडन देव ॥ १ ॥
सकट परे सदा भजे, हरिहर ब्रह्म सुरेस ।
विघन हरन सब सुख करन, वदू वहै गनेस ॥ २ ॥
मेघ नाम गुरु के चरण, शरण गहुं सुख दैन ।
कविता दाता भजन तैं, ध्यान धरै चित चैन ॥ ३ ॥

× × ×

९ वे पद से ६१ पद्य तक बीकानेर के राजाओं की ऐतिहासिक वंशावली एवं वर्णन है। उनमें से कुछ पद्य जो ग्रन्थ और ग्रन्थकर्ता के सम्बन्ध में है, नीचे दिये जाते हैं।

अथ श्रीमतां राठौराभिधानजातीनां महन्महीपालानां वंशवर्णन ।

× × ×

धरा न भूप अनूप सम, सब विधि जाण सुजाण ।
दीन्हो कवि सिवराम कु, सदन वसन धन धान ॥ ५० ॥
वास वसायो नृप नूप, अपने दे सुभ धाम ।
वासी अहिपुर नगर कौ, प्रोहित कवि सिवराम ॥ ५१ ॥
सनि सनेह सिवराम सौं, मरुधरेस महा भूप ।
देख निदेस इहै दयो, अद्भुत कथा अनूप ॥ ५२ ।
बुधि बल नीति सहास रस, सुनत सुखद श्रुति होइ ।
दस कुमार भाषा कथा, यथा विरुच रुचि होइ ॥ ५३ ॥

× × ×

बरस वेद[४] सर[५] सात[७] भू[१], सित पख अगहन मास ।
मंगर वार त्रयोदसी, कथा जनम दिन जास । ६१ ॥

अन्त—

इति श्री मन्महाराजधिराज महा[राज] श्रीमदनूपसिंह नृपाज्ञया प्रोहित सिवराम विरचिते दसकुमारप्रबन्धे एकादस प्रभाव विश्रुतचरितम् संपूर्ण ।

श्लोक

श्रीमदनूपसिंहानामाज्ञया शर्मणे कथा ।
रचिता शिवरामेण शिवरामो व्यलीलिखत् ॥ १ ॥
अनूपसिंहनृपैः श्रवणोत्सुकैः प्रवचनेपि तथैव विचक्षणैः ।
दशकुमारकथा वितथा भवेन्नहि यथा तथा क्रियतां चिर ॥ २ ॥
यद्रूपं मदनो वनौ गत मदो दृष्ट्वाभवत् साम्प्रतम् ।
यत्पादाब्जमवेक्ष्य कच्छपकुल नीरेगमल्लुजिनम् ।
बुद्धि यस्य कुशाग्रभागसदृशी खेचागमदूगीष्पतिः
सोयं श्रीमदनूपसिंह नृपति र्जीव्याच्चिरं भूतले ॥ ३ ॥
सुयशोनूपसिंहानाम् तेजो भूति सुखानि च ।
सन्तु भूपाधिपानां च दान विज्ञान-सालिनाम् ॥

शुभमस्तु श्रीमतां ।
लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।
प्रति—पत्र १७६ । पंक्ति १० । अक्षर १२ । साइज ११ × ५॥ ।
विशेष—दशकुमारचारित नामक संस्कृत ग्रंथ का भाषा पद्यानुवाद ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(९) प्रेमविलास चौपई । जटमल । स० १६९३ भाद्र सुदि ५ रविवार जलालपुर ।

आदि—

दोहा

प्रथम प्रणमि सरसती, गणपति गुण भंडार ।
सुगुर चरण अंभोज नमि, करूं कथा बिसतार ॥ १ ॥
पोतनपुर नामा नगर, इन्द्रपुरी अवतार ।
कोट नदी उत्तग गृह, वनवारी सुखकार ॥ २ ॥

अंत—

प्रेम बिलास सु प्रेमलत, सांच सर (?) नवहथो नेह ।
प्रीत खरी यह जानीये, दीनौ किनूं न छेह ॥ ७ ॥

चौपाई

प्रेम लता की बरनी प्रीता, जटमल गुनत सकल रस रीता ।
सुमति सुरसती सद्गुरु दीनी, सब रस लता कथा सुहि कीनी ॥ ७६ ॥

सोरठा

सब रस लता सुनाउं, मधि सिंगार अरु प्रेम रस।
विरह अधिक पुनि ताम, सुनति अधिक सुख ऊपजै ॥ ७७ ॥

चौपाई

संवत सोलह सै त्रेयानु भाद्रमास सुकल पख जानुं ।
पंचमि चौथ तिथै रुलगना दिन रविवार परम रस मगना ॥७८।

दोहा

सिंध नदी कै कंठ पइ मेवासी चो फेर ।
राजा बली परांक्रमी कोऊ न सक्कै घेर ॥ ७९ ॥

चौपाई

पूरा कोट कटक पुनि पूरा, पर सिरदार गाउ का सूरा ।
ममलत मंत्र बहुत सु जानै, मिले खांन मुलताण पिछानै ॥८०॥

दोहा

सइदा की सहिबाजखां बहरी सिर कलवत्र ।
जानत नाही जेहनी, सब अचान की छत्र ॥८१॥

चौपाई

रईयत बहुत रहत सुराजी, मुसलमान सुखा सनि माजी ।
चोर जार देख्या न सुहावै, बहुत दिलासा लोक वसावै ॥८२॥

दोहा

वसै अडाल जलालपुर, राजा थिरु सहिबाज ।
रईयत सकल वसै सुखी, जब लगि थिर इह राज ॥८३॥

चौपाई

तहाँ वसत जटमल लाहौरी, करनै कथा सुमति तसु दोरी ।
नाहर वंश न कुछ सो जानै, जो सरसति कहे सो आनै ॥८४॥

सोरठा

चतुर पढो चित लाय, सभ रसलता कथा रसिक ।
सुनत परम सुख दाय, श्रोता सुन इह श्रवण दे ॥८५॥

दोहा

सुनहि कथा दुर्जन सजन दुर्जन अवगुन लेह ।
सूकर पायस छाड के मुख बृष्टा कुं देहि ।।८६।।

इति श्री प्रेमविलास प्रेमलता की सबरस लता नाम कथा नाहर जटमल कृता संपूर्णा ।

लिपिकाल - संवत् १८०९ रा वर्षे मिती वैशाख वदी ७ दिने गुरु वा सरे श्री मरोट नगर मध्ये चतर्मासी कृते पं० प्र० श्री १०५ श्री सुखहेमजी गणि शिष्य सरूपचन्द्रेण लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

प्रति—(१) पत्र ८ । पं० १६ । अक्षर ५४ । साइज १०।। × ५ ।

प्रति—(२) पत्र ११ । पंक्ति १४ से १६ । अक्षर ३५ । साईज १० × ४।।। ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) बहलिमां की वार्ता—

आदि—

हो बलिहारी ताजिया जिन्द जाति कही ।
तुरीया खेरत ताटजमरदा मट मही ।। १ ।।
बहली म उपति जेथी काबिल गजनी ।
पहिली बहिली मसरि जिये पीछे टोट उमत्ति ।।

बात—

पाच पैगम्बर उरस मे उतर । वनवान न विषै तपस्या करत थे । सवा पांच मण भाग । पचास मण दूध का । गैब का पेला पक्के । चार पैगम्बर लैटे लैटे दो पहरे उठे ।

अन्त—

ये लखु असवार फोज लें करि काबा गजनी गया । सो वहाँ जाई पातस्याही करी । ये दोनो ही पातसाही जबर हुई । खूब अमल जमाया । बहोत बरस पातस्याही करी । पीछे बीसती कु गय । जदी पछे कहाणी तमाम हुइ ।

दोहा

राणी पला राणी सोर घनी राहिब भाई ।
बात वणाई ख्याती करी चारण घनी चितरग ।।
कोड़ो वरस रहसी वातड़ी कहसी चित मांहे उमंग ।
साल १३३१ की हुआ बलोम पठाण ।
चारण को चित उमगीयो कही बात वखाण ।।

इती श्री बहलीमां की राहिब साहिब की वार्ता संपूर्ण हुवी ।

लेखन संवत्—१९०५ का मिती जेठ सुदी ६ वार बुधवार लिखने नगर सीकरी मांहि। राज महाराजाधिराज श्री रामप्रतापसिंघजी कोड़ी वरस करो।

प्रति— (१) गुटकाकार। पत्र १२ से ५६। पंक्ति १९। अक्षर १२। साईज ७×९।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१०) बुध सागर। जान रं० १६९५

आदि—

अथ बुधसागर ग्रन्थ लिख्यते।

चौपाई

लीजै आदि अगोचर नाम, तो सब पूजै मनसा काम।
अभिगति गति सुर असुर न जांनत, मानस बपुरो कहा बखानत ॥१॥
येक जीभ ताको बस्तु बस ना, हार्यो सेस सहस है रसना।
है अभिगति को जलधि अपार, ताको कोई न पैरन हार।२॥
काहू वाको भेद न पायो, निगम अगम निगमै मैं पायो।
अलख भेद मे मन दौरावै, सो आपुन को निर्बुध पावै॥३।

अन्त—

ये जु कथा तुम सौ कही सकल काहु इक ठांव।
ताकौ ग्रथ बनाइवै धरि बुधिसागर नाव॥चौ० ४५५॥
जब ग्रन्थ ही पढ़ि तुम सब पावहु, तब मोको चित ते न भुलावहु।
ज्यो ज्यो लाभ ग्रन्थ तें लहिये, मेरी सुरति कियेहि रहिये।
बुधिसागर पर जो तुम चलिहौ नीके मान अरनि को मलिहौ॥
बुधिसागर मे जो मन धरिहै, तातैं कबहू चूक न परिहैं॥२॥
दाव सलेम तबहि सिर नायो, सो करिहो जो तुम फरमायो।
विदा होय अपने घर आये, कवि पंडित तब निकट बुलाये।३॥
सब मिल दीनों ग्रन्थ बनाई, रीझ बहुत दीनो कछु राई।
जग मे उपज्या ग्रथ उजागर, माला रत्न नाव बुधिसागर॥४॥
चल्यो ग्रन्थ उपरि करि भाइ तबहि भयो राइन को राइ।
पाछे जिते भये जगु राइ पढ्यो ग्रथ यह हितु चित लाइ॥५॥

दोहा

सोरह सै पंच्यानुवै सवत हौ दिन मान।
अगहन सुदि तेरस हुती ग्रथ कियो कवि जान॥

इति ग्रन्थ बुधिसागर संपूर्ण समप्त (समाप्त)।

लेखन काल— अथ संवत् १७१६ मिती आसौज सुदी १४ वार सोमवार ता० ११ मास मुहरमु स० १०७० पोथी लिखाइत पठनार्थ फतेहचन्द लिखतं भीख देवै। श्रीमाल टाक गोत्र सुभं भवत । श्री

लिखीया बहु रहै, जे रखि जाने कोइ ।

गलमल मीटी होइ ॥

प्रति—पत्र १८३ । पंक्ति १८ । अक्षर २१ । साईज ४॥।×८॥ ।

(अभय जैन पुस्तकालय)

विशेष—इस ग्रन्थ की अन्य एक प्रति दिल्ली के दिगंबर जैन ज्ञानभंडार में है। उसमें अन्त की प्रशस्ति भिन्न प्रकार की है, अत: वह भी नीचे दी जाती है—

दोहा

हांसी ऐसी ठौर है, उत जो रोवनौ जाई ।
इच्छा पूजे सुखित ह्वै हसत विलस घर जाई ॥

चौपाई

पातिसाह को करौ बखांन, साहिजहां दिल्ली सुल्तान ।
दुहु जगत में भयो कबूल, गह्यौ पथ विजसरा रसूल ॥१॥
ऐसो दोनौ ग्यांन इलाह, दोनो जुग जाते पतिसाह ।
इन के वडे जिते ह्व गये, ते सब पातिसाह ही भये ।२।
चिगज तिमर उमर बबर, बहुरि हिमायू साहि अकब्बर ।
पाछे जहांगीर सुलतान, ताकै उपजे साहिजहान ॥३॥
जहाँगीर कीनो तप कौन, साहिजहाँ उपजे जिन भौन ।
साहिजहाँ की सब जग आन, सप्त दीप पर उनका नग आन ॥४॥
पहरत सप्त दीप के ल्याइ, उयां लगि पवन दीप का लाई ।
गर्भा में नर हीरा नाई, गढ़ निरहीन राई राई ॥५

दोहा

पातिसाह सौ नेकु वर, काहू को न बसाय ।
डंड परै सेवा करें, राजा राहा राइ ॥ १ ॥
शास्त्र कियो नव नव कथन मूल शास्त्र मर्याद ।
बुद्धि बडाई पाइये जुगन रहै अपवाद ॥ २ ॥
कियौ शास्त्र कवि जान यह, साहजहाँ की भेट ।
देस देस में विसतरयौ छानौ रह्यो न नेट ॥ ३ ॥
जो लौं तारा चन्द्र रवि, मेरु नदी जल राज ।
ग्रन्थ येह तौ लौ रहे, स्वहित पर हित काज ॥ ४ ॥

प्रभुताई या ग्रन्थ की, जानत चतुर सुजान ।
खोर होइ सो देखि कै, दूरि करो सुग्यांन ॥ ५ ॥

श्री क्यामखानी न्यामत खा कृत ग्रन्थ बुधिसागर समाप्तं ।

सम्वत १८०४ वर्षे चैत्र द्वितीय सुदि ९ बुधिवारे पांडे हरिनारायण लिखापितं वाच(न) र्थी । काष्टा सिंघे माथुर गछे पुहकर गणे हिसार पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री जगतकीर्तिजी विराजमानै । पांडे हरिनारायण वासी फतेपुर का वांसल गोत्र स्वामीजी श्री देवेन्द्रकीर्तिजी का शिष्य पोथी लिखाई श्री जहनावाद मध्ये ॥ इति ॥

(११) मैना का सत्त ।

आदि—

प्रथमहि विनउ सिरजनहारू । अलख अगोचर मया भंडारू ॥
आस तोरी मम बहुत गोसाईं । तोरे डर कापौ करर की नाईं ॥
शत्रु मित्र सब काहू सभारे । भुगत देई काहू न विसारे ॥
फूलि ज रही जगत फुलवारी । जो राता सो चला संभारी ॥
अपने रंग आपु रंग राता । बूझे कौन तुमारी बाता ॥

दोहा

वचन आंखि हमारिया एको चरित न सूझि ।
सोवत सपना देखिया कोउ करै कछु बूझ ॥

अंत—

मैना मालिन नियर बुलाई । धरि झाटा कुटनी निहुराई ॥
मुंड मुडाई कैसे दुर दीने । कारे पारे मुख टीका कीने ॥
गदह पलानी के आन चड़ाई । हाट हाट सब नगर फिराई ॥
जो जैसा करे सु तैसा पावे । इनि बातनि का अनखु न आवे ॥
आगे दिये जो जो रहवाना । को दो बोयें कि लुनिय धाना ॥

दोहा

सत मैना का साधन, थिर राखा करतार ।
कुटनि देस निकारि, कीन्ही गंगा के पार ॥

इति मैना का सत्त समाप्त ।

* लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—गुटकाकार। पत्र ५०॥ से ६७। पंक्ति १३। अक्षर १२।

(अभय जैन ग्रन्थालय वि० गुटका)

विशेष—मालिन ने मैना को सत (शील) से च्युत करने का प्रयत्न किया पर वह अटल रही। बीच में १२ मास का वर्णन है।

(१२) मोजदीन महताब की वात। पत्र ९४।

आदि—

मेहर इरानी पातिस्या खुदादीन तसु नाम।
साहिजादा सिर मोजदीन मीनकेत के धाम॥ १॥
भया अठारह वर्ष का लगा इश्क के राह।
सहिजादा सिर उपरै संक न मानें साह॥ २॥

अंत—

मोजदीन के वास मैं हुरम तीनसौ साठ।
ता ऊपर महिताब का बडा अमेरा थाट॥९३॥
मरदी कबहु न कीजीयै पर महिरी से प्रीत।
जो कोइ करो तो कीजीयो मोजदीन की रीत॥९४॥

इति मोजदीन महताब की वात संपूर्ण।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ८। (लच्छीराम यति संग्रह)

(प्रतिलिपि हमारे संग्रह में)

(१३) राधा मिलन—

आदि—

श्री राधा मिलन लिख्यते।

श्री किसन लीला। श्री वृन्दावन विहार जानि उजैनि को वास छोड़ि सुवा दीपन रसीस्वर की माता श्री पूरणमासि जु वृन्दावन मे वास करन कुं आई। पोतो एक साथ लै आई। ताको नाम मधु मगल है। सो श्री किसनजी को गुवाल भयो है। सो श्री किसनजी के संग फिरे।

अंत—

तब उनकी मा (ता) कीरति ने पुचकारि छाती सौ लगाइ लई। अरु कहन लागी बेटी तोकौं अवार बोहत भई है। तु रसोई जीमि लै भोजन सीरो होइ गयो है। तब

भोजन कर्‍या बीरी खाई सखिनी मिलि खेलनि लागि। और मुखरा अपने घर गई। अरु श्री किसनजी वन विहार करते (करते) सखा व गउवन सहित आपने घरकुं सिधारे।

इति श्री वृन्दावन माधव की कथा श्री माधौ श्री राधा विलास रास क्रीडा विनोद सहित चतुर्थ अंक समाप्तं शुभं। श्री राधा किसन प्रीति से चारि बारि मिल्या।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ३२। पंक्ति २०। अक्षर १८। ६॥×९॥।

विशेष—इसकी चार प्रतियें हैं। रूपावती वाले गुटके में भी यह ग्रन्थ है। उसके आदि में ५ दोहे हैं व अन्त भिन्न प्रकार का है।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१४) रूपावती। सं० १६५७।

आदि—

जबुद्दीप देस तहां बागर, नगर फतेपुर नगरां नागर।
आसि पासि तहां सोरठ मारू भाषा भली भाव फुनि रू।
राजा तहां अलफखां जनाहु चहव न हठा का पहिचानहु।
ताकर कटक न आवै पारा समद हिलोरनि ज्यों अधिकारा।
तुरक त मकि चढे केकाना नगर गर नगर मु परे भगाना।
राजपूत असि चढ़ि करि कोपहु रविरथ थके गिमनि कौ लोपहु॥ १॥

दोहा

ता घरि पूत सुलछनां, मन मोहन सुर ज्ञान।
चिरंजीव दिनपति उदो दूलह दोलति खांन।

चौपाइ

अलपखांन चहुवान की सरभरी कौ करि सकै न देख्यौ कर भरी।
इह विधि कीयो आप वखार करम जोनि ज्यौ दिपै लिलार।
इन्द्र की सभा सुनी हम कांनि परतखि देखौ इन्ह पहचांनि।
जास्यो रभ शो नो निधि पावै जहिस्यो विशि सो मूल गवावै।
दीनदार दया असि कीनो हजरति कह्यो मुशिर धरि लीनु।
ता ढिगि सेरखांन निरा सोहे दीनदार अरु सभात विमोहे।
सारदुल अरु संघ विराजै गुजै साल शिवाली भाजै।

दोहा

ताहि हजीर माहिबखा औरहखांन उदील।
एक ही एक समगल बैठे कारह सवील॥ २॥

तहिका राज महि कथा उतारी, जहां लो बुधि परईश हमारी।
जे है गये अवह के कविजन, तिन्ह गुन चुर कहै मै सब जन।
इन स्यौं कछु अधिक नहीं आई, जहां तुरै तहां लेहु बनाई।
चोरि चोरि अछर सब जोरे काठौ खोर जै सबे बिखोरे।
शाम्र अक्षिर वेह आर्गा अ दीसत हे पासि लगीनी।

दोहा

सन हजार निवोतरै रबील आखरि मास।
सवत सोलह सतपनै हम कीनी बुधि परकास।।

अंत—

कुंडलियां

जो वह चाहै सो करै आदि पुरुष करता व दाम नु किसही दीजिये। कुरे कहन कहाव कुंडल।। कुरे कहन कहाव, पाव अन्तर गुन ज्यान्ह।

लेखन काल—सं० १७५४ वर्षे फागुण मासे कृष्ण तिथौ तृतीया बुधवासरे शुभं भवतु। पद्य १९५।

प्रति—पत्र ५२। पंक्ति २१। अक्षर १६। साइज ६ × १०।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१५) लैला मजनूं की वात। पद्य ६५९। कवि जान।

आदि—

प्रथम चित्त सों लीजिये, अलख अगोचर नाम।
सुमिरत हीं कवि जांन कहि, पूजै मनसा काम।। १ ।।
साहिजहां जुग जुग जीयो, जिह हजरत सौं हेत।
जोई ईच्छा जीव की, सोइ करता दान ।।२६।।

अंत—

पेम नेम जाग्यौं नहीं, ते निहचै पसु आहि।
सो मानस कवि जान कहि, जिह करता की चाहि ।।५८।।
लैलै मजनूं वांचिकै पैमु वढयो मन जांन।
थोरे दिन में ग्रन्थ यह, बांध्यौ बुधि परवीन ।।५६।।

इति लैले मजनूं ग्रन्थ कवि जांन कृत संपूर्ण।

लेखन काल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—गुटकाकार। पत्र ५७। पंक्ति २१। अक्षर १४। साईज ६ × १०।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१६) लैलै मजनू री वात

आदि—

श्री गणेशायनमः । अथ लैलै मजनूरी वात लिख्यंते ।

संवरकन्द विलायत । तहां माहि जुलम पातस्याही करै । तहां विलायत ऐसी, जिसकी कौन तारीफ करै । बहुत ही जो इसकी विलाइत ये नीसृ बिस । जो कहां तांई तारीफ करिये ।

दोहा

देख्या समर सुहांवनो, अधिक सुरंगा लोग ।
नारी नैण सुहांवणी, पांन फूलदा भोग ॥ १ ॥

अन्त—

ऐसा प्यार दोनों का निवह्या है । जैसा सबही का निवहो । जिसकी आसकी लगै । जिसकी ऐसी निर्वहियां । तिस बीच बहुतही निवाहीयां ।

दोहा

लैलै मजनूं नेह था, तैसा सब का होय ।
अखिया की अखिया लगी, निरवाही नहि कोय ॥ १ ॥

इति लैलै-मजनूंरी वात समाप्ता ।

लेखन—सं १९२० मासानुमासे माघ मासे कृष्ण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ अमावस्यां सूर्यवासरे । लिपिकृत्वा आत्मारामेण ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ४६ । पंक्ति १३ । अक्षर १६ । साईज ७×७ ।

एक अन्य प्रति भी है ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१७) विक्रम पंच दण्ड चौपाई । मुनिमाल । १७ वीं शती ।

आदि—

शान्ति जिनेसर पय नमी, विक्रम चरित उदार ।
पच दण्ड छत्रह तणी, कथा कहूँ शुभकार ॥ १ ॥
आगति थोडी खरच बहु, जिम धरि दासै एम ।
तिस कुटुम्ब का माल कहि, महिमा रहसी केम ॥ २६ ॥

अन्त—

जिण अन्धारेउ मेटि दानि प्रगट जगि जायउ ।
तातें विक्रमादित्य, सांचउ नाम कहायउ ॥

देई सर्व आशीस, जगति जिके नरनारी।
शशि रवि लगु थिर त (र) हो, श्री विक्रम उपगारी ॥

लेखन काल—सं १७४८।

प्रति—पत्र ३०। पंक्ति १६। अक्षर ४०।

(गोविंद पुस्तकालय)

(१८) बीरबल पातसाह की वात।

मध्य

पातसाह तेमूर समरकन्द की फतह करी तहां एक अन्धी लुगाई कैद मे आई। पातसाह पूछी तेरा नाम क्या है। लुगाई कही मेरा नाम धौलति है। पातसाह कही धौलति भी आन्धी होती है। लुगाई कही धौलति अन्धी न होती तो तुम सरीखे लंगड़े की घर में क्यूं आवति।

प्रति— गुटकाकार। पत्र १८ से ४५। पंक्ति १२। अक्षर ५०। साईज ८।×६।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१९) वैताल पचीसी। भगत दास।

आदि—

गुरू गनेश के चरन मनावौ। देवी सरस्वती के ध्यावौ।
अकबर पातीसाह होत जहिआ। कथा अनुसार किन्ह मैं नहिआ॥
सुरा पानी न सुनीए काना। परबत अमन सीन्धु सब माना।
अचल इन्द्र सम भु जै राजा। तखत आगरा मोकाम भल छाजा॥ १॥

× × ×

अस्थल अकबरपुर वासा। बहुत सन्त तांहां करै निवासा।

× × ×

तेही पुर है कवि जन के वासा। हरि की कथा सदा परगासा॥
बरन काहू नाहा राघौ दास। तीन्ह के पुत्र कथा परगासा।

अंत—

दासन्ह को दास भगत मोही नाउ, हरिके चरन सदा गीत भाउं।
बरना काहु है लघुना गाती, हरि जस कथा कीन्ह बहु भाती।

× × ×

दुनौ बीर सब नाउ कराहे, देवी बीर तब आह।
देई वर नृप वीक्रम कह, अस्तुती करत पुनि आह।

इति वैतालपचीसी विक्रमचरित्रे भगतदास विरचिते । कथा पचीस समाप्त ।
लेखन काल—१८ वीं शताब्दी ।
प्रति - पत्र ४८ । पंक्ति २ । अक्षर ४२ से ४५ । साईज १०। × ५ ।
विशेष—प्रति बहुत अशुद्ध है ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२०) शनिसरजी री कथा । विजयराम ।

आदि—

श्री गुरु श(च)रण सरोज नमो, गणपत गुण नायक ।
नमो शारदा मगन विगत, वाणी सुख दायक ॥
नमो राधका रवन, नमो पारबती प्यारा ।
नमो वीर बजरंग, लाल लंगोटे वारा ॥
सुर गुरु मुनि अरु सत जन, सब के प्रणमु पाय ।
रचुं कथा रविपुत्र की, मोय सुध बुध देहो सहाय ॥ १॥
व्यास पुत्र शुखदेव नमो, सद ग्रन्थ सुणायो ।
बालमीक मुनि नमो, बडो हरि चरित्र बणायो ॥
नमो सूरदा सन, कृष्ण को कीरत गाई ।
तुलछी तिनकु नमो, वनें पुत्रका वणाई ॥
केशव नरहर और कवि, जा घर प्रभु की जोत
विजैराम वरणन किया, मन बुध निर्मल होत ॥ २ ॥

अंत

कुंडलिया—

आशायत दुर्गेश की गादी बैठक गाम ।
लूणी कोठे वसत है, समदरडी सो नाम
स्याम रो स्याम विराजै ।
चरण कमल की सेवा सदा विजैराम साजै
कविजन किरपा करी, सुख सोनग अरु व्यासा
बाल्मीक जे देव, सूर तुलसी विसवासा
सबै सत सिरपर वस्या, उरे विराजो श्याम
कथा रसक रवि पुत्र की वरण करी विजैराम ॥१५॥
आद अत दोहु अक, बाहु पर बिंदु आई
जोम घडी कुं जोड, समत के वरष गिणाई
रवि चढयो तुलरास रवि सुतवार विराजै
सौ षोडस उस कला संयुक्त राकापति ऊपर राजै

तिण दिवस कथा तीजै पहुर प्रीत जुगत पूरण करी
बात विक्रमादीत की, विध विध कीरत विस्तरी ॥ १५९॥

प्रति—गुटकाकार (राव गोपालसिंहजी वैद के संग्रह मे)

(२१) श्रीमाल रास । सं० १९२४ काती वदि १३ भृगु ।

आदि—

ॐ ह्रीं नमः सिद्धेभ्यः । अथ श्रीपाल रासो लिख्यते ।
श्री जिन गुरु परनाम करि हिय थापि जिन वान
सिरी पाल मैना तनो कछुयक करा बखान ॥ १ ॥

जंबू भारत खेत नगर चपापुर माहि,
नृप अरदमन कुमार नाम श्रीपाल कहाहि ।
अति उदार अति सूर कोट वलभर भुज सज्जै,
बहु गुन कला निवास देख रिपु भय गहि भज्जै ।

अन—

वेद नयन निधि चद राय विक्रम सवत्सर
कार्तिक पक्ष असेत त्रयोदश भृगु वासर वर ।
उत्तरा फाल्गुण नखत अक तुल लग्न वृछा कौ ।
मध्य समापति कियौ पढौ पढावौ सुनौ नित
भावौ वारवार नर सुर के सुख भोग कै छिप्र हाउ भवपार ॥ २९ ॥

इति श्रीपाल रासौ समाप्तं । शुभ समतसर मिती मार्गशिर्ष वदि १२ ।

लेखन—संवत १९२५ शुभवंत । लिख्यत पटन कालीचरन ब्राह्मन कान (कुब्ज) जैनी नैकोलमध्ये मोहल्ला छिपैटी लिखाइ भरपाइ लिखवाई लाला गोकलचंद नै हाथरस के वासी नै पठनार्थे शुभ भवतु कल्याण मस्तु ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ४७ । पंक्ति ७ । अक्षर २१ । साईज ७। × ४॥ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) सनि कथा । पद्य ५७७ । गणपति । सं० १८२६ वसंत पंचमी बुध बागौर ।

आदि— अथ सनि चरित्र लिख्यते ।

दूहा—

श्री वृन्दावन चंद्र को ध्यान गणपति धार ।
पीछे श्री सनिदेव की कहिहु कथा विस्तार ॥ १ ॥
बल्लभ सुत वीठल विरुद्ध करे वर्णन जो कोय ।
सिद्ध गणपति गुण मथन तें नवग्रह सन्मुख होय ॥

अंत—

ग्रन्थ उत्पत कथन

राव श्री जसवन्त, तासु सुभगां अन्तेवर
कला सिन्धु करणोत, नाम तिहि सरस कुंवरि वर ।। ३२ ।।
विक्रम रवि सुत भ्रात, दिव्य पुस्तक लिख दीनी ।
ता पर कवि गणपत्य, त्रित्ति सदमत्ति सु चिन्ही ।। ३३ ।।
ब्रज पध्यति भाषा विमल, आपे छद वर हकित की ।
विविध भांति मेटण व्यथा, कथा कथी सनी चरित्र की ।। ३४ ।।

छप्पय

सांगावत जसवन्त, भवन अन्तेवर भारिय ।
राजावत कुल रूप, ओप ईसरदा वारिय ।।
अमरि कुंवरि गुण अवधि, प्रेम मति भगति परायण ।
सत गुरु गणपति दास, पास मे अरज सुभायण ।।
आंबेर नाथ अरधग वर, कुंदण बाई वत कही ।
ता ऊपरि सनि चरित की, भूरि कथा सुंदर भई ।। ३५ ।।

दूहा

संवत अष्टादस जु सत छावीसा वरसानि ।
वसंत पंचमी बार बुध, पूरण ग्रथ प्रमाण ।। ३६ ।।

कवित्त

समत सत नव दून, वरस छावीस बखानं ।
बुधि सुदि माल बसन्त पंचमि तिथि परमानं ।
मेदपाट धर मांहि नग्र वागोर नवे निधि ।
मंदिर श्री गिरिधरन रीति कुल वल्लभ की विधि
गुर्जरा गौर मुग निति दुज, सुरतान देव सुत सूरत की
कवि गणपति लीला कथी, कथा सुभग सनि चरित्र की ।। ३७ ।।

दूहा

अमर नगर वर उदयपुर अटल कृपा इगलिंग ।
पति हिन्दू चित्रकोटि पति राण तपे अडसिंघ ।। ३८ ।।

कवित्त

श्रवण सुनि हि सनि चरित, प्रेम धारिय निज पाणी को ।
पढहि कण्ठ निति पाठ, सरब दुख हरहि सदन को ।
नृप दशरथ कृति नवन बहुरि विक्रम वर दायक ।
धीर विदुध चिति धरहि दिव्य रिधि सिधि के दायक ।।

कहि गणपति हरिवंस कथन, प्रगट पुण्य बल पाजकी।
ह्वै ता ऊमर सदी विधू कृपा ब्रजराज की॥ ३९॥

इति श्री सनिचरित लीलायां विक्रमादित्य अवन्तिका पुरी प्रवेश निज स्थान प्राप्ति राज्य प्राप्ति वर्णनम् पंचमो उल्लास संपूर्णम्।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—(१) गुटकाकार। पत्र २६। पंक्ति २१। अक्षर १३। साइज ६॥×८॥

चिपकने से कुछ पाठ नष्ट हो गया है।

प्रति—(२) गुटकाकार। पत्र १७। पंक्ति १६। अक्षर २९। साइज ७॥×५॥

विशेष—ग्रन्थ मे ५ उल्लास हैं पद्य ४६—४४—१०७—४१—३९=२७७ हैं।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२३) ज्ञान दीप। पत्र ८६०। कवि जान। सं० १६८६ वैशाख कृष्णा १२।

आदि— अथ ज्ञान दीप ग्रंथ कवि जान कृत लिख्यते

प्रथम जपवै नांव जगदीस, ज्यों प्रगटै बुधि बिसवा बीस।
कर्ता भेद न बरने जांहि, ना कछु आवतु है बुधि मांहि॥ १॥
जो कछु है धरनी आकास, रचनहार सबकौ अविनास।
मानस आपहि ना पहिचानत, करता की गति कैसें जानत॥ १॥

× ×

साहिजहां साहन मन सांह, जगपर साहिब कीयौ इलाह।
जंबूदीप दीपनि मैं दीप, छहु मुगता रलवै षट सीप॥
मानत है दूरी लौं आंन, जस प्रगट्यो जग साहि जहांन।
साहिजहां सम आज न कोइ, पाछैं भयौ न आगें होइ॥
जहांगीर छत्रपति है दाता, तो ऐसौ सुत दयौ विधाता।
जाकौ दादौ साहि अकब्बर, कौंन जु जासौं करै तकब्बर॥
खुरासांनि कां पठवे माल, रोम सांम के देहि रसाल।
मानत हैं सांतों इकलीम, कर जोरे करिहैं तसलीम॥
रहौ चिरंजीव कहि जांन, कोटि बरस लौं साहिजहांन।
कक्ष मोहि बुधि को परवांन, साहिजहां जस करौं बखांन॥
सुनहु कांन दे सब ससार, ज्ञान दीप कौ करो विचार।
जामैं ज्ञान होइ सो मांनत, दीप ज्ञान याकों परि जानत॥
पढ़ै याहि आवतु है ज्ञान, तातैं भाख्यो दीपग ज्ञान।
यामैं तो बात बहु राम, सब काहू के आवै काम॥
सुनि सुनि जगत सयानों होइ, सीखगौई जनमत ना कोइ।

× × ×

ज्ञान दीप कवि जांन कहि, कीने हित चित लाइ।
सीखजु ग्रंथन में हुती, कथा सकल सुखदाइ ॥

अंत —

संवत सोलह सै जु छयासी, जांन कवी यह बुधि परकासी।
तिथि बारस बदिहि बैसाख, इस दिन मांहि सुनाई भाख ॥
बुधि परवांन सुनाई गाइ, खोर दूर करि लेहु बनाइ ॥

× × ×

सिधि निधि घर में बहु भई, आप सम्हारे काम।
राज कियौ तेसठ बरस, सुख रस सौं बहराम ॥
सुख रस सौं बहराम, जांम आठों बीतत है।

× × ×

रूम चीन अरु मारली, बहु बिध आवी रिधि।
आप संभारे तें भई, घर मे यौं नौ निध सिधि ॥१॥

इति श्री कवि जांन कृत ज्ञानदीप संपूर्ण।

लेखन-काल-संवत् १८९२ मिति चैत्र सुदि १२ दिने लिखितं प्रतिरियं लक्ष्मीचंद पतिना नवहर मध्य चिरं सखतसिंध पठनार्थे न करे।

प्रति—(१) पत्र २३। पंक्ति १५। अक्षर २४०। (जिन चारित्र सूरिज्ञान भंडार)

(२) पत्र १६। (जयचन्द्रजी भंडार)

(झ) ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ

(१) अमर बतीसी । पद्य ३९ । हरीदास । स० १७०१ आसू सुदि १५ ।

आदि—

प्रथम मनाइ देवी सारदा कौ सेव करूं, दूसरे गणेस देव पाइ नाइ सीसजू ।
हरीदास आन कविराइ के पासाइ बधि, अखिर उकति जैसी बदतु कवीसज ।
साहि दरबारि महाराजा गजसाहि तनै, कीयौ गज गाहु कमधजन के ईसजू ।
ताको जस जानि कछु मेरी मति सारू कहुं, अमर बतीसी के सवईया बतीसजू । १ ।

अंत—

सत्रै मै इकोतरा, आसू पूरन मासि ।
सर्वी अर्वा सरसती, कथा कवि हरदासी । ३७ ।
अमर बत्तीसी अमर की, कही सुकवि हरदास ।
कूरनि कौ न सुहाइ है, सूरनि के मन हास । ३८ ।
न्यारी दहुथ कवित इक, सवईये प्रथम बत्तीस ।
अमर बत्तीसी के कहे, कवि रूपक सैतीस । ३९ ।

इति श्री कवि हरदास विरचितं अमर बत्तीसी सपूर्ण ।

लेखन-काल-संवत् १७०४ वर्ष फागुण वदि ५ दिने लिखित पं० मानहर्षमुनिना दहीरवास मध्ये ।

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १८ । अक्षर ६६ । साईज १० × ५ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) कवीन्द्र चन्द्रिका । सुखदेव आदि अनेक कवि ।

आदि—

श्री गनपति गुरु सारदा, तीन्यौं मानि मनाइ ।
मनसा वाचा करमणा, लिखौ कवित्त बनाइ ॥ १ ॥

कासी और प्रयाग की, कर की पकर मिटाइ ।
सबहि को सब सुख दियें, श्री कवींद्र जग आइ ॥ २ ॥
सकल देस के कविनि मिलि, कीन्हे कवित्त अपार ।
श्री कवीद्र कीरति करन तिनमैं लीने सार ॥ ३ ॥
श्री कवीन्द्र द्विज राज की लखहु चन्द्रिका ज्योति ।
दुनी गुनी के दुख दहति, दिन दिन दूनी होति ॥ ४ ॥
पहिले गोदा तीर निवासी, पाछे आइ बसे श्री कासी ।
ऋगुवेदी असुलायन साखा तिनको ग्रन्थु भयो है भाषा ॥ ५ ॥
सब विषयनि सों भयो उदास, बालपना मैं लयो सन्यास ॥
उनि सब विद्या पढी पढाई, विद्यानिधि सु कवीन्द्र गुसाई । ६ ॥

सवैया

तीरथि सबै अन्हाइ गाइ नसताई, आइ कीन्हो काजु आजु देखौ कैसौ सुरसरी को ।
वहै सुखदेव सुर नर मुनि दस नाम धन्य धन्य कहै जैत वार वाजी अरी को ।
नवौ खड दसौं दिसि दीप दीप में सुजसु सारभयो जग मैं गहै याकोनु छरी को ।
कवि इन्द सरस्वती विद्या वृद्धि महावर करयौ छुडायो ज्यौं छुडायो कर करीको ॥

अत—

जगत सरभयो धर्म, जलपूरी रह्यो, तामैं कमल कवि इन्द सोहै ।
भक्ति पत्र ज्ञान बीच कोस जय किजल्क सील रस मोहै ।
सब को बधन तीरथ मे, तीरथ को बधन काटो सोहू सुवास उपमा कों कोहै ।
श्याम राम बानी वर कहै निसि दिन प्रफुल्लित याते जु हरि रवि जोहै ॥

शुभ भूयात् । श्लोक संख्या ४२५१ ।

विशेष—इसमें निम्नोक्त कवियों की कविताओं का संग्रह है—सुखदेव रचित पद्य ४, नन्दलाल १, भीख २, पंडितराम १, रामचन्द्र १, कविराज ४, धर्मेश्वर २+१, कस्यापि १, हीरारास २, रघुनाथ कवि १, विश्वंभर मैथिल १, धर्मेश्वर १, शंकरो पाध्याय १, रघुनाथ की स्त्री ३, भैरव २, सीतापति त्रिपाठी पुत्र मणिकंठ २, मनराय१, कस्यापि १२, गोपाल त्रिपाठी पुत्र मणिकंठ १, विश्वनाथ जीवन १, नाना कवि १०, चिन्तामणि १७, देवराम २, कुलमणि १, त्वरित कविराज २, गोविन्द भट्ट २, जयराम ५, गोविंद २, वंशीधर १, गोपीनाथ १, यादवराम १, जगतराय १, राम कवि की स्त्री ३ ।

लेखन-काल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १९ । पंक्ति ८ । अक्षर ४५ से ५० । साइज १२×५॥ ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२) इसकी एक अपूर्ण प्रति महिमा भक्ति जैन ज्ञान भंडार में है जिसकी प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय मे है।

(३) कायम रासा (दीवान अलिफखान रासा)। जान।

आदि—

रासा श्री दीवान अलिफखां का दोहा ॥

सिरजन हार बखांनिहै, जिन सिरज्यौं संसार।
खंभू गिरतर जल पवन, नर पस पंछी अपार।१।
एक जात ते जात बहु, कीनी है जग मांहि।
अनत गोत कवि जान करि, गनति आवत नांहि।२।
दीम महमंद उचरौ, जाके हित के काज।
कहत जान करतार यहु, साज्यो है सब साज।३।
कहत जांन अब बरनिहैं, अलिफखांन की जात।
पिना जान बढि ना कहौं, भाग्वो साची बात।४।
अलिफखांनु दीवान को, बहुत बडो है गोत।
चाहुवान की जाडा कौ, और न जगमे होत।५।
अलिफखांन के वंस मै, भये बडे राजान।
कहत जान कछु ये कहे, सब को करौ बखान।६।

अंत—

पूत पिता को देखिकैं, बाढत है अनुराग।
कहत खान सरदारखा, कोट बरष की आग।

इति रासा सपूर्ण।

लेखन काल—१८ वी शताब्दी।

प्रति—पत्र ७० । पंक्ति १५ से १७ । अक्षर १८ । साइज ५॥। × ८॥। ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम कवि ने लेखक के लेखानुसार "रासा दिवान अलिफखां का" रखा होगा। इसमे अलिफखां की पूर्व परम्परा प्रासंगिक रूप से देकर अलिफखां का विस्तार से वर्णन है। और जैसा कि ग्रन्थ के मध्य के निम्नोक्त दोहे से स्पष्ट है ग्रन्थ सं० १६९१ मे समाप्त कर दिया गया था पर कवि उसके बाद भी लम्बे अरसे तक जीवित रहा अत. पीछे के वंशजो का भी हाल देना उचित समझ कर उसने पीछे का हिस्सा रच कर ग्रन्थ की पूर्त्ति की।

यथा—

सोरह सै इक्यानुवें, ग्रन्थ क्यौ इहु जांन।
कवित पुरातंन मै सुन्यो, तिह बिध कयौ बखान।

पूर्ति—

दौलतखां दीवन कौं, अब हौं करौं बखांन।
तेग त्याग निकलंक है, जानत सकल जिहान।

जान कवि बहुत बडा कवि होगया है। इसके ७० ग्रन्थों का संग्रह हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, के संग्रहालय मे पहुँचा है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(४) जसवन्त उद्योत (जसवन्त विलास) पद्य ७२० । दलपति मिश्र ।
सं० १७०५ आषाढ सुदी ३ । जहांनाबाद ।

आदि—

अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवन्तसिंहजी को ग्रन्थ मिश्र दलपति कौ कह्यौ लिख्यते।

दोहा

प्रथम मंगला चरन, देव चरन चित्त लाइ ।
गनपति गिरा गिरीस कौ, विनती कही बनाइ ॥ १ ॥

× × ×

अथ कवि वंस वर्णनं—

अकबरपुर अनुपम सहरु, बसे सुरसरी तीर ।
चारो वर्ण रहैं जहां धर्म धुरंधर धीर ॥ ५ ॥
दीप मिश्र माथुर तिहा, सदा कर्म षट लीन ।
साधु सिरोमणि शील निधि, पंडित परम प्रवीन ॥ ६ ॥
तिन पुनि राम नरेस ढिग, कियौ कछु दिन बासु ।
पाठे नृप कोविद धरनि, जगमगातु जसु आसु ॥ ७ ॥
सदाचार गुन गन निपुन, तासु तनय सिवराम ।
तिनके सुत तुलसी भए सकल धरम के धाम ॥ ८ ॥
तुलसी सुत दलपति सु कवि, सकल देव द्विज दासु ।
तिन वरन्यौ बल बुद्धि सौं, श्री जसवन्त विलासु ॥ ९ ॥
पांच अधिक सत्रह सई, संवत को परिमांनु ।
ग्रीष्म रीति आषाढ सुदि, तीज वार हिम भानु ॥१०॥
नगर जहांनाबाद जहां, रच्यँ चकतां भूप ।
तहां दलपति जसवन्त की, पोथी रची अनूप ॥११॥
नगर जहांनाबाद कौ, वरनन कर्‌यौ बनाइ ।
जहां नृपति जसवन्त कहं, मिलयौ कवीसुर आइ ॥१२॥

अन्त—

> जो जसवन्त उदोत कहँ, सुनै श्रवन चितु लाइ।
> तिहि मानौ हरिवंश की, पोथी सुनी बनाइ ॥१८॥
> कछुक वंस वरण्यो प्रथ (म) विष्नु पुरानहि मांनि।
> करनि साठि नरिन्द की, वरनो लोक कथांनि ॥१९॥
> लोक वेद बुधि जन सकल, कहत एकही रीति।
> यह विचारि या ग्रन्थ महँ, मानहु परम प्रतीति ॥२०॥

इति श्री तुलसीरांम सुत दलपति कवि विरचते जसवन्त उदोते वंसावली प्रकरनो संपूर्ण। शुभं भवतु। श्री।

लेखनकाल—सं० १७४१ रा मार्गसिर व० १४ वार भोम दिने लिखंते मेड़ता नगर मध्ये लिखत चुरा महीधर पोथी ब्रा० चुरा महीधर छै शुभ भवतु।

प्रति—पत्र ४०। पंक्ति २७ से २९। अक्षर २८। साईज ७×९॥

विशेष—ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्व का है।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(५) दिल्ली-राज वंशावलि। पत्र ११९। कल्ह। (जहांगीर के राज्य में)

आदि—

> इकवार होइ प्रसून नारी, कृपा राखी ईस।
> पाप को नाम न जाणीयइ, तह पुन्य विश्वे वीस।
> राजान ब्राह्मण अवर कोइ, करइ नाही रीस।
> राजान हूवइ सुरवसी, पृथ्वी मांहि पृथीस।

अन्त—

> तोरे गगण अम्बरत चंद सरस संवच्छर जायो।
> आदिन वार कहैं कल्ह कातिक वदि प्रतिपदा।
> सघर ध्रुव जोग जांणि शुभ पंजाब को सुगर।
> नगर लाहोर कोट थिर नृप जाहगीर साह अकबर सुतन।
> साह हमाऊ वंस वर जहांगीर महमद को सुजस आणद कर ॥ १९ ॥

इति वंसावली संपूर्ण।

लेखन-काल—पं० दानचंद्र लिखितं श्री नवलखी ग्रामे सं० १७३९ व० कार्तिक बदि ३ दिने।

(बृहद् ज्ञान भण्डार, प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) दिल्ली राज-वंशावली। किशनदास। औरंगजेब के राज्य में।

आदि—

ॐ नमः । अथ राजावली लिख्यते ॥

ॐकार का ध्यान लगाओ, शिव सुत चरन आनि मन लावौ।
समरै आदि भवानी भाई, गुरु किरपा तै या बुद्धि पाई।
दिल्ली पति जो राजा भए, तिन भूपति के नामु गिनए।
प्रथ मे क्रत जुग हरि प्रगटीया, चारि अवतारि वपु धरि आया॥

अंत—

औरंग जेब साह आलमगीर सम जग सिरताज।
जिस वंश्या डंका धर्म का, त्रय लोक मैं अवाज।
कवि महाराजा जु भनै, किशनदास करै आसीस।
तुम राज सुथिर करौ जुग जुग लाख बीस पचीस।
यथा जुगतै बुद्धि आई, तथा अछर कीन।
जहां हीन होइ सो सवारि पजो दोष मुझै न दीन।

विशेष—इस ग्रन्थ मे द्वापुर युग सोमवंश वर्णन मे लगाकर अकबर तक का वर्णन उपरोक्त कल्ह रचित वंशावली में ज्यों का त्यों उठाकर रख दिया गया है।

(बृहद् ज्ञान भंडार, प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) दीवान अलिफखां की पैड़ी। जान कवि।

आदि—

श्री अलिफ खां की पैड़ी लिखते।

पहलैं अलाह सुमिरियें, जिन्ह सुभर उपाया।
बीन जिलांवण कारणे, रखे नहीं काया।
माणस दे सारे नहीं, सो कर सुभाया।
सोई जिन्ने जांन कहि, जिस बोड खुदाया।

अन्त—

सोलहसै इकईस मैं जनमे दावाणा।
कीये उजले क्यामखा चके चौहाणा।
सवत हुवा तिरानिया लेखै परवाण।
वैकुंठ पहुंचे अलिफ खा कहु दीया जांण।

इति श्री दीवांन अलिखा जी की पैड़ी संपूर्णा। समाप्ता।

लेखन—अथ सं (व) त १७१६ मिर्ती कातिक वदि ११ सनीसर वार ता० २३ महुरंम सं० १०७० लिखिइतं पठनार्थं फतैहचंद लिखतं भीखा।

प्रति—पत्र १४। पंक्ति १५-१६। अक्षर १५। साइज़ ५।।। × ८।।।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) पंवार वंश दर्पण। पत्र ३०। दयालदास सिंढाय।

आदि —

वीणा धारद कर विमल, भव नारद सुरभाय।
हंसारुढ दारद हरो, शारद करो सहाय ॥१॥
धार उजयनी के अधिप, जिनह वीर वर जान।
कहूँ सार आचार कृत, वंश पवार बखान ॥२॥

अन्त—

अनल कुंड उत्पन्न कोप क्षत्रिय वशिष्ट किय।
अरबुद धार उजीय देव सुरथान राज दिय।
पिंड शत्रुन किप प्रलय, कोम परमार कहाये।
पुनि वाराह पुराण गिरा श्रुति व्यास जु गाये।
जिण कुल अजीत लोभी, सुजस सुभट सिद्ध अवसा० रो।
अनकल विरद परियां हता ख्यातण सुजस खुमाण रो ।२५।

लेखन—इति श्री परमार वंश दर्पण मि (ढा) पच दयालदास खेतसीयोत गांव कुविये के निवासी ने बनाय संपूर्ण हुआ। ठाकुरा राज श्री अजीतसिंहजी खुमाणसिहोत गांव नारसैर ठाकुरों की आज्ञा से बनाया। पंवारों की पीडिया एक सो बतीस की उदारता वीरता का वर्णन कीया मिति पोष कृष्ण ३ संवत् १९२१ का (इसके बाद विस्तृत नामावलि है)

विशेष—इसमे २५ छप्पय और ५० दोहे है।

(भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, प्रतिलिपि–अभय जैन ग्रन्थालय)

(ञ) नगर-वर्णन

(१) आगरा गजल । पत्र ९४ । लक्ष्मीचंद । सं० १७८० आषाढ़ शुक्ला १३ ।

आदि—

सरसती मात सुभावनी क, देहो दास कुं जानी क ।
अकबराबाद की टुक आज, उतपति कहत है कविराज ॥१॥
अकबर साहजी गुणधाम, रमते निकले इह ठाम ।
इहांइ एक देखया खासा क, अकबर साह तमासा क ॥२ ।
गीदर सेर कुं झीले क, ठाडे पातिसाह भाले क ।
हजरत लोक कु ऐसी क, पूछे बात ऐसे की क ॥३॥

अन्त —

अकबराबाद है ऐसा क, लखियै इन्द्रपुर तैसा क ।
सब गुन सहर है भरपूर, देखत जात है दुख दूर ॥९१॥
जबलग गगन अरु इद्राक, पृथवी सूर सन चद्राक ।
सुवसो नव हगी पुर एह, सहर आगरा गुन गेह ॥९२॥
सवत सतरै सै असी वया क, आषाढ़ मास चित वसियाक ।
सुदि पख तेरसी तारीख, कीनी गजल धुए बारीक ॥९३॥
अपनी बुद्धि के सारुक, कीनी गजल ए धारक ।
लखमी करत है अरदास, नित प्रति कीजिये सुविलास ॥९४॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) आबू शैल री गजल । पत्र ६५ । पनजीसुत चेलो । स० १९०९ वैसाख वदी तीज ।

आदि—

ब्रह्म सुता पद वीनवुं, मन गणराज मनाय ।
शोभा आबू शैल की, वरणुं उक्ति बणाय ॥ १ ॥

अंत—

सांचो करण नाह् साथ, भैरो जग् दोनु भ्रात ।
सत इगणीस नौ की साख, वदि पख लाग तो वैसाख ॥ ६२ ॥
राजी रहै सारा रीझ, तापर करी आखा तीज ।
जिलीयो गाम रतनूं जात, पनजी सुतन चेलो पात ॥ ६३ ।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) इन्दौर वर्णन ।

आदि—

सकल गुण करि सोहतो, सकल देश सिरदार ।
अति इंदोर उद्योत है, सब जाणत संसार ॥ १

छंद पद्धड़ी

सब सिरै सहर इंदौर साच, वर्णवु गुनह तिनके जु वाच ।
जिण नगर मांहि धनवान जाण, वलि वृद्धि सुद्धि बलवन वखाण ॥ १ ॥

अंत—

नगर सांध वरण्या सहु, चितवर आनही चूप
अब वर्णन हासी करू माजन रा सुण दाय ॥

(प्रतिलिपि —अभय जैन ग्रन्थालय)

(४) उदयपुर गजल । पद्य ८० । यति खेतल । सं० १७५७ मार्गशीर्ष ।

आदि—

जपं आदि इकलिंगजी, नाथ दुवारै नाथ ।
गुण उदयापुर गावतां, सतां करो सनाथ ॥ १ ॥
सघन अंब गिरिवर सघन, सिरवर रमैं सुर राय ।
राठ सेन सुप्रसन रही, प्रथम नमता पाय ॥ २ ॥
आंबेरी उमया रमन, भुवाण भोलानाथ ।
रतन पुर हणमत रिधु, सो सुप्रसन्न सनाथ ॥ ३ ॥

अंत—

खर तर जती कवि खेताक, आखै मौज सुं एताक ।
राणा अमर कायम राज, लायक सुन जस मुखलाज । ७८ ॥
लायक जस मुख लाज, सुनहु तारीफ सहर की ।
गुमियन सुन के गजल, निजर कर नेक मेहर की ।

फतै जु गरुर फजर, रिधु अमरसिंह जू राना
उदयापुर जु अनूप, अजब कायम कमठाना
वाडी तलाव गिर बाग वन, चक्रवर्त्ति ढलते चमर
अन भग जंग कीरत अमर, अमरसिंह जुग जुग अमर ॥ ७९ ॥

संवत सतरै सतावन, मिगसर मास धुर पख धन्न ।
कीन्ही गजल कौतुक काज, लायक सुणतसु मुख लाज॥ ८० ॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति--पत्र ३ । पंक्ति १६ । अक्षर ४७ । साइज ९॥। × ४॥ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) कापरड़ा गजल- पद्य ३१ । यति गुलाबविजय । संवत १८७२ चैत्र शुक्ला ३ ।

आदि

सरस्वती पाय प्रणमु सदा, रिद्धि सिद्धि नित देय ।
दुःख विनाशन सुख करण, अविरल वाणी देय ॥ १ ॥
देश चिहु दिसि दीपतो, सदा सुरंगो देश ।
तिह कापरडा वर्णवु, अेक वला विशेष ॥ २ ॥
गजल करु गोरातणी, सुणता उपजे स्नेह ।
बालक बुद्धि वचारवा, अकल उपजे एह ॥ ३ ॥
ज्ञानी ध्यानी बहु गुणी, पाखंड रहै न कोय ।
इण खंडे जन पुर अधिक, रंग रली घर होय ॥ ४ ॥

अंत—

संवत अठारह जाणक, वरस बहुत्तर आणक ।
चैत्र मास ह चगा, वद पख तीज दिन रगा ॥ २९ ॥
तपा गच्छ यति है गुलाब, किया इस गजल का जाब ।
जिसने कहिये कैसीक, आखियां देखी ऐसीक ॥ ३० ॥

निजरी

बावन वीर सधीर वार चामुंड माई, राज कर्ता रस मंड भारी वर सुभ सवाई ।
मान नृपति महाराज आज अधिक यश गाजै, कापरड़े कमधज खुशालसिंह नित राजै ॥

(प्रतिलिपि--अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) गिरनार गजल । यति कल्याण । सं० १८३८ माह वदि २ ।

आदि—

दोहा

वर दे मात वागेसरी, गजल कहु गुण खाण ।
जबर जंग है जीर्ण गढ, वाचा तास बखाण ॥ १ ॥
महबत खान महीपति, रघु विराजै राज
गय थट्ट हय थट्ट गाजता, सब ही सारे साज ॥ २ ॥
सकल लोक आगे खडा, बाबी के दरबार ।
सत विराजे अमर छव, दिन दिन दे देकार ॥ ३ ॥

॥ गजल ॥

दिन दिन होत है देकार, गिरधर गाजत गिरनार
दामोदर कुंड है सुख दाय, करता स्नान पातक जाय ॥ १ ॥
देवल ऊंच है धज दंड, नीचे खूब नेतो कुंड ।
भवेसर नाथ सम्भू देव, सारत लोक जाकी सेव ॥ २ ॥

अन्त—

असी नारिया अलेख, उपमा कहा ऐसी देख ।
सवत अढार अहतीसेक, महा वदि बीज के दिवसेक । ५१ ॥
कीनी यात्रा गढ गिरनार, कहता गजल अति सुखकार ।
घर के अन्दर भेज सोंवार गढ पुवणमो गिरनार ॥ ५३ ॥
खरतर जती है सुप्रमाण, कवि गु कहत है कल्याण

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) गिरनार जूनागढ वर्णन । मनरूप विजय ।

आदि—

बरणु अवहि सोरठ वखान, रीझे जु सुनहि सब राव रान ।
गिरनार जिहां तीरथ गजेन्द्र, वंदे जु सुरहि इंद्राणी इंद्र ॥ १ ॥

अंत—

जूनोगढ जग येष्ट, श्रेष्ट वानी तिहां सोहै ।
दल सब्बल दईवान, मन्त्र जन देखत मोहै ॥
श्रावक जिहां सुखकार पार जिनका कुन पावै ।
धरम करत धमवंत, गुणह बद बडे जु गावै ॥

तिण देश तीर्थ शत्रुंज शिखर, बले गिरनार बखाणिये।
मनरूपविजय कवि कहै मरद, अवस सोरठ चित आणिये ॥ १ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(८) चित्तौड़ गजल। पद्य ५६। यति खेतल। सं० १७४८ श्रावण वदि १२।

आदि—

दोहा

चरण चतुरभुज धारि चित, अरु ठीक करो मन ठौर
चौरासी गढ चक्कवह चावो गढ चित्तौड़ ॥ १ ॥

गजल

गढ चित्तौड़ है बंका कि, मानु समंद में लंका कि।
बिडड़ पूरन अहलवनी, अरु गंभीर नीर रहात कि ॥ २ ॥
भला दैति अल्लावदिन, बंधी पूल बडी पदवीन
गैबी पीर है गाजी कि, अकबर अवलियो राजी कि ॥ ३ ॥

अंत—

खरतर जती कवि खेताक, आखै मौज सुं एताक।
संवत सतरैसै अडताल, सावण मास ऋतु वरसाल :
वदि पख बारसी तेरी कि, कीनी गजल पढियो ठीक ॥ ५५ ॥

कलश

पढो ठीक बारीक सुं पंडिताणे जिन्हो रीत सगीत की ठीक पाई
चयार कूट मालुम चित्तौड चावा जिहां चंडिका पाठ चामुण्ड माई।
झालो बावसें झीकतें झरणा रे झीगरां झीठ दरखत जोइ भीड
कहे कवि खेतल यु वहे वितारे गजल चित्तौड की खुब बणाई ॥

लेखनकाल—१८वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र २। पंक्ति १७। अक्षर ४७। साईज १०×८।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) जोधपुर वर्णन गजल। गुलाब विजय। सं० १९०१ पौष कृष्ण १०।

आदि—

समरूं मन शुद्ध शारदा, प्रणमु श्री गुरू पाय।
महिपल में महिमा निलो, मरुधर है सुखदाय ॥ १ ॥
तिण देसै जोधाणपुर, दिन दिन चढतै दाव।
सकळ लोक सुखिया बसै, राज करत हिन्दु राव ॥ २ ॥

गजल

जोधहि नगर है कैसाक, मानु इन्द्रपुर जैसाक ।
कहियै सोभ तिन केतीक, अपनी बुध है जेतीक ॥ १ ॥

अन्त—

पोसइ मास वलि वदि पक्ष, दसमी तिथइ भृगु परतक्ष ।
समझो सुकवि चित्त हि लाय, बालक रीत कीनी भाय ॥ १०२ ॥

लेखन—सं १९०१ री गजल जोधपुर री है पं० नान विजय पं० गुलाब विजयजी कृत।

(प्रतिलिपि–अभय जैन ग्रन्थालय)

(१०) जोधपुर नगर वर्णन गजल । पद्य ४९ । हेम । सं० १८६६ कार्तिक सुद १५ ।

आदि—

दोहा

समरूं गणपत सारदा, धरूं ध्यान चित्त धार ।
जपूं गजल जोधाण की, निपट सुणो नर नार ॥१॥

× × ×

मुरधर देश है मोटाक, तिहां नहीं काहे का तोटाक ।
जिसमें शहर है जोधान, वर्णूं ताहि मिष्ट ही वान । २॥

अन्त—

वली अठार छासठ वर्ष, हिकमत करी कानी हर्ष ।
निपट ही पूर्णिमा तिथ नीक, टार्वा गजल कीनी ठीक ॥४६॥
तप गच्छ गच्छ में सिरताज, विधु जिणंद सूरही राज ।
मुनि वा नेम मही में मौड, कहै कवि शिष्य हेम कर जोड ॥४७॥

कवित्त

योधनयर जगजाण इन्द्रपुर ही सम ओपत ।
वाजत वज्र छत्तीस नित्य उच्छव कर नरपति ।
राज रूद्ध बहु रीत प्रीत नर नार र पेखो ।
अही सूर चंद अडिग दुनी वाड नर धे देखो ।
वाह जी वाह ओपम वडिम मनुष्य घणा सुख माण री ।
कवि दिठ्ठ जिसड़ी कही जग शोभा जोधाण री ॥ ४७ ॥

(प्रतिलिपि—अभयजैन ग्रन्थालय)

(११) जोधपुर वर्णन गजल

आदि—

सारद गणपति शिर नमुं, निश्चै इक चित्त होय।
गढ जोधाणो वर्णवुं, मोटो बुद्धि द्यो मोय ॥ १ ॥
सबही गढां शिरोमणि, अतिही ऊँचो जाण।
अनड़ पहाड़ां ऊपरै, जालम गढ जोधाण ॥ २ ॥
राज करै राठौड़ घ', श्री मानसिंह महाराज।
अदल आण वरतै अखंड, इसडो अवर न आज ॥४॥

गढ जोधाण अति मारीक, जाण धरा जुग सारीक।
जब्बर कोट पक्का जोर, जाके जोड नावै और ॥१॥

(त्रुटित प्रति—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१२) झींगोर गजल । जटमल नाहर ।

आदि—

झींगोर कोटां खूब देखी नारी एक सुनार की।
मन लाइ साहिब आप सिरजी पत सिरजण हार की।
मुख चंद मुह निसाण चाढे नैन धार्मी सार की।
अलि मस्ति आढा नाजि नखरा कली जान अनार की।

अन्त -

कर ओट गुंबट को विराजै, सबल फौज विटार की।
बहु खूब खूबां खब सोभा खूब छबि गुलजार की।
बनी अजब महिमा, अजब सोभा नोस सिंधार की।
मुख जटमल सिपत कीनी, कामनी किरतार की।

(प्रतिलिपि - अभय जैन ग्रन्थालय)

(१३) डीसा गजल । पत्र १२१ । देवहर्ष ।

आदि—

चरण कमल गुरु लाय चित्त, गजल करु सुखदाय।
कै प्रदर्शन वार्धा किया, विपुल सुज्ञान बताय ॥ १ ॥
बीन दरदेश कथीर जु, पहिर खुशी नहीं होय।
हीरा मणि माणक सही, लीला कवि जन लोय ॥ २ ॥
घ (घ ?)र नीली पाणधार मैं, गुणीयल नर शुभ गाम।
नग फण रस कस नीपजे, धवल नवल सुख धाम ॥ ३ ॥

जपुं सिद्ध दीसा धणी गोला सुजस गढ सूर।
थानेरा गढ सम श्रण जेथी जालिम नूर ॥ ४ ॥
सकल लोक सेवा करै, प्रबल विहार पठाण।
रीधू विराजे राज ऋद्ध, दिली पत दीवाण ॥ ५ ॥

कलश छप्पय कवित्त

अन्त—

सुणता मंगल माल देव कुशल गुरु वांछित दाता।
चुगली चोर मरचूर सदा सुख आपै साता।
चन्द्र गच्छ सिरचंद गुरु जिणहर्ष सूरीसर गाजे।
प्रतपी द्रुप जिम पुर भग्या सब दालिद्र भाजे। १२० ॥
पुण्य सुजस कीधो प्रगट, जिहा सिद्ध अंबा माता धणी
कवि देवहर्ष मुख थी कहै, दीये सुजस गोला धणी ॥ १ ॥

(प्रतिलिपि--अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) नागौर वर्णन गजल। ८३ पद्य। मनरूप। सं० १८६२।

आदि—

मरु धर देश हं मोटा क, अनधन का जु नहीं तोटा क।
जिस में शहर कितै जोर, निपट ही अधिक है नागोर ॥ १ ॥
महीपति मानसिंह महाराज, सबही भूप का सिरताज।
खग बल प्रबल अरियण खेस, डड हो भरै दमही देस ॥ २ ॥

अंतः—

गुण है अधिक करो कुन गाय, पंडित पढे पार न पाय।
भविजन सुणै रीझै भूप महिमा कहा कवि मनरूप ॥ ८२ ॥

कवित्त

गजल सुणौ जे गुणी भली तिनके मन भावै
सुणे राव राजान, उमग तिनके चित्त आवै।
पंडित सुणै प्रवीण हरख उपजे हिय उलसै।
अवर सुणै नर नार, बडे चित्त माया विलसै।
मग रतन सहर नागौर है कहो कीरत केती करों।
कूड नहीं जाण तिलमात कथ, निरख दाद देज्यो नरा ॥ ८३ ॥

(प्रतिलिपि – अभय जैन ग्रन्थालय)

(१५) पाटण गजल । पद्य १४५ । कर्त्ता देवहर्ष । सं० १८५९ फागुन ।

आदि—

सरस वचन द्यो सरसती, पामी सु गुरु पसाय ।
विघन व्याधि भवभय हरण, विकल ज्ञान वर दय ॥ १ ॥
परम बुध परगट कवि, अर्णव जिम गम्भीर ।
मेरी बुध अति मन्द है, ज्यूं छीलर सरनीर ॥ २ ॥
खरी धरा नव खंड मैं, सतर सहस्स गुजरात ।
संबलपुर राणीश्वरी, मोटो वेथ मात ॥ ३ ॥
धर पीलो मंदिर धवल, अक्षय लाछि अलक्ष्य ।
सर्व लोक सुखिया वसै, खूबी करै खलक्ष्य ॥ ४ ॥
रथ पायक हय गय घणा, दिन दिन चढते दाव ।
गायक वाक गाजै गुहिर, राज करै हिन्दू राव ॥ ५ ॥

अन्त—

सखी मिल करत बयणं रसाल, ज घर करा हाय मीहाल
सवत अठार उणसठ वरस, फागण वाणी सु दिखी सरस ॥ १४४ ॥
गाइ गजल गुणम लाक, खोल्या सुजस का नालाक
धरके अक्षर मन सुभ ध्यान, सुनतां होव नित कल्याण ॥ १४५ ॥

कलश कवित्त छप्पय

सुणतां निन कल्याण, दुरि दुख दालिद दूरै ।
प्रणमो सद्गुरु पाय, मक्श मन वांछित पूरै ॥
खरतर गच्छ सिर ताज, श्री जिन हर्ष सूरि गुरु राजै ।
सेवै पवन छत्ताम, गरुड़ सगलां सिर गाजै ॥
पाटण जस कीधो प्रगट, जिहो परमसर त्रिभुवन धर्णो ।
कवि देवहर्ष सुखथी रटै, कुशल रग लीछा घर्णा ॥ १ ॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ६ । पंक्ति १४ । अक्षर ४५ । साइज १० । × ४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१६) पाली नगर वर्णन (कवित्त ढालादि मे)

आदि—

पाली नगर सुहामणों, देख्यां आवै दाय ।
वर्णन ताको अब वदूं, सामण करत सहाय ॥ १ ॥

अन्त—

आण वहै जिननी सदा रे, प्रमुदित मन ससनेह।
नाम जपै श्री पूज्या नो रे, ज्यूं बावैया मेह ॥ ९ ॥

(प्रतिलिपि – अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) पूरब देश वर्णन। पद्य १३३। ज्ञानसागर (नारण)।

आदि—

कोई मैं देख्या देश विशेषा, भतिरं अब का सब ही में।
जिह रूप न रेखा नारी पुरूषा, फिर फिर देख्या नगरी में॥
जिहाँ कार्णा चुचरी अधरी बधरी, लगुरी पगुरी हुवै काई।
पूरब मति जाज्यो, पच्छि जाज्यो, दक्षिण उत्तर है भाई॥ १ ॥

अन्त—

घणु घणु क्या कहु, कह्यौ मै किंचित कोई।
सब दीठों सब लहै, देश दीठो नहा जोई॥
जाणी जेती बात, तिती मै प्रगट कहाणी।
झूठा कथ नही कथी, कही ह साच कहाणी।
पिण रहित है इक बात रो, नन मुख चाहे देहधर।
नारण घरी अरू क्या पहर, रहे नही सो सुघर नर॥ १३३ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१८) पारबन्दर (सोरठ देश) वर्णन। पद्य २६। मनरूप

आदि—

तिण देश पुरहविदर प्रसिद्ध, वर्ण वूं ताहि गुन सुन विवुद्ध।
कीरति ताहि की सुनहु कान, अलका पुरी जू ओपम जुं आन॥ १ ॥

अन्त—

पुरविदर है प्रसिद्ध, सारां विदर में सिर हर।
जिन प्रसाद जिन बिंब, नित्य पूजै तिहा वड नर॥
गच्छ पति महिमा घणो, करै नरनारी उमग कर।
सुणे सूत्र सिद्धान्त, धरम मग अथग हियै धर॥
शत्रुंज भेंट गिरनार सह, रीत प्रम खरचै जु रिद्ध।
कव मनरूप महिमा उरै, पुर बिदर दीठों प्रसिद्ध॥ २६ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैनग्रन्थालय)

(१९) **बीकानेर गजल** । उदयचन्द्र यति । सं० १७६५ चैत्र ।

आदि—

> शारद मन समरूं सदा, प्रणमुं सदगुरु पाय ।
> महियल मैं महिमानिलो, सन जन कुं सुखदाय ॥ १ ॥
> वसुधा माहे वीकपुर, दिन दिन चढते दाव ।
> सर्व लोक सुखिया वसै राज करै हिन्दु राव । २ ॥
> पर दुख भजनरिपु दलन, सकल शास्त्र विध जाण ।
> अभिनव इन्द्र अनूपसुत, श्री महाराज सुजाण ॥ ३ ॥
> बांकी धर गढ बकडे, रिपु दल कीना जेर ।
> चावो च्यार चक मे, निरख्यो वीकानेर ॥ ४ ॥

अन्त—

कलशा

> संवत सतर पैंसठ रे मास, चैत्र मे गजल पूरी कीनी ।
> माता शारदा के सुपसाइ सु रे, मुझे खूब करण की मति दीनी ॥
> वीकानेर सहिर अजब है खास, चक मे ताकी प्रसिद्ध दीनी ।
> उदैचन्द आनन्द सु यु कहे रे चतुर मानस के चितमाहि लीनी ।
> चारो च्यारे चकमे नवखण्ड मे रे, प्रसिद्ध बणी बीकानेर बाइ ।
> छत्रपति सुजाण सो जुग जुग जीवो, ताके राज्य मे बाजत नौबत थाइ ॥
> मनसु खूब बणाई के रे सु सुणाइ [illegible] लोक सुवास पाइ ।
> कविचन्द आणद सु यु कहै रे [illegible] खूब गजल गाइ ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ६ । पंक्ति १३ । अक्षर [illegible] । साइज [illegible] ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२०) **बडोदरा गजल** । दीप विजय । सं० १८५२ मागे शीर्ष शुक्ल १ शनिवार

आदि—

> षटपद (पद्र) क्षेत्र है नीराक, कटणी बहुत है तीराक ।
> फिरती गिरद दो कोशाक, क्यों रहैं शत्रु की होसाक ॥
> आगु राव दामाजीक, जेसा न्याय रामादिक ।
> गोला न्याल मै सम्पाक, किल्ला तेनना बम्याक ॥

अन्त—

कलश सवैया—

> पूरण किद्ध गजल अवल्ल अढार मे बावन चित्त उल्लासें ।
> थावर वार मृगशिर तिथि प्रतिपद पक्ष उजासें ॥

उदयो तके थाट उदय सूरि पाइइ लक्ष्मी सूरि जिम भान आकाशें।
प्रमेय रत्न समान वरनन सेवक दीपविजय इम भासें ॥

(प्रतिलिपि —अभय जैन ग्रन्थालय)

(२१) बंगाला की गजल । यति निहाल ।

आदि—

दोहा

श्री सद्गुरु शारद प्रणमो, गवरी पुत्र मनाय ।
गजल बंगाल देश की, कहूं सरस बनाय ॥

गजल

अवल देश बंगाला कि, नदियां बहुत है नालाकि ।
संकड़ी गली है वहां जोर, जंगल खूब घिरे चहुं ओर ॥
नवलख कामरू इक द्वार, दस्तक बिना नही पैसार ।
बांए हाथ बहती गंग, दक्षिण ओर परवत तुंग ॥

अन्त—

रेखता

यारो देश बंगाला खूब है रे जिहां बहत भागीरथी आप गंगा ।
जिहां सिखरसमेत पारनाथ पारस प्रभु झाडखंडी महादेव चंगा ।।
नगर पचेट में रघुनाथ का बड़ा न्हाण है गंगा सागर सुसंगा ।
देश हडीसा जगन्नाथ अरू वा कुंड के न्हात सुध होत अंगा ॥

दोहा

गजल बंगाला देश की भाषित जती निहाल ।
मूरख के मन मां बसै, पंडित होत खुश्याल ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) भावनगर वर्णन गजल । पद्य ३२ । भक्ति विजय । सं० १८६६ कार्तिक पूर्णिमा ।

आदि —

आश्वनाथ प्रणमी करी, अहं ध्यान शुभ ध्याय ।
भावनगर भेदह भणु, सहु नर नारी सुहाय ।। १ ।।

अन्त —

गजल

गुज्जर धरह गुण केसाक, जो ज्यो सकर पय जैसाक् ।
तिनकी सिफत कवि काढे ताम, नव खण्ड मांहे तिन का नाम ।।१।।

अन्त—

सवत अठार छासठ सच बलि तिहाँ मास का क वाच।
पूनम सकल को दि- मेख, बदा है गमक भाव विशेष ॥ ११॥
तप गच्छ धणी ... , विजै जिनेन्द्रसूरि ... ॥
सेवक भक्तिविजय ... सेव, पढी हे गम- पूत पच देव ॥१२॥

(प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय

(२३) भावनगर वर्णन। पद्य २५। हेम। सं० १८६६ कातिक पूर्णिमा।

आदि—

पच देव प्रणमु प्रथम, ऋषभ सत वड र त।
नेम पार्श्व बद्धमान जिन, पाय भक्त चित प्रीत ॥१॥
गुण गाऊं गुजर धरा भावनगर भ- मंत।
राजे गुण गुण राजवी, सुण रखे गुण सत ॥२॥

छन्द त्रोटक

गहिरो अत देश गुजारय निरभ्रम प्रज्ञासु नारी नरय।
घणी ऋद्धि वृद्धि जिय घर मैं, धरे चित्त सुवत्त दया धरमे ॥१॥
पंडित नेम गुरु के पसाव, मन किथय हेम हजारु सुभाव।
सुन कै जु रीझहै नर सयान, वाह जू वाह वदइ महीवान ॥२४॥

दोहा

संवत अठारह छासठै पूनम कातिक पेव।
भावनगर का गुण भला, वरण्या कवि विशेष ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२४) मंगलोर (सोरठ) वर्णन।

आदि—

नाभि नन्द कु नमन कर, संत नेम सुखकार।
पार्श्ववीर पाय प्रणमतो प्राणी उतरै पार ॥

छन्द पद्धरी

मंगलोर सहर मोटे मडाण, उपमा जगत मांहि कैलास जाण।
पहलो जु कोट अतही प्रगट, नहीं इसौ अवरन वहो जु रूढ ॥१॥

अन्त—

तरुण तेज गच्छ तपै, विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर।
ज्ञानवंत गम्भीर, नमै सहू को नारा नर ॥

योग अष्ट विध जाण वाण अमृत सत वदियत ।
संग सकल मिल सदा, निज उच्छव करते नित ॥
देश परदेश मांहे दीपत, जीरत अष्ट कर्मह अरी ।
कीरत सत गच्छ पति तणा, कव जोद्धण सैह रह करी ॥१४ ।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२५) मरोट गजल । यति दुर्गादास । सं० १७६५ पौष कृष्णा ५ ।

आदि—

सम्मत सतरै पैंसठै, पोह वदि पांचम्म ।
श्री गुर सरसती सानिधै गजल करी गुण रम्य ॥१॥
गुणीयल ग्राहक हुसी, खलह हुसी कोई खोट ।
दुरस कही दुरगेस मुनि, किले कोट मरोट ॥२॥

अन्त—

जब जग आग नाहीं करी, तब लग कोट नींव खरी ।
औसा कोट बरणाव, चित मैं चूप धरना चाव ॥
आग्रह दीपचन्द उल्हास कहता जती यूँ दुरगादास ।
सुण है राजियो स्याबास गजल खूब कीनी रास ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२६) मेड़ता वर्णन गजल । पद्य ४८ । मनरूप । सं० १८६५ का सु० १५ ।

आदि—

मरूधर देश अति मोटाक, नित नित फबै नव चोटाक ।
तिनहीं देश की सुन ताम, निज ही कीर्ति नव खण्ड नाम ॥

अंत—

सम्वत अठारह पैंसट* साच, वलि सुद मास कार्तिक वाच ।
पखही सुकल पुनम पेख, दाखी गजल कवि मन देख ॥४६॥
सब ही गच्छ मैं सिरताज, राजत अटल तप गच्छ राज ।
भक्ति ही विजय गुण भारीक, जाकु खबर धर सारीक ॥४७॥
तिनके शिष्य मनरूप ताह, वदी है गजल वाह जी वाह ।
वांचै सुनैं नर वहरीत, पामैं अचल मन बहु प्रीत ॥४८॥

अन्य प्रति मे—

संवत अठारह तयासी साच, वलि कार्तिक मास ही वाच ।
पख ही सकल पूनम पेख, दाखी गजल कविजन देख ॥४६॥

(११) जोधपुर वर्णन गजल

आदि—

सारद गजपति सिर नमुं, निश्चै इक चित्त होय ।
गढ जोधाणो वर्णवु, मोटी बुद्धि द्यो मोय ॥ १ ॥
सबही गढां शिरोमणि, अतिही ऊँचो जाण ।
अनड़ पहाड़ां ऊपरै, जालम गढ जोधाण ॥ २ ॥
राज करै राठौड़ वं, श्री मानसिंह महाराज ।
अटल आण वरतै अखंड, इसड़ो अवर न आज ॥४॥

गढ जोधाण अति बारीक, जाणे धरा जुग सारीक ।
जबर कोट पक्का जोर, जाके जोड़ नावै और ॥१॥

(त्रुटित प्रति—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१२) झींगोर गजल । जटमल नाहर ।

आदि—

झींगोर कोटां खूब देखी नारी एक सुनार की ।
मन लाइ साहिब आप सिरजी पत सिरजण हार की ।
मुख चद मुंह निसाण चाबे नैन धार्मी सार की ।
अलि मस्त आछो नाजि नखरा कली जान अनार की ।

अन्त -

कर ओट गुंबट को विराजै, सबल फोज विठार की ।
बहु खूब खूबां खूब सोभा खूब छबि गुलजार की ।
बनी अजब महिमा, अजब सोभा नौस सिंघार की ।
मुख जटमल सिफत कीनी, कामनी किरतार की ।

(प्रतिलिपि— अभय जैन ग्रन्थालय)

(१३) डीसा गजल । पद्य १२१ । देवहर्ष ।

आदि—

चरण कमल गुरु लाय चित्त, गजल करुं सुखदाय ।
कै प्रद्दति बांधी किया, विपुल सुज्ञान बताय ॥ १ ॥
दीन ठ्रादेश कथीर जु, पहिर खुशी नहीं होय ।
हीरा मणि माणक सही, लीला कवि जन लोय ॥ २ ॥
घ (घ ?)र नीली धाणधार मैं, गुणीयल नर शुभ गाम ।
नग फण रस कस नीपजै, धवल नवल सुख धाम ॥ ३ ॥

जपुं सिद्ध ईसा धणी गोला सुजस गढ सूर ।
भानेरा गढ सम श्रण अैथी जालिम नूर ॥ ४ ॥
सकल लोक सेवा करै, प्रबल विहार पठाण ।
रीधू विराजै राज अरद्ध, दिली पत दीवाण ॥ ५ ।

कलश छप्पय कवित्त

अन्त—

सुणता मंगल माल देव कुशल गुरु वाँछित दाता ।
चुगली चोर मरचूर सदा सुख आपै साता ।
चन्द्र गच्छ सिरचंद गुरु जिणहर्ष सूरीसर गाजै ।
प्रतपी द्रप जिम पुर भजगा सब दालिद्र भाजै । १२० ॥
पुण्य सुजस कीधो प्रगट, जिहा सिद्ध अबा माता धणी
कवि देवहर्ष मुख थी कहै, ईयै सुजस लीला धणी ॥ १ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) नागौर वर्णन गजल । ८३ पद्य । मनरूप । स० १८६२ ।

आदि—

मरु धर देश है मोटा क, अनधन का जु नहीं तोटा क ।
जिस में शहर के तै जोर, निपट ही अधिक है नागोर ॥ १ ॥
महीपति मानसिंह महाराज, सबही भूप का सिरताज ।
खग बल प्रबल अरियण खेस, डड ही भरै दसही देस ॥ २ ॥

अंत:—

गुम है अधिक करो कुन गाय, पंडित पढै पार न पाय ।
भविजन सुणै रीझै भूप, महिमा कही कवि मनरूप ॥ ८२ ॥

कवित्त

गजल सुणो जे गुणी भली तिनके मन भावै
सुणै राव राजान, उमग तिनके चित्त आवै ।
पंडित सुणै प्रवीण हरख उपजै हिय उलसै ।
अवर सुणै नर नार, बडे चित्त माया बिलसै ।
मग रतन सहर नागौर है कहो कीरत केती करों ।
कूड नहीं जाण तिलमात कथ, निरख दाद देज्यो नरा ॥ ८३ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१५) पाटण गजल । पद्य १४५ । कर्त्ता देवहर्ष । सं० १८५९ फागुन ।

आदि—

सरस वचन द्यो सरसती, पामी सु गुरु पसाग ।
विघन व्याधि भवभय हरण, विकल ज्ञान वर दय ॥ १ ॥
परम बुध परगट कवि, अर्णव जिम गंभीर ।
मेरी बुध अति मद है, ज्यूं छीलर सरनीर ॥ २ ॥
खरी धरा नव खड मैं, सतर सहस्स गुजरात ।
संखलपुर राणीधरी, मोटो वेथ मात ॥ ३ ॥
घर गोलो मंदिर धवल, अक्षय लाछि अलक्ष्य ।
सर्व लोक सुखिया वसै, खूबी करै खलखय ॥ ४ ॥
रथ पायक हय गय घणा, दिन दिन चढते दाव ।
गायक वाल गाजे गुहिर, राज करै हिन्दू राव ॥ ५ ॥

अन्त—

सखी मिल करत बयणं रसाल, अ घर कर हाय मीहाल
संवत अठार उणसठ वरस, फागण वाणी सु दिली सरस ॥ १४४ ॥
गाइ गजल गुणम लाक, खोल्या सुजस का तालाक
धरके अक्षर मन सुभ ध्यान, सुनतां होव नित कल्याण ॥ १४५ ॥

कलश कवित्त छप्पय

सुणतां नित कल्याण, भो दुख दालिद्र दूरे ।
प्रणमो सद्‌गुरु पाय, सदा मन वांछत पूरे ॥
खरतर गच्छ सिर ताज, श्री जिन हर्ष सूरि गुरु राजे ।
सेवै पवन छतीस, गच्छ सगलां सिर गाजें ॥
पाटण जस कीधौ प्रगट, जिहां पनामर त्रिभुवन घणों ।
कवि देवहर्ष मुखथी रटै, कुशल रग लीछा घणां ॥ १ ॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ६ । पंक्ति १४ । अक्षर ४५ । साइज १० । × ४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१६) पाली नगर वर्णन (कवित्त ढालादि मे)

आदि—

पाली नगर सुहामणों, देख्यां आवै दाय ।
वर्णन ताको अब वदूं, सामण करत सहाय ॥ १ ॥

अन्त—

आण वहै जिननी सदा रे, प्रमुदित मन ससनेह ।
नाम जपै श्री पूज्या नो रे, ज्यूं बाबैया मेह ॥ १ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) पूरब देश वर्णन । पद्य १३३ । ज्ञानसागर (नारण) ।

आदि—

कोई मैं देख्या देश विशेषा, भतिरं अब का सब ही में ।
जिह रूप न रेखा नारी पुरुषा, फिर फिर देख्या नगरी में ॥
जिहाँ काणी चुचरी भधरी वधरी, लगुरी पंगुरी हूवै काई ।
पूरब मति जाज्यो, पच्छि जाज्यो, दक्षिण हत्तर हे भाई ॥ १ ॥

अन्त—

घणु घणु क्या कहुं, कह्यो मै किंचित कोई ।
सब दीठौ सब लहै, देश दीठो नहां जोई ॥
आणी जेती बात, तिनां मै प्रगट कहाणी ।
झूठी कथ नही कथी, कही हे साच कहाणी ।
पिण रहित हूँ इक बात रो, तन सुख चाहै देहधर ।
नारण घरी अरू क्या पहर, रहे नही सो सुघट नर ॥ १३३ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१८) पोरबन्दर (सोरठ देश) वर्णन । पद्य २६ । मनरूप

आदि—

तिण देश पुरहविदर प्रसिद्ध, वर्ण सूं ताहि गुन सुन विशुद्ध ।
कीरति ताहि की सुनहु कान, अलका पुरी जू ओपम जुं आन ॥ १ ॥

अन्त—

पुरविदर है प्रसिद्ध, सारां विदर में सिर हर ।
जिन प्रसाद जिन त्रिब, नित्य पूजै तिहा वड नर ॥
गच्छ पति महिमा घणी, करै नरनारी हमग कर ।
सुणै सूत्र सिद्धान्त, धरम मग अधग हियै धर ॥
शत्रुंज भेंट गिरनार सह, रीत धरम खरचै जु रिद्ध ।
कव मनरूप महिमा उरै, पुर विदर दीठौ प्रसिद्ध ॥ २६ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैनग्रन्थालय)

(१९) बीकानेर गजल । उदयचन्द्र यति । सं० १७६५ चैत्र ।

आदि—

> शारद मन समरू सदा, प्रणमुं सद्गुरु पाय ।
> महियल में महिमानिलो, सन जन कुं सुखदाय ॥ १ ॥
> वसुधा मांहै बीकपुर, दिन दिन चढते दाव ।
> सर्व लोक सुखिया वसै, राज करै हिन्दु राव । २ ॥
> पर दुख भजनरिपु दलन, सकल शास्त्र विध जाण ।
> अभिनव इन्द्र अनूपसुत, श्री महाराज सुजाण ॥ ३ ॥
> बांकी धर गढ बकड़े, रिपु दल कीना जेर ।
> चावो च्यारे चक्क में, निरख्यों बीकानेर ॥ ४ ॥

अन्त—

झूलणा

> संवत सतर पैंसठ रे मास, चैत्र में गजल पूरी कीनी ।
> माता शारदा के सुपसाइ सु रे, मुझै खूब करण की मति दीनी ॥
> बीकानेर सहिर अजब है चारू, चक मे तार्को प्रसिद्ध दीनी ।
> उदैचन्द आनन्द सु यु कहै रे, चतुर मानस के चितमाहि लीनी ।
> चावो च्यारे चकमें नवखण्ड मे रे, प्रसिद्ध बणो बीकानेर बाइ ।
> छत्रपति सुजाण सा जुग जुग जीवो, ताके राज्य मे बाजते नौबत थाइ ॥
> मनसु खूब बणाई कें रे सू सुणाइ क लोक सुवास पाइ ।
> कविचन्द आणंद सु यु कहै रे गृ धु धु ध ध खूब गजल गाइ ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति- पत्र ६ । पंक्ति १३ । अक्षर २५ । साइज ५ × ४॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२०) वड़ोदरा गजल । दीप विजय । सं० १८५२ मार्गशीर्ष शुक्ल १ शनिवार

आदि—

> षटपद (पद्र) क्षेत्र है वीराक, छटणी बहुत है नीराक ।
> फिरती गिरद दो कोशाक, क्यों रहै शत्रु की हौसाक ॥
> भाणु राव दामाजीक, जैसा न्याय रामाह्निक ।
> गोल' ख्याल सै सन्ध्याक, किल्ला तेतना बंध्याक ॥

अन्त—

कलश सवैया—

> पूरण किद्ध गजल अवल्ल अढार सै बावन चित्त हुलासें ।
> भ.वर वार मृगशिर तिथि प्रतिपद पक्ष उजासें ॥

उदयो तके थाट उदय सूरि पाइइ लक्ष्मी सूरि जिम भान आकाशें।
प्रमेय रतम समान वरमन सेवक दीपविजय इम भासें ॥
(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२१) बंगाला की गजल । यति निहाल ।

आदि—

दोहा

श्री सद्गुरु शारद प्रणमी, गवरी पुत्र मनाय ।
गजल बंगाल देश की, कहूँ सरस बनाय ॥

गजल

अवल देश बंगाला कि, नदियां बहुत है नालाकि ।
संकड़ी गली है वहां जोर, जंगल खूब घिरे चहुं ओर ॥
नवलख कामरू इक द्वार, दस्तक बिना नहीं पैसार ।
बांए हाथ बहनी गंग, दक्षिण ओर परवत तुंग ॥

अन्त -

रेखता

यारो देश बंगाला खूब है रे जिहां बहत भागीरथी आप गंगा ।
जिहां सिखरसमेत पर नाथ पारस प्रभु झाड़खंडी महादेव चंगा ।।
नगर पचेट में रघुनाथ का बड़ा न्हाण है गंगा सागर सुसंगा ।
देश उड़ीसा जगन्नाथ अरु वा कुंड के न्हात सुख होत अंगा ॥

दोहा

गजल बंगाला देश की भाषित जती निहाल ।
मूरख के मन मां बसै, पंडित होत खुस्याल ॥
(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) भावनगर वर्णन गजल । पद्य ३२ । भक्ति विजय । सं० १८६६ कार्तिक पूर्णिमा ।

आदि —

आदिनाथ प्रणमी करी, धरूं ध्यान शुभ ध्याय ।
भावनगर भेदह भणृ, सहु नर नारी सुहाय ।। १ ।।

अन्त—

गजल

गुजर धरह गुण केसाक, जो श्यो सकर पय जैसाक ।
तिनकी सिफल कवि कादै ताम, नव खण्ड मांहे तिन का नाम ।।१।।

अन्त—

संवत अठार छासठ साच वलि तिहाँ मास कातिक वाच।
पूनम सकल को दिन देख, वदी है गजल भाव विशेष ॥१॥
तप गच्छ धणी शान्तिकांत, विजैज न्द्रसूरि शोभन्त॥
सेवक भक्तिविजय कर सेव, पढी है गजल पूज पच देव ॥१२॥

(प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय

(२३) भावनगर वर्णन। पद्य २५। हेम। सं० १८६६ कार्तिक पूर्णिमा।

आदि—

पच देव प्रणमु प्रथम, ऋषभ संत वड रोत।
नेम पार्श्व वर्द्धमान नित, पाक धरू चित प्रीत ॥१॥
गुण गाऊँ गुजर धरा भावनगर भल मंत।
राजे सुण गुण राजवी, सुण रीझे सुण संत ॥२॥

छन्द त्रोटक

गहिरो अत देश गुजारय निभ्रम प्रह्लांजु नारी नरंय।
धणी ऋद्धि वृद्धि जिये घर मैं, धरे चित्त सुवत्त दया धरमे ॥१॥
पंडित नेम गुरु के पसाव, मन शिष्य हेम उजल सुभाव।
सुन कै जु रीझै नर सयान, वाह जू वाह वदइ महीवान ॥२४॥

दोहा

संवत अठारह छासठे पूनम कार्तिक पेख।
भावनगर का गुण भला, बरण्या कवि विशेष ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२४) मंगलोर (सोरठ) वर्णन।

आदि—

नाभि नन्द कु नमन कर, संत नेम सुखकार।
पार्श्ववीर पाय प्रणमतां, प्राणी उतरै पार ॥

छन्द पद्धरी

मंगलोर सहर मोटे मडाण, इण त जगत मांहि कैलास जाण।
पहलो जु कोट अतही प्रचंड, नहीं इसौ अवरन यहां जु खंड ॥१॥

अन्त—

तरुण तेज गच्छ तपै, विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर।
ज्ञानवंत गम्भीर, नमै सहू को नारी नर ॥

योग अष्ठ विध जाण वाण अमृत सत वदियत ।
संग सकल मिल सदा, निज उच्छव करते नित ॥
देश परदेश मांहे दीपत, जीपत अष्ट कर्मह अरी ।
कीरत सत गच्छ पति तणो, कव जोद्धण सैह रह करी ॥१४।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२५) मरोट गजल । यति दुर्गादास । सं० १७६५ पौष कृष्ण ५ ।

आदि—

सम्मत सतरै पैंसठैं, पोह वदि पांचम्म ।
श्री गुर सरसती सानिधै गजल करी गुण रम्य ॥१॥
गुणीयल ग्राहक हुसी, खलह हुसी कोई खोट ।
दुरस कही दुरगेस मुनि, किले कोट मरोट ॥२॥

अन्त—

जब जग आग नाही करी, तब लग कोट नींव खरी ।
औसा कोट बरणाव, चित में चूप धरता चाव ॥
आग्रह दीपचन्द उल्हास कहता जती यूँ दुरगादास ।
सुण है राजियो स्याबास गजल खूब कीनी रास ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२६) मेड़ता वर्णन गजल । पद्य ४८ । मनरूप । सं० १८६५ का सु० १५ ।

आदि—

मरूधर देश अति मोटाक, निस नित फबै नव कोटाक ।
तिनही देश की सुन तांम, निज ही कीर्ति नव खण्ड नाम ॥

अंत—

सम्वत अठारह पैंसट* साच, वलि सुद मास कार्तिक वाच ।
पखही सुकल पुनम पेख, दाखी गजल कवि जन देख ॥४६॥
सब ही गच्छ में सिरताज, राजत अटल तप गच्छ राज ।
भक्ति ही विजय गुण भारीक, जाकु खबर धर सारीक ॥४७॥
तिनके शिष्य मनरूप ताह, वदी है गजल वाह जी वाह ।
वांचै सुनै नर वडरीत, पामै अचल मन बहु प्रीत ॥४८॥

---

*अन्य प्रति मे—

संवत अठारह तयासी साच, वलि कार्तिक मास ही वाच ।
पख ही सकल पूनम पेख, दाखी गजल कविजन देख ॥४६॥

तन भुवनै सुरज करै, नर कुरूप बहु केस
विनै रहित क्रोधी सहज, सार विन्त सविवेस ॥२॥

अंत—

एसे बारह भुवन पर ज्योतिस सास्त्र विचार।
फल नवगृह को वर्ण क्यो सार बुद्धि अनुसार ॥१॥

इति नवग्रह फलं

लेखन काल—१९ वीं शती। १८ वीं शती की कई प्रतियां भी संग्रह मे है।

प्रति—(१) पत्र ३। पंक्ति १५। अक्षर ४८ से ५२। साइज १०×४॥

(२) पत्र ५। पंक्ति ११। अक्षर ३०। साइज १०×४।

(३) पत्र २। पंक्ति १८। अक्षर ४८। साइज ९×४

(४) पत्र ४। पंक्ति १५ से १८। अक्षर ३६ से ४०। साइज ९॥।×४।

(५) पत्र ३। पंक्ति १६। अक्षर ४०। साइज ९×४। अपूर्ण।

(६) तीन प्रतियों के फुटकर पत्र ३। सं० १८८८ आसू वद। लिहिमता लूणसर।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(८) मेघमाल मेघ। सं० १८ १७ कार्तिक शुक्ला ३ गुरुवार। फगवाड़ा।

आदि—

परम पुरुष घट-घट रम्यौ ज्योति रूप भगवान।
सकल रिद्ध सुख दैन प्रभु, नमति मेघ धर ध्यान ॥१॥
ज्योतिक ग्रन्थ समुद्र है, जांकी ले इक बिन्दु।
मेघमाल मेघे रची, प्रगट जिय जग चन्दु ॥८॥
मेघ विचार प्रथम ए थाई, जैसे हर्षके कही बनाई।
काल सुकाल तणी यहि बात, गुरु किरपा कर कह्यो विख्यात ॥३॥

अन्त—

हटपटा छन्द

श्री अटुमल मुनिसर्जा सब साधन राजा, परमानन्द सु सीस है ग्रन्थ विगुनि साजा।
शिष्य भयो सदानन्द तिसतें उपमा भारी, थोड़ा विद्या दुक्क सोई आज्ञा गुरु कारी ॥ १ ॥

चौपाई

ताहि शिष्य नारायण नाम, गुण सोभा को वासे ठाम।
ताको शिष्य भयो नरोत्तम, विनयवत आज्ञा नभगोत्तम ॥ ११ ॥

ता सेवा मैं मयाजु राम, कृपावत विद्या अभिराम।
तिनकी दया भई मुझ ऊपर, उपज्यो ज्ञान सही मोही पर ॥ १७ ॥

अडिल्ल

तौतें मेघ माल इहु कीनी, जो गुरु के मुख ते सुन लीनी।
इसको पढ़े सौ शोभा पावै, सो जग मैं पंडित कहलावै ॥ १८ ॥

रसावल छन्द

मुनि शशि वसु को जान महि, संवत ए भाखत।
कातिक सुदि गुरुवार मास पक्ष मिति तिथि भाखत ॥
उत्राषाढ नक्षत्र दिवस, यही एक विकीजत।
जो घट अक्षर होइ, ताहि कवि सुध करि लीजत ॥ १९ ॥

लीलावती छन्द

एक देस जलंधर सोभे सुन्दर नाम दुपा था ठौर कह्यो।
शुभ दान पुन्य को ठौर इही है मानों सुर पुर आन रह्यो ॥
पण्डित नर सोभे कवि ते भारी गीत बजत रसयो।
ग्रह ग्रह मङ्गलचार जु होवे तामे पुर इक एह बसयो ॥ २० ॥

दोहा

सकल रिद्धि करि सोभए, फगवाड़ा शुभ थांव।
तहां मेघ कवता करि, आछी विध मन आन ॥ २१ ॥
चूहडमल्ल जु चौधरी, फगवारे को राउ।
चतुर सैनका सोभ हैं, जिह उडगण शशि थाह॥ २२ ॥

गीया छन्द

कर सर्व छन्द मिलाइ इकठा कही संख्या यास की।
द्वात्रिंश अक्षर के हिसाबै अठसै अनचासकी ॥
इहु छन्द सत अरू उनीसै कही कवि इहु भास की।
सजानु संख्या दौड जानै, मेघमाल विलास की ॥ २३ ॥

लेखनकाल—२० वीं शताब्दी।
प्रति—पत्र १७। पंक्ति १९। अक्षर ४५। साइज १० × ४॥।
(श्री जिनचरित्रसूरि संग्रह)

(९) रमल शकुन विचार। फाल फते की।

आदि—

फाल फते की—अरे यार बहुत दिन चिंता की है अब तेरी फिकर चित। मिटैगी रोजी तेरी फराक होगी, अब तू अचित रहणा। जो कहांई

देश परदेश जाणां होई, अथ सौदा करण होई बेचण होई × सगाई करणी होई सौ कीजै, वैगी एक आदमी तेरा वही करता है सो रह होगा।

अन्त—

> राजा प्रजा सुखी बैमार कुं कुसल दर हाल सु छुटैगा ×
> सर्व भला होआ सर्व कांम प्रमाण चढ़ैगा।
> रमल शकुन विचार समासम शुभं भवतु।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी। पं० सरूपा लिखतं।

प्रति—पत्र ३। पंक्ति १५। अक्षर ४८। साइज १०×४।

विशेष—इस प्रकार की अन्य कई शकुनावलियें पाई जाती है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१०) शीघ्रबोध वचनिका—

आदि—

> विघन कदन बारन बदन, सिद्ध सदन गुण एन।
> करहु कृपा गिरिजा सुतन, दीजै बानी बैन॥

लेखनकाल—सं० १९१९।

प्रति—गुटकाकार

विशेष—शीघ्रबोध ज्योतिष ग्रन्थ की भाषा टीका है।

(यति ऋद्धिकरणजी भण्डार, चूरू)

(११) सकुन प्रदीप। जयधर्म। स० १७६७ आश्विन ५। पानीपत मे रचित।

आदि—

> स्वस्ति श्री जिन राज मुक्ति मन्दिर वर नायक।
> सकल जगत सुखकार सरस मङ्गल बहु दायक॥
> सजल जलद सम अङ्ग, विमल छिन छिन गुणधारक।
> मथन कमठ शठ मान, इति भय पाप बिधारक॥
> सर्पादि राज पद्मावती, जाके वंछित युग चरण।
> कर जं री चहुं नति करत, नित पार्श्वनाथ भव भय हरण॥

अन्त—

> शकुन शास्त्र मंझार, निरखे श्लोक जु अति कठिन।
> श्री जयधरम विचार, संस्कृत ते भाषा करी॥ १९१॥

संवत सतरै से बीते, बासठ उपरि जान ।
आश्विन सित तिथि पंचमी, शशि सुत वार बखान । १९२ ॥
श्री पानीपंथ नगर मझार, जिन धर्मी श्रावक सुखकार ।
पुण्यवंत महा धनवन्त, दयावन्त अतिहि गुणवन्त ॥ १९३ ॥
आचरहि नित प्रति षट कर्म, श्री मुख भावत पालहि धर्म ।
नन्दलाल नन्दन सुभ कार, श्री गोवरधनदास उदार । १६४ ॥
ताके हेत रची यह भाषा, शकुन श्रुत के लेकर शाखा ।
शकुन प्रदीप सु याको नाम, महा निर्मल ज्ञान को धाम ॥ १९५ ॥
पण्डित लक्ष्मी चन्द गुरु, ता प्रसाद ते एह ।
छन्द रच्यो यह ग्रन्थ शुभ, गोवरधन दास सनेह ॥ १९६ ॥
पढ़त सुनत उपजै मती, मंगलीक सुखकार ।
सकुन प्रदीप ग्रन्थ यह, कविजन लेहु सुधार ॥ १९७ ॥

प्रति—(१)जयसलमेर भंडार (अपूर्ण) ।

(२) पंजाब भंडार (पूर्ण) ।

(१२) सामुद्रिक । पद्य १११ । रामचन्द्र । सं० १७२२ माघ कृष्णपक्ष ६ । भेहरा ।

आदि—

अथ सामु (द्रि) क भाषा लिख्यते । दोहरा—
सरसति मति निज धरि, सरस वचन शत र ।
नरनारी लक्षण कहुं, सामुद्रक अनुसार ॥ १ ॥
सामुद्रक ग्रन्थ मे कहे, अगम निगम की बात ।
इसह जाण जो नर हुवइ, त होई जग विख्यात ॥ २ ॥
आदि अन्त नर नार की, सुख दुःख वात सरूप ।
कुह अनेक प्रकार विध, सुणो एकंत अनूप ॥ ३ ॥
प्रथम पुरुष लक्षण सुणों, मस्तक पद पर्यंत ।
छत्र कुंभ सम सीस जसु, ते हुवै अवनी—कंत ॥ ४ ॥

अन्त —

वनवारी बहु बाग प्रधान, बहै वितस्था नदी सुथान ।
च्यार वर्ण तिहां चतुर सुजान, नगर भेहरा श्री गुग प्रधान ॥
बडे बड़े पाति साह नरिंदा, जाकी सेव करे जन वृंदा ।
पातिसाह श्री ओरङ्ग गाजी, गये गनीम दसो दिस भाजी ॥ ८९ ॥
जाकै राज ग्रन्थ ए कीनै, संस्कृत शास्त्र सुगम करि दीनै ।
संवत् सतरै से बावीसा, माघ कृष्ण पक्ष छठि जगीस ॥ ९० ॥

गिरवर माहे सुमेर विराजै, ज्योति चक्र जिम सूरज छाजै।
गच्छ माहे खरतर गच्छ राजा, जाके दिन दिन अधिक दिवाजा ।। ९१ ।।
श्री जिनसिंह सूरि सुखकारी, नाम जपै सब सुर नर नारी।
जाके शिष्य सिरोमण कहियै, पद्मकीर्ति गुरुवर जसु लहियै ।। ९२ ।
विद्या च्यार दस कंठ बखाणै, वेद च्यार को अरथ पिछानै ।
पद्मरङ्ग मुनिवर सुख दाई, महिमा जाकी कही न जाइ ॥ ९३ ॥
रामचन्द्र मुनि इन परि भाख्यौ, सामुद्रिक भाषा करि दाख्यौ।
जां लगि रहि ज्यों सूरिजी चन्दा, पढहु पढित लहु आणन्दा ।। ९४ ।।

प्रति—१९ वी शताब्दी। पत्र २ अपूर्ण। हमारे संग्रह मे है। अंत भाग बीकानेर के जिनहर्षसूरि भण्डार के बंडल नं० १६ की प्रति मे लिखा गया है। यह प्रति सं० १७९९ की लिखित १२ पत्रों की है।

विशेष—ग्रन्थ मे दो प्रकाश है, प्रथम मे नर लक्षण मे ११७ पद्य एवं द्वितीय नारी-लक्षण मे ९४ पद्य, कुल २११ पद्य है।

(जिनहर्षसूरि भंडार)

(७३) सामुद्रिक शास्त्र भाषाबद्ध। पद्य १८८। नगराज। अजयराज के लिये रचित।

अथ सामुद्रिक शास्त्र भाषाबद्ध लिख्यते।

आदि --

एक बालक सब लक्षण पूरे, देखत आई दोष सब दूर।
आगम अगम आदि मुनि साखी, उयु सामुद्रिक ग्रंथे भाखी।। १ ।।
आगम लछन अग जणावै, सब ऊपर पूर फल पावै।
ताका अब कहुं विचारा, समझत कहत सुनत सुखकारा।। २ ।।

अन्त—

सगुन सुलछन समति सुभ, सज्जन को सुख देत।
भाषा सामुद्रिक रच्यौ, अजैराज के हेत ॥ ६१ ॥
जो जानइ सो जान, दाता दोहि अजान फुनि।
जानवनो अरू दान, अजैराज दुहु विधि निपुन ॥ ६७ ॥

इति श्री सामुद्रिक शास्त्रभाषा बद्ध पुरुष स्त्री सुभाशुभ लक्षण सम्पूर्ण।
लेखनकाल - संवत १७७४ ना वैशाख सु० १ दिनै।
प्रति—(१) पत्र ८। पंक्ति १२ से १५। अक्षर ४० से ४८। साइज ९॥। × ४।
(२) पत्र १०। पक्ति ११। अक्षर ४०। साइज १० × ४।

(३) पत्र २ से ७। आदि अन्त के पत्र नहीं।

(४) पत्र ४। पंक्ति २१। अक्षर ६०। साइज १२ ×५॥। । सं० १७५१। उदेई-भक्षित।

विशेष—६२ वे पत्र की अन्त की पंक्ति से कर्त्ता का नाम नगराज जान पडता है।

'नगराज सुगुन लछन अजैराज बूझई सही ॥ ६२ ॥

प्रस्तुत ग्रन्थ मे नर लक्षण के पद्य १२१, नारी लक्षण के ६७, कुल १८८ पद्य है। प्रति नं० २ मे आदि के २ पद्य नहीं एवं ३ अन्य कम होने से १८३ पद्य ही है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) इन्द्रजाल चातुरी नाटकी। स० १९११ लिखित।

आदि—

अथ इन्द्रजाल लिख्यते।

चातुरी भेद विधान मैं कहो जु तुम से जे सुनियो दे कान रे।
अब चातुरी भेद उपदेस बतावो, पनि राखो कुछ छाने रे॥
गोप्य सौ गोप्य चातुरी करणी, जाणे नहि कोय।
प्रगट करी बात सब बिगडी, कछु न तमासो होय॥

अन्त—

हरि सरनो जो इन्द्रजाल जो होय, इन्द्रजाल जो होय के रेणा।
गोप्य जा सांई उडण जो जन, १२ के जाणो जुग मैं जे सारा॥
इति युक्ति सु रहिक जांणा जु चि सोही।
इति इन्द्रजाल चातुरी नाटकी सम्पूर्ण।

लेखन—संवत् १९११ मार्गशीर्ष कृष्ण ७ रविवासरे।

प्रति—पत्र २४। पंक्ति १९। अक्षर २०। साइज ६॥×८॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१५) इन्द्रजाल (नाटक चेटक)

आदि—

अथ तालक लोह हरताल अनुक्रम लिख्यते।

नागर वैल का पांन कै मध्यै काथो मासो १ हरताल मासा ३ छाल चाबीजे पीक वासण मे थूकतां जाय निगलै नहीं।

अथ नाटक भेद लिख्यते ।

> करता करता' जुग साचे सांई, मूरख अपनी कोक जानत नांई ।
> कहेता हूँ बात तू सुनरे प्यारे, सब घट व्यापिक सौ तौ सबसौ न्यारे ॥ ॥
> मन्त्र यन्त्र तन्त्र त सनले सारे, नाटक कौ भेद अब कहूँगा रे ।
> टूटे अग्यांन अरु खूटे ' तारै, दिल की जो सयै सब दूर बारै ॥२॥

अथ चेटके भेद लिख्यते—

दोहा

> तुम कूं कहि सरवन सुनी, साचे नाटक भेद ।
> अब चेटक उपदेश कर, मिटे जीव कौ खेद ॥१॥

अन्त—

> मुख सु बाले बात यह, जो गहलो हुय जाय ।
> सब कपडा फाडत फिरे, वहु ' न लागे उपाय ॥१८॥

अथ दीपावतार लिख्यते इन्द्रजाल प्रयोग ।

लेखन काल—२० वी शताब्दी ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ३५ । पंक्ति १० । अक्षर १५ । साइज ४॥ × ३॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१६) **इन्द्रजाल—**

आदि—

अथ इन्द्रजाल लिख्यत ।

> गुरु विन ज्ञान नहीं ध्यान नहीं हर विनु नर बिन मोक्ष न मुक्ति रे ।
> धरनो करनी सार सकल मैं, इस विध भाखे उक्ति रे ॥१॥
> इन्द्रजाल माल इह गुन की, गुरु गम नहीं पावे रे ।
> वेद पुरन कुरान मैं नाहीं, व्यास न जानी बातें रे ॥२॥
> प्रथम भेद वेद को सारो, सोह मन्त्र लेखे रे ।
> आसन पदम सदन महि बैठे, सूर चन्द्र घर ल्यावे रे ॥३॥

> आसन सयम यतन विध, साध वाद विवाद कहू नधि वाद ।
> मन्तर जन्तर तन्तर सारे, नाटिक चेटिक कहस्यूं रे ॥
> विधि विधान चातुरी वेदक, कोक निरन्तर कहस्यां रे ।
> सांझा वांदा तस्कार विद्या, जोति रूपक सारे रे ॥
> कहत हम तुम सुणे महेश्वर यही वरद तुम पालो रे ।

अन्त —

छटाक खस-खस, सवा तोले खल सुस, साढ़े सात मासे वंस लोचन, पांच मासे गऊ रोचन, पांच मासे सुहागा, चार मासे नर कचुर, चार मासे नौसादर, चार मासे शहद स्वसपी बारीक सवकु पीस मिलाय सहद मिलाय पीस गोली चणा प्रमाण की करे। मसाण की दवा पानी मे घाल प्यावे।

लेखनकाल--१९११ के आसपास।

प्रति--पत्र ६९। पंक्ति १९। अक्षर १९। साइज ६॥×८॥

विशेष—इसमे मत्र जंत्र तंत्र वैद्यक का समावेश है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) इन्द्रजाल—

आदि —

> कौतिक या संसार के, वरणि जाय नहि एक।
> जितने सुने न देखिये देखे सुने अनेक॥

प्रति—गुटकाकार।

(यति रिद्धिकरणजी भंडार, चूरू)

(१८) योग प्रदीपिका (स्वरोदय)। पद्य ६९०। जयतराम। सं० १७९४ आश्विन शुक्ला १०।

अन्त—

> संवत सतरा से असी अधिक चतुर्दश जान।
> आश्विन सुदी दशमी विजै, पूरण ग्रन्थ समान॥९०॥

लेखनकाल—सं० १९४४ फागुण सुदी १३। फलोदी।

प्रति—पत्र २८।

(श्रीचन्दजी गधैया संग्रह, सरदार शहर)

(१९) रमल प्रश्न—

आदि —

अथ रमल प्रश्न —

साधु चंद्रमा उगै तिण दिन थी दिन गिणीजै शुभ दिने रमल का जायचा देखणा १६ ही घर मे देखिये लहीयान किसै घर किसी पड़ी है उस घर से विचार होय तैसी

बात कहणी पहली सकल कुं देखांये ऐही ऐसी सकल कहां पड़ी है जैसा घर मै होय तैसी हुक्म करणा प्रथम चोर प्रश्न चोर की बात पूछे चोर किस तरफ गया है।

मध्य—

सातमै घर मे जैसी सकल होय तैसी और जैती जायगा होय तितरे चोर, चोर सकल १ चोर घर मै आय पडी तो आदमी लम्बा खुबसूरत मुसलमान है दाढ़ी बड़ी है कान बडे है नाक ऊंचा है जवां साफ है मुह सिर ऊपर तिलमसां की सहि-नांणी है लाल सफेद रंग है इति प्रथम ॥१॥

अन्त—

नेम खारज है तो पाछा देतो वखत झगडा मै देगा। सावत दाखल है तो उधारा दैणा नहि दिया तो जावैगा एक मुनकलबा होय तो घणा मांगै तो थोडा दीजै ॥५२॥

लेखनकाल—१९ वी शताब्दी।

प्रति—(१) पत्र १९। पंक्ति १२-१३। अक्षर २९ से ३४। साइज पत्र ९ १०×४।; पत्र १० से १९ इंच ८॥×४॥

(अभय जैन ग्रंथालय)

(२०) स्वरोदय—चिदानन्द। सं० १९०५ आश्विन शुक्ला १० शुक्रवार।

आदि—

नमो आदि अरिहंत, देव देवन पतिराया,
जास चरण अवलम्ब गणाधिप गुण निज पाया।
धनुष पंच सत मान, सप्त कर परिमित काया,
वृषभ आदि अरु अन्त, मृगाधिप चरण सुहाया।
आदि अन्त गुन मध्य, जिन चौवीश इम ध्याइये,
चिदानन्द तस ध्यान थी, अविचल लीला पाइए ॥१॥

अन्त—

कह्यो एह संक्षेप थी, ग्रन्थ स्वरोदय सार।
भणे गुणे जे जीव कुं, चिदानन्द सुखकार ॥४५२॥
कृष्ण सार्द्धा दशमी दिन, शुक्रवार सुखकार।
निधि इन्दु सर पूरणता, चिदानन्द चित धार ॥४५३॥

('प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रंथालय)

(२१) स्वरोदय । पद्य १३० । मयाराम (दादू पंथी) । जहांनाबाद ।

आदि—

अथ ग्रथ सरोदो लिख्यते ।

दोहा

सत चित आनन्द रूप है, अवप अवचल जोय ।
नमसकार ताकूं करूँ, कारज सिद्ध जु होत ॥१॥
गुरु दादूं कुं सुमर नित बनवारी सिर नाय ।
कव अख्यर धर साध सब, हूँ जो सल सिहाय ॥२॥
अचारज मिव जानीयें, प्रगट किया जग सोय ।
नाम सरोदै ग्रन्थ को, मैं वरन्यो अब सोय ॥३॥

अन्त—

दादू पन्थी मुक्त उपासी, जहानाबाद ज दिल्ली वासी ।
जिन जो जुगत भली यहुं आनी, मयाराम जांनी ॥१३०॥

लेखनकाल २० वीं शताब्दी ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र १९ । पंक्ति १० । अक्षर १५ । साइज ४॥ × ३।

(अभय जैन ग्रंथालय)

(२२)स्वरोदय— । पद्य २७ । बल्लभ ।

आदिः—

बुद्धि विमल दीजै कविहि, क्यो सुगुन सुभ छन्द ।
कथौं सुरोदय ज्ञान कछु, गुरु गणपति पग वंदि ॥ १ ॥

× × ×

जैसें दधि तैं माखन लीजै, छाडि हल हल अमृत पीजै ।
मथि के सकल सुरोदय ग्रथ, रच्यौ सुलभ त्यों भाषा पन्थ ॥ २६ ॥

दोहा—

संस्कृत वानी कठिन, समझन पंडित राज ।
सुगम ग्रन्थ बल्लभ रच्यौ, हृदयराम कै राज ॥ २७ ॥

इति सुरोदय नक्षत्रमाला ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति— पत्र १ । पंक्ति १६ । अक्षर ५० । साइज १० × ४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२३) स्वरोदय। बैकुण्ठदास।

आदि—

दोहा—

ज्योतिष दीपक जगत मै, जो प्रापत किह होय।
जाके पढै मनुष्य को, गुह्य सुगम सब लोय॥ १॥
मूक प्रश्न गर्भ त्रय, मेघ घमाघम जानि।
लाभालाभ सुख दुःख जो, बैकुंठ सत करे मानि॥ २॥

अन्त—

ससि स्वर सांस बुध सुक्र है, प्रश्न करै जु कोय।
असुभ नास सुभ होयगो, स्वर परीच्छा सच होय॥ ५९॥

इति स्वर प्रिच्छा बैकुण्ठदास कृत स्वरोदय।
लेखनकाल—सं० १९१७ मि० वि० १।

(वृहद् ज्ञानभंडार)

(२४) स्वरोदयः — । दोहा ६४।

आदि—

सिवचरण करि वन्दना, ज्ञान सुरोदय देह।
प्राण पाय इला पिंगला, असुभ फल जेह॥ १॥

अन्त—

दाहिनी नाड़ जब ही बहे। कय तत्व आगिनी तत्वकहे॥
जामे जो चाले अरु आवे। निहचे सो नर नासहीं पावै॥ ६४॥

(वृहद् ज्ञान भंडार)

(२५) स्वरोदय भाषा (गद्य)

आदि—

अथ सरोदो लिखते भाषाकृत

दोहा—

पठन बीज पुसतग तहां, पिंड ब्रह्मंड बखानो।
तत्व ज्ञान सुरदसों निवर्ति प्रवरती जानो।

पिंडे सो ब्रह्म है प्रथवी तत्व फेरि दोउ सूर पच पंच तत्वन के पच पंच भेद।

मध्य—

जो सूर जानतो नहीं होय तौ नेत्रन की कोर सौं आरसी मैं जानिये।

तत्व कान नाक नेत्र मूदे। अगुरीया तौ पाछे खास मारै। नैत्रन की कोर खोलि दिखाय। तत्व पहिचाने मडल परं सो जानिये।

× × ×

अन्त—

विश्वासी होय ज्ञाति स्वमन होइ बात सत्य कहे दुष्ट की संगति न करे निन्दक की संगति न करे ताकुं यह स्वरोदय ज्ञान दीजे। इति श्री शिव शास्त्र स्वरोदय संपूर्ण।

लेखन-काल—लिखित जीवण सं० १९५७ मी आसोज वदि ११ वार बुधवासरे सहर करोली मध्ये संपूर्ण॥

प्रति—पत्र ४। पंक्ति १६ से २३। अक्षर ४३ से ५५। साइज १०×४॥

(अभय जैन-ग्रन्थालय)

(२६) स्वरोदय भाषाटीका।

आदि—

शिव कुं नमस्कार करिके देहस्य ज्ञान कहतु—पु और इडा-पिंगला नाडी तिनके योग थे भावी शुभाशुभ फल- ऐसा स्वरोदय कहत है।

अन्त— अर्थ—

निश्चल बैठि कै अंजलि मध्य ले मोर आगे उचो डारिया तब जिनको अफल गिरे सो पूर्ण अङ्ग बूझिवे। बाथे शुभाशुभ विचार करणा। इति स्वरोदय विचार लिखितं॥ ६॥

विशेष—६६ संस्कृत श्लोकों का अर्थ

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ११। पंक्ति १३। अक्षर २६। साइज ८×४॥।

(अभय जैन-ग्रन्थालय)

(२७) स्वरोदय भाषाटीका। लालचन्द। सं० १७५२ भा० सुदि। अक्षयराज के लिये रचित

आदि—

अथातः संप्रवक्ष्यामि शरीरस्थ स्वरोदयं।
हंसचार स्वरूपेण येन ज्ञान त्रिकालजं॥ १॥

टीका—

अब मैं स्वरोदय विचार कहूँगा आपुनै शरीर मैं जो व्याप रह्या है। स्वरोदय का नाम हंसचार कहीये जिण हस चार जाणये तें भूत १, भविष्यत २, वर्तमान ३, त्रिकाल ज्ञान जाणिये ॥ १ ॥

अन्त—

पीत वर्ण बिन्दु की चमत्कार दीसे तो सावेर पृथ्वी तत्व वहे है। श्वेत वर्ण बिदु दासे तौ पानी तत्व वहे है, कृष्ण बिन्दु दीसे तौ पवन तत्व वहै है, रक्त बिदु दासै तो अग्नि तत्व वहै है। इति स्वरोदय शास्त्री भाषा समाप्त।

दोहा—

नाम स्वरोदय शास्त्र को, विचित्र।
याकी अर्थ विचारणा, ताके करियो मित्र ॥ १ ॥
संवत् सतरे ऐ ने, भादव को पख सेख।
लालचन्द भाषा करी, श्री अखयराज के हेत ॥ २ ।
सहज रूप सुन्दर सुगण, कवित्त चातुरी शक्ति।
जाकै हिरदै नित बसे, देव सुगुरु की भक्ति ॥ ३ ॥
अखयराजजी अति निपुण, बहु विधि विद्यावत।
अक्षयराज प्रताप जसु, सदा करो भगवन्त ॥ ४ ॥

लखनकाल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ६ (अंतिम पृष्ठ खाली) । पंक्ति १४ । अक्षर ५० । साइज ८॥ × ३॥

(महिमाभक्ति भंडार)

(२९) स्वरोदय विचार (गद्य)

आदि—

अथ स्वरोदयरो विचार लिख्यते ॥ ईश्वरोवाच ॥

हे पारवती ! अब मै सरोदय को विचार कहूंगा जिस सरोदय से भूत भवद (भविष्य) तथा वर्तमान तीनो काल की खबर पडे फेर आपणा शरीर मे जो कुछ व्यापार होवे है तिस का नाम हंसाचार कहिये।

विशेष—प्रस्तुत प्रति २ पत्रों की अपूर्ण है। १९ वीं शताब्दी की लिखित है। इसी प्रकारअन्य एक अपूर्ण प्रति है, उसमे पाठ भिन्न प्रकार का है।

यथा—"श्री महादेव पारवतीरो सिरोघो लिख्यते—

"महादेव पारवती नै सुणावै छै अथ वारता है सो कहत हुं । हंस रूपी देह मं है सो तोनुं कहुं छूं तूं सुण सीख ज्युं कालरूपी होय ज्युं । हेपारवती ए गुप्त वारता है गुज्य वारता है तंत सार है सो तो ने कहुं छूं ।

प्रति—इस प्रति के ५ पत्र हैं, अन्न के पत्र प्राप्त न होने से अपूर्ण है ।

(अभय जैन-ग्रन्थालय)

(ठ) हिन्दी ग्रन्थों की टीकाएं

(१) विद्यापति कृत कीर्तिलता की संस्कृत टीका।

आदि—

श्री गोपाल गिरा पगुरपि शैल विलंघने।
तदादेशवशादेषा क्रियते मगलीकम् ॥ १ ॥
तिहुअणेत्यादि त्रिभुवन क्षेत्रे किमिति तस्य कीर्तिवल्ली प्रसारिता।
अक्षर समारम्भ यदि मचेन बधामि ततोहं भणामि निश्चित।
कृत्वा यादृशं तादृश काव्यम्।

× × ×

श्रोतुर्ज्ञान वदान्यस्य कीर्तिसिंह महीपते।
करोतु कवित काव्य भव्य विद्यापतिः कविः ॥ ५ ॥

अन्त—

शुभ मुहूर्ते अभिषेक कृतः बान्धव जनेन उत्साहकृत
तीरभुक्त्या प्र सो रूप. पातिसाहेन य ' कृतं कीर्तिसिंघो
भवद्भूपः। इति चतुर्थपल्लवः इति कीर्तिलता समाप्ता।

× × ×

श्री श्रीमद्गोपालभट्टानुजेन श्री सूरभट्टेन स्वभर्तार्थे लिखापितमिदम्।

लेखन-काल—नेत्र (२) नग (७) रसा (६) रश्मीशा (१) मितेब्दे विक्रमा
ये असिते स्वष्टयां विखितं भ्रगुवासरे।

प्रति—पत्र २२। पंक्ति १२। अक्षर ६०। साइज १४ × ६

विशेष—मूल ग्रन्थ का आद्य पद इस प्रकार है।

तिहुअण खेत्तहि कांइ तसु, किमि वल्लि पसरेइ।
आखर खम्भारम्भ जउ मंचा बंधि न देइ ॥ १ ॥

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२) बिहारी-सतसई की संस्कृत टीका। वीरचन्द्र शिष्य परमानंद। र० १८६० माघ। बीकानेर।

आदि —

> नत्वा श्रीशं जिनाधीशं, श्रीपार्श्वं पार्श्वसेवितं।
> बिहारीकृतग्रन्थस्य, वक्ष्ये व्याख्या (ख्यां) सुबोधिकां ॥ १ ॥
> मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोइ।
> या तन की झांई परई, स्याम हरित दुति होइ ॥ २ ॥

व्याख्या

सा राधा नाम्नी नागरी मम भव बाधा हरतु यस्य राधायाः तनोर्द्युतिः पतति कृष्णा काये तदा श्यामवर्णः हरित द्युतिर्भवति कृष्ण शरीर कान्ति। कृष्णा राधाया गौर वर्णं तया मिश्रिता हरित द्युतिर्भवति गौरवर्णं। मिश्रिता श्यामवर्णौ हरिद्वर्णं इति प्रसिद्ध द्वितीयोर्थः—स राधा नागरिः नामकः कृष्णो मम भव बाधा हरतु यस्य कृष्णस्य तनु द्युतियंत्र करे पतति तदा श्यामं पाप हरि दूरास्थात् नद्युति तत् दुर्युः स्यात् ॥ तृतीयार्थस्तु - वैद्यं प्रति रोगिण उक्तिः - हे वैद्य मम भवबाधा रोग वा हरतु तदा वैद्ये-नोक्तं राधा नागरि सोई राधा इति नागरि सोंठ सोई मिश्री को वा यान नै। कृष्ण झांई पतति सा हरि सर्व भैरजै दर्श स्यात नद्युति होइ सा पूर्वोक्ता द्युतिः तद्युति स्यात तुर्यार्थस्तु कृष्णशरीर द्युतिर्नाश्रित्य हरित द्युतिरूपमेव ॥ १ ॥

अन्त—

> जद्यपि है सोभा घनी मुक्ता हल मैं लेख।
> गुहौ ठौर की ठौर में इरमैं होत विसेख ॥ ७११ ॥
> इति बिहारीलाल कृत सत सतिका सम्पूर्णम् ॥
> देखो प्यारी ऊठकै वा आयो है द्वार।
> चन्द्रवदनी मृगिकै ऊठी हरमत हर्ष अपार ॥ इत्याद्यक्षरः ॥
> व्योमरु कन्नव मुखेभ काम्य निमिते सवत्सरे वत्सरे
> माघे मास शुक्लदले धनंजयतिथौ दैत्येजवारे वरे।
> हर्म्यव्यूह विभूषते जित कुबेराधिष्ठित स्थानके।
> श्रीमत्सूरतसिंह भूप विहितैश्वर्ये पुरे विक्रमे ॥ १ ॥
> श्रीमन्नागपुरीय लुप्तगणे राकाब्जवर्णामले।
> श्रीलक्ष्मीन्द्र गणाभिधे सुविदिते गच्छे सतां विश्रुति।
> श्रीमच्छ्रीमुनि राजसिंह गुरवः सन्नामनामानुगाः।
> तच्छिष्या गुणरत्न रत्न सरणाः विद्वल्ललाटंतपाः। १।
> श्रीमत्तीर्थं कर प्रणीत समय श्रद्धालवः सूरताः।
> कार्याकार्य विचार सारनिपुणाः श्री वीरचंद्राह्वयाः।

तत्पादांबुजरेणु रामनुज प्रामोदकाराय वै ।
नाना स्वादुभूतां व्यक्त परमानंदः परा मोदतः । ३ ।
माथुरीय द्विकुले विहारी ब्राह्मणो भवेत्
तद्विनिर्मितम ग्रंथस्य पथ्यां तथ्यां रसान्वितं । ४ ।

इति बिहारीसप्तसतिकावृत्तिः समाप्ताः ॥

लेखन काल—सं० १८८७ मिती फागुण वदि ७ तिथौ शुक्रवारे श्रीमद्विक्रमपुरे श्रीकीर्तिरत्नसूरिशां (सं) तानीय वा श्री मयाप्रमोदजिद् गणिः तच्छिष्य पं० लब्धि विलाश लिखितं ॥ श्री ॥

प्रति—पत्र ५३ । पंक्ति १७—१८ । अक्षर ५० । साइज ९॥। × ४॥।

(वर्द्धमान भंडार)

(३) (केशवदास कृत) रसिकप्रिया की टीका। समर्थ । सं० १७५५ श्रावण सुदि ५ सोमवार । जालिपुर ।

आदिः—

अथ रसिकप्रियायाः वर्त्तिलिख्यंते—

गीर्वाणनाथ विनताद्भुत मौलिमाला, माणिक्य कांति सुविशिष्ट नखांशुजालं ।
कल्याणकंदमतुलं नवनीरदाभं स्तौमि प्रभुं सुफलवर्द्धिपुरस्य पार्श्वम् । १ ।
कुंदेन्दुहार निकरोज्वलचारुवर्णा वीणा सु पुस्तकधरा कमला सवर्णा ।
श्वास्तेतनीर जवरासन संस्थिता च ज्ञानप्रदा भवतु मोखलु सारदा सा । २ ।
राधां तनुच्छवि भरा वलितो मुरारिः संराजते हरितवर्णं तनुर्हतारिः ।
ध्यायन्मुदा ललितकांति धरां च राधां सो मे प्रभुर्हरतु भूरि भवस्य बाधां । ३ ।
श्रीमद्गुरुः सुमतिरत्न गणि प्रधानः कारुण्यपुण्यमिलयो महिमा निधानाः ।
तत्पादयुग्म सरसीरुहलीनभृंगः शिष्यः समर्थ विबुधो वरवाक् तरङ्गः । ४ ।
गुरोः प्रसादादधिगम्य भाव कुर्वे सुवृत्तिं रसिकप्रियायाः ।
विशिष्ट भावामृतपूरितायाः प्रमोदनी नाम मनः प्रमोदात् । ५ ।
सर्व्वा सुभाषा सुविशेष रम्या व्रजस्य भाषा ललिता सुवाणी ।
मुखेरमुखे भिन्नतरार्थं सह्लादहं प्रवक्ष्ये खलु सम्प्रदायात् । ६ ।
प्रायशो व्रजभाषायाः केनापि न कृता पुरा ।
सुसंस्कृत मयी टीका सुगमार्थं प्रबोधिनी । ७ ।

इह खलु ग्रंथारंभे कवि· श्री केशवदासः शिष्ट समय परिपालनाय स्वाभिमत फलसिद्ध्यर्थं प्राप्तिरिप्सित ग्रन्थ प्रतिबंधक विघ्नविघातकं विशिष्ट शिष्टाचारानुमिति श्रुतिबोधात्मकं समुचितेष्टदेवता श्री गणेशस्तुति कथन द्वारा मंगलमाचरति । एकरदनेति—तथा च ग्रन्थादौ विषयप्रयोजन सम्बन्धाधिकार चतुष्टयमवश्यं वाच्यं तत्र शृंगारादिरसवर्ग

विषय प्रयोजनं च रसिक जनमनःप्रमोदापत्तिः वाच्यवाचकभावःसम्बन्धःजिज्ञासुरधिकारी चेति अपि च अपारसंसारपारावार बहुल भवभ्रमणावर्त पतित प्राप्तातर्कितपथ्थितमनुष्यावतारस्य लब्ध घुणाक्षरप्रकारस्य प्राणिनः फलं द्वयं भोगो योगश्च तत्राद्यः भुज्यते शब्दादिभिरिति भोगः सुखं यदमरः भोगः सुखेस्त्र्यादि भृतावहेश्च फणिकाययोरिति।

अन्त—

सुर भाषा तें अधिक है, ब्रज भाषा सौं हेत।
ब्रज भूषण जाकों सदा, मुख भूषण करि लेत ॥१७॥

व्याख्या—

सुर भाषा संस्कृत भाषायाः सकाशात् व्रजभाषा अधिकास्ति व्रजभूषण कृष्णस्त स्वमुखं भूषयति यस्याः पठनात् मुख शोभा भवतीत्यर्थः ॥१७॥

इति श्री सकल वाचक चूड़ामणि वाचक श्रीमति रत्नगणि शिष्य पण्डित समर्थाह्वेन विरचितायां रसिकप्रिया टीकायां अनरस वर्णनो नाम षोडशः प्रभावः ।१६।
समाप्तोयं रसिकप्रिया भाषाग्रन्थ—ग्रन्थाग्रन्थ १६००

श्री वीर तीर्थेश जिनाप्रणीतः तुर्योर काले गणवो बभूव।
स्वामी सुधर्म्मो कृत साधु कर्म्मा चतुष्टय ज्ञानधरो धरांया ॥१॥
तस्यैव सत्साधु परम्परायामशीति चत्व रि गणाः बभूवु।
तेषु प्रधानः खलु चन्द्र गच्छः राका शशांकादधिकोहि स्वच्छ ॥२॥
राज्ये शुभे श्री जिनचन्द्रसूरेः सौभाग्य भाग्योदित रत्न मौलेः।
सदामुदाशं दधतो मुनीनां महीक्षितानामपि पूजितस्य ॥४॥
श्रीमत्सागरचन्द्र सूरिरवत् तस्मिन् गणे शुद्ध धीः।
स्फूर्त्तिर्यस्य जिनागमे च महती वारांनिधि ज्ज्योतिषः।
साध्वाचार रतो विशुद्ध हृदयो लब्ध प्रतिष्ठो महान्।
यस्मै क्षेत्र पति बंभूव सतत वीरः सहायी सदा ॥५॥
तन्नाम शाखा प्रभृता गरिष्टा न्यग्रोधशाखे वरसेवरिष्टा।
तत्पाद राजीव प्रकाशनोद्यत् प्रद्योतनो निर्जित मोहमल्लः ॥६॥
भुवन रत्न मुनीश्वर सुन्दरः प्रवर साधु गुणोत्कर बंधुरः।
सम जनिष्ट ततो मुनि पुगवो विमल कीर्त्ति समुज्ज्वल वैभः ॥७॥
सूरि स्ततो भूव सुधर्मरत्नो विशुद्ध बुद्धि कृत धर्म्म यत्नः।
रत्नाकरो निर्मल सद्गुणानां मह्यां च मान्योखिल सज्जनानां ॥८॥
श्रीमानुपाध्याय पदाभिरामो पुण्यादिमो बल्लभ पूर्ण कामः।
धर्म्मं प्रियो हर्ष सुधाभितृप्तिः सत्वानुकंपा शुभ चित्त वृत्तिः ॥९॥
तत्पाद पकेरु ह संस्पृहालु बयादि धर्म्मो विबुधो दयालुः।
तच्छिष्य मुख्यो खिल शास्त्र पद्मा वर्यो मुनीनां स्वधर्म सद्मा ॥१०॥

तदीय शिष्यो मुनिरत्न धीरो गुणैः समुद्रादभि यो गभीरः ।
ततो बभौ वाचक वर्य धुर्यो ज्ञानप्रमोदो द मंत्र वीर्य ॥११॥
षट् तर्काद्भुत बोध युक्ति कुशलो वार्ता गुरोः सन्निगः ।
वर्हिष्णु प्रतिमाभिमान विलसद्वादीभ पंचाननः ।
निष्णातो निखिलागमेषु विमले मंत्रे गंज स्तभकृत् ।
विख्यातो भुवने गरिष्ट महिमा ज्ञानप्रमोददो गुरुः ॥१२॥
तेषां हि शिष्यो गुणनंदनारथः सन्त्शील मुक्तो नव नीरआख्रः ।
वैराग्यतत्स्वपक्ष गृहस्थभार श्रीवाचको ऽभूत् विदितार्थ सारः ॥१३॥
तदीय पक्कैरव पार्वणेंदुः सद्वाक्य धारामृत तुल्य बिंदुः ।
गुणेन्द्रियो यो महिमा गरिष्टः श्रेष्टः सुखी साधु गणै वरिष्टः ॥१४॥
समय मूर्ति गुरुजित मेनाथः सकल नागर रंजित सत्कथः ।
परम धर्म्मरतः करुणालयः सुपद वाचकतां जगृहे भयः ॥१५॥
तच्छिष्यौ दधतुः श्रेष्टो वाचकस्य पदोत्तम ।
मुख्यो हि नेमहर्षश्च मतिरत्नो महामुनिः ॥१६॥
गुरुमंदीयो मतिरत्न न मा शीतांशु बिम्बादपि योहि सौम्यः ।
स्वार्थस्य बुद्धिः परमार्थ सिद्धौ गुणेन्द्रियो जागृत हस्त सिद्धि ॥१७॥
तदीय शिक्षैर्गुरुभक्ति दक्षै विद्वत् समर्थे विदितागमार्थैः ।
व्यधायि वृत्ती रसिक प्रियायाः दक्षो चिता सभ्य मनोरमाया ॥१८॥
एषा विशेषा द्विकरार्थ युक्ता व्रजस्य भाषा सरसा सुरम्या ।
नव्यार्थ भावोद्घटनासु शक्ताः तस्मात् विशोध्या. कविभि. पुराणैः । १९॥
संवद्बाण शराब्धि शीतगुर्मिते मासे शुभे श्रावणे ।
पंचम्यां शशिवासरे शुभ दिने पक्षे लसत्प्रोज्वले ।
श्री मज्जालिपुरे सदा सुख करे सिंधोत्तरे सुन्दरे ।
तत्रालेखि समर्थ साधुभिरिय वृत्ति मनोमोदिनी ॥२०॥
यावन्मेरु धरा पीठे यावत्तिष्टति मेदिनी ।
तावन्नंदतु टीकेयं साधु शब्दार्थ सुंदरा ॥२१॥
अदृष्टदोषान्मतिविभ्रमाद्वायत्किंचिदूनं लिखितं मयात्र ।
तत्सर्व मार्यैः परिशोधनीयं संतोषतः सर्व हितैषिणो वै ॥२२॥
मंगलं लेखकस्यापि पाठकस्यापि मगलं ।
मङ्गलं सर्व लोकानां भूमि भूपति मङ्गलं ॥२३॥
तैलाद्रक्षेज्जलाद्रक्षेत् रक्षेत् शिथिल बंधनात् ।
परहस्त गतां रक्षेदेव वदति पुस्तिका ॥२४॥
भग्न दृष्टि कटि ग्रीवा चाधो दृष्टि रधो मुखं ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परि पालयेत ॥२५॥

लेखन काल—संवत् १७९९ वर्षे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ भृगुवारे वाचनाचार्य श्री श्री १०४ श्री श्री देवधीरगणितत् शिष्य पं० प्रवर श्री हर्ष हेमजी शिष्य

पं० चतुरहर्ष लिखितं श्री बीकानेर मध्ये चतुर्मासी स्थितेन ।।श्रीरस्तु।।म०। श्री जोरावरसिहजी ।

प्रति—पत्र ८१ । पंक्ति १६ । अक्षर ५२ । साइज ४० × १।

(दानसागर भंडार)

(४) (केशवदास कृत) शिखनख की भाषा टीका । संवत् १७६२ से पूर्व ।

आदि—

अथ शिख नख वर्णन लिख्यते । काव्य ।

> गीर्वाण वाणी पु विशेष बुद्धिः तथापि भाषा रस लोलुपोहं ।
> यथा सुराणाममृतेषु सत्सु स्वर्गाङ्गनामधरासवे रुचिः ।। १ ।

अर्थ

केसवदास कहै छै जे माहरी मति संस्कृत वाणी नै विषै बुद्धि विशेष छै तो पिण हुं भाषा रस ने विषै लोलपी छु ते केहनी परै जिम देवतां ने देव लोक माहे अमृत थकां पिण देवांगना ना अधर ना रस नी वांछा करै अधर रसनी घणी इच्छा तिमजंपिण सस्कृत भाषा जांणु हु तौ पिण व्रज भाषा नी वांछा घणी हैं मुझनें ।

अथ छूटा केश वर्णन सवैया ।।

अन्त—

कमला जे लक्ष्मी तेहनुं स्थानक जांणीनें कै आणीयै कामना जे पांच बाण तेहना जे जोतिवंत फल कहनां भालोइ छै ते शोभै छै कै हूं जाणुं माहरे जाण पणै सुंदर सुंदरीना नखज छै । २८ ।

इति श्री केशवदास विरचित शिख नख संपूर्णः । श्रीरस्तु ।

लेखन काल—संवत १७६२ वर्षे मिगसर सुदि ८ भौमे लिखितं श्री भुज मध्ये पं० भागचंद मुनिना । श्री ।

प्रति गुटकाकार । पत्र ८ । पंक्ति ३३ । अक्षर २२ । साइज ४। × ६

(अभय जैन ग्रन्थालय)

परिशिष्ट १.

[ग्रन्थकार-परिचय]

(१) अभयराम सनाढ्य (१६)*—जैसा कि आपने 'अनूप शृङ्गार' ग्रंथ में उल्लेख किया है आप भारद्वाज कुल, सनाढ्य जाति, करैया गोत्रीय केशवदास के पुत्र एवं रणथंभोर के समीपवर्त्ती वैहरन गाँव के निवासी थे। बीकानेर नरेश अनूपसिंहजी आप पर बड़े प्रसन्न थे और 'कविराज' नामसे संबोधित किया करते थे। महाराजा अनूपसिंहजी की आज्ञानुसार ही आपने सं० १७५४ के अगहन शुक्ला रविवार को 'अनूप शृङ्गार' ग्रन्थ की रचना की।

(२) आनन्दराम कायस्थ भटनागर (१४)–आप सुप्रसिद्ध कवि काशीवासी तुलसीदासजी के शिष्य थे। आपके रचित "वचन-विनोद" की प्रति सं० १६७९ की लिखित होने से उसका निर्माण इससे पहले का ही निश्चित होना है। प्रतिलेखक ने आपका विशेषण "हिसारी" लिखा है अतः इनका मूल निवासस्थान हिसार ज्ञात होता है। मिश्रबन्धु विनोद पृ० ३४७ मे कोकसार या कोकमंजरी के कर्त्ता को "आनन्द कायस्थ, कोट हिसार के" लिखा है। इस ग्रन्थ की प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी मे सं० १६८२ लिखित उपलब्ध है। समय निवासस्थान और नाम पर विचार करते हुए कोकसार-रचयिता आनन्द वचन-विनोद के आनन्दराम कायस्थ ही प्रतीत होते है।

(३) उदयचंद (१५, १०९)—ये खरतरगच्छीय जैन यति या मथेन थे। महाराजा अनूपसिंहजी से आपका अच्छा सम्बन्ध था। उन्हीं के लिये सं० १७२८ के आश्विन शुक्ला १० कुजवार को इन्होंने बीकानेर मे 'अनूपरसाल' ग्रन्थ बनाया। आपका 'पांडित्य दर्पण' नामक संस्कृत ग्रन्थ (सं० १७३४ के सावन सुदी में) पूर्वोक्त महाराजा की आज्ञा से रचित उपलब्ध है जिसकी आवश्यक जानकारी Adyar Library Bulletin मे पांडित्य दर्पण ऑफ श्वेताम्बर उदयचन्द्र नामक लेख मे प्रकाशित है। महाराजा सुजानसिंहजी के समय (सं० १७६५ चैत्र) मे आपने 'बीकानेर गजल' बनायी।

(४) उदयराज (३५)—आप के रचित 'वैद्यविरहिणी प्रबन्ध' मे कवि-परिचय एवं ग्रन्थरचना-काल का कुछ भी निर्देश नहीं है, पर विशेष संभव ये उदय-

* पृष्ठाङ्क

राज वे ही हैं जिनके रचित हिन्दी एवं राजस्थानी के लगभग ५०० दोहे उपलब्ध हैं। यदि यह अनुमान ठीक है तो आप खरतरगच्छीय (चंदन मलयागिरी चोपई के रचयिता) भद्रसार के शिष्य थे। आप अच्छे कवि थे—आपकी निम्नोक्त अन्य रचनाऐ हमारे संग्रह मे हैं।

(१) गुणबावनी सं० १६७६ वै० सु० १५ ववेरइ।

(२) भजन छत्तीसी सं० १६६७ फा० व० १३ शुक्रवार, मांडावइ।

भजन छत्तीसी मे कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि यह ग्रन्थ ३६ वर्ष की उम्र मे बनाया अतः इनका जन्म सं० १६३१ निश्चित होता है। आपने अपने पिता का नाम भद्रसार, माता का नाम हरषा, भ्राता सूरचंद्र, मित्र रत्नाकर, निवासस्थान जोधपुर, स्वामी उदयसिह, पत्नी पुरवणि, पुत्र सूदन का उल्लेख किया है। इन बातो को स्पष्ट करने वाले दो कवित्त नीचे दिये जा रहे हैं:—

साम समपे उदयसिंह वास समपे ओधपुर।
समपि पिता भद्रसार जन्म समपे हरषा उर।
समपि भ्रात सूरचंद्र मित्र समपे रयणायर।
समपि कलित्र पूरवणि समपि पुत्र सुदन दिवायर।
रूप अने अवतार ओ मों समपे आपज रहण।
उदैराज इह लधों इतों, भव भव समपे मह महण ॥ ३२ ॥

× × ×

सौलहेसे सतसठे, कोध जन भजन छत्तीसी।
मोनुं वरस छत्रीस, हुन्ब मनि आवइ ईसी।
वदि फागुण शिवरात्रि, श्रवण शुक्रवार समूरत।
मांडावाइ मझारि, प्रभु जगमाल पृथी पति।
भद्रसार चरण प्रणाम करि, मैं अनुक्रमि मंख्या कवित।
त्रैलोक छत्तीसी बांचता दुःख जाइ नासैं दुरति ॥ ३७ ॥

उदयराज या उदयकृत चौवीसजिन सवैयादि का संग्रह भी उपलब्ध है वे सब हिन्दी में हैं। प्रमाणाभाव से उनके रचयिता प्रस्तुत उदयराज ही हैं या उससे भिन्न अन्य कोई कवि है, नहीं कहा जा सकता।

मिश्र बन्धु विनोद भा० १ पृ० ३९६ मे उदयराज जैन जति बीकानेर रचित फुटकर दोहे, गुणमासा तथा रंगेजदीन महताब, रचना १६६० के लगभग, आश्रयदाता महाराजा रामसिहजी को लिखा है इनमें से फुटकर दोहे तो ठीक इन्ही के हैं बाकी

की दोनों रचनाओं के नाम अशुद्ध प्रतीत होते हैं। संभव है गुणमासा गुणबावनी हो। रायसिंहजी के आश्रित होने की बात भी सही नहीं है। पूर्वोक्त पद्यों से ये यति होकर मथेन (गृहस्थ) सिद्ध होते हैं।

(५) उस्तत पातशाह (६१)—इन्होंने सं० १७५८ के मिगसर सुदी १३ बुधवार को सिन्ध प्रान्तवर्त्ती भेहरा नामक स्थान मे रागमाला (राग चौरासी) भरत के ग्रन्थानुसार और शाह के राज्य-काल में बनाई।

(६) कर्णभूपति (१९)—इनके रचित कृष्णचरित्र सटीक के अतिरिक्त कुछ ज्ञात नहीं। संभव है ये बीकानेर नरेश कर्णसिंहजी हो। प्रति अपूर्ण प्राप्त है अत: अन्त का अंश मिलने पर संभव है इसके रचयिता के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त हो।

(७) कल्याण (१०२, ११४)—ये खरतरगच्छीय यति थे। इन्होंने सं० १८३८ के माघ बदी २ को गिरनार गजल एवं सं० १८६४ के भाद्रवा शुक्ला १४ को दौलत (रामजी) यति के लिये सिद्धाचल गजल बनाई।

(८) कल्ह (९६) इन्होंने जहाँगीर के राज्यकाल मे लाहोर मे दिल्ली-राज्य-वंशावलि बनाई। इसका रचनाकाल "तौरें गगण अखरत चंद" कातिक बदी १ रविवार बतलाया है। संवत् स्पष्ट नही हो सका, संभव है पाठ अशुद्ध हो।

(९) किशनदास (९७)—इन्होंने औरङ्गजेब के राज्यकाल मे उपरोक्त कवि कल्हकृत दिल्ली राज्य वंशावलि को आदि अन्त का कुछ भाग अपनी ओर से जोड़कर अपने नाम से प्रसिद्ध करदिया है मध्य का भाग कल्ह की वंशावलि से ज्यों का त्यो ले लिया गया है। जो वास्तव मे साहित्यिक चोरी है।

(१०) कुंवर कुशल (३४)—ये तपागच्छीय कनककुशल के शिष्य थे। कच्छ के राजा लखपत के आदेश से उन्ही के नाम का लखपतजससिन्धु नामक ग्रन्थ बनाया। कच्छ के इतिहास मे लखपत का समय सं० १७९८ से १८१७ लिखा है अत: कवि एवं ग्रन्थ का समय इसी के मध्यवर्ती है। कच्छ इतिहास के अनुसार कनककुशलजी ने राजा लखपत को ब्रजभाषा के ग्रन्थो का अभ्यास करवाया था। महाराजा ने इनके तत्वावधान में वहाँ एक विद्यालय स्थापित किया था जिसमें पढ़ने वाले विदेशी विद्यार्थियों को राज्य की ओर से पेटिया (भोजन का समान) दिये जाने की व्यवस्था की थी। सं० १९३२ मे कनक कुशलजी की शिष्य परम्परा के भट्टारक जीवनकुशलजी की अध्यक्षता मे यह विद्यालय चलरहा था, पता नहीं वह अब चालू

है या नहीं। कनककुशलजी के शिष्य कुंवर कुशलजी के रचित लखपतजससिन्धु ग्रन्थ का उल्लेख भी कच्छ के इतिहास में पाया जाता है।

मिश्रबन्धु विनोद पृ० ६६७ में इनका एवं इनके रचित लखपतजससिन्धु का उल्लेख है पर इन्हे जोधपुर निवासी बताना सही नहीं है। विनोद में कुंवर कुशल को कनक कुशल का भाई बतलाया गया है पर ये गुरु-शिष्य थे, यह हमे प्राप्त प्रति की प्रशस्ति से स्पष्ट है।

(११) कृष्णदत्त विप्र (११९)—इन्होने 'ज्योतिषसार भाषा' या कवि-विनोद ग्रन्थ बनाया। विशेष वृत्त अज्ञात है।

(१२) कृष्णदास (५६)—इन्होंने बीकानेर निवासी जैन जोहरी बोथरा कृष्णचन्द्र जो कि दिल्ली में रहने लगे थे, के लिये रत्न परीक्षा ग्रन्थ सं० १९०४ के कार्त्तिक कृष्णा २ को बनाया।

(१३) कृष्णानन्द (४३)—गन्धककल्प आँवलासार ग्रन्थ के अतिरिक विशेष वृत्त ज्ञात नहीं है। मिश्रबन्धु विनोद के पृ० १०२८ मे कृष्णानन्द व्यास का उल्लेख है वे इनसे भिन्न ही सम्भव हैं।

(१४) केशरी कवि (३३)—इन्होंने सुजान के लिये रसिकविलास ग्रन्थ बनाया।

(१५) खेतल (१००,१०३)—आप खरतरगच्छीय जिनराज सूरिजी के शिष्य दयावल्लभ के शिष्य थे। दीक्षानंदी सूची के अनुसार आपकी दीक्षा सं० १७४१ के फागुन वदी ७ रविवार को जिनचन्द्र सूरिजी के पास हुई थी। आपने अपना नाम पद्यो में खेतसी, खेता और कहीं खेतल दिया है। नन्दी सूचि के अनुसार इनका मूल नाप खेतसी और दीक्षित अवस्था का नाम दयासुन्दर था। आपने चित्तौड़गजल सं० १७४८ सावन वदी २ और उदयपुर गजल सं० १७५७ मिगसर वदी में बनायी थी। इनके अतिरिक्त आपकी रचित बावनी हमारे संग्रह मे है जिसकी रचना सं० ७४३ मिगसर सुदी १५ शुक्रवार दहरवास गाँव मे हुई थी। उसका अन्त-पद इस प्रकार है:—

संवत् सत्तर त्रयाल, मास सुदी पक्ष मगस्सिर।
तिथि पूनम शुक्रवार, थयी बावनी सुथिर।
बारखरी रो बन्ध, कवित्त चौसठ कथन गति।
दहरवास चौमास समय, तिणि भया सुखी अति।

श्री जैनराजसूरिसघर, दयावल्लभ गणि तास सिखि।
सुप्रसाद तास खेतल, सुकवि लहि जोडि पुस्तक लिखि ॥ ६४ ॥

आपकी उदयपुरगजल भारतीय विद्या मे एवं चित्तौड़गजल फार्बस सभा त्रैमासिक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९६६ में खेतल कवि का नामोल्लेख है पर वहाँ इनके रचित ग्रन्थ का नाम व समय का निर्देश कुछ भी नही है। अतः वे यही थे, या इनसे भिन्न, नहीं कहा जा सकता।

(१६) खुसरो (४)—आप हिन्दी साहित्य संसार में सुप्रसिद्ध हैं। मिश्रबन्धु विनोद पृ० २६६ में इनका व इनके नाममाला ग्रन्थ का उल्लेख पाया जाता है। खोज रिपोर्टों में अभी तक इनकी ख्वालकबारी नाम माला की नागरी लिपि मे लिखित प्राचीन प्रति का कहीं भी उल्लेख देखने मे नही आया। इसलिये प्रस्तुत विवरणी में इसका आदि अन्त भाग दिया है।

(१७) गनपति (८८)—ये गुर्जर गौड़ सुरतान देव के पुत्र थे। इन्होंने सांगावत जसवन्त की रानी अमर कंवरी और आम्बेरनाथ की पत्नी कुन्दन बाई के लिये सं० १८२६ बसन्त पंचमी को शनि कथा की रचना की। ये वल्लभ सम्प्रदाय के गिरधारीजी के मन्दिर के पुजारी थे।

श्रीयुत मोतीलालजी मेनारिया के सम्पादित खोज विवरण भाग १ मे इनके सुदामाचरित्र का विवरण दिया गया है। वहाँ कवि का नाम गणेशदास लिखा है। गणेश और गनपति एकार्थवाचक नाम है अतः ये दोनो अभिन्न ही प्रतीत होते हैं।

(१८) गुलाबविजय (१०१, १०३)—आप तपागच्छीय यति थे। इन्होंने 'कापरड़ा गजल' कम धज खुसालसिंह के शासन काल मे (सं० १८७२ चै० ब० ३ को बनाई) और जोधपुर गजल की सं० १९०१ पौष बदी १० को रचना की।

जैन गुर्जर कवियो भा० ३ पृ० १७५ मे रिद्धिविजय शिष्य गुलाबविजय के समेदशिखर रास सं० १८४६ में रचे जाने का उल्लेख है पर वे इनसे भिन्न ही संभव हैं।

(१९) गुलाबसिंह (३६)—ये प्रतापगढ़ राज्य के संचेड़ गाँव के अधिकारी थे। ओझाजी के प्रतापगढ़ के इतिहास में वहाँ के राजा उदयसिंह ने महड़ू गुलाबसिंह को पैर में स्वर्णाभूषण का सन्मान देकर प्रतिष्ठा बढ़ाई, लिखा है। आपके रचित साहित्य महोदधि की रचना इन्हीं उदयसिंहजी की आज्ञा से हुई थी मुझे उसका नृपवंश

निरूपण और कविवंश वर्णन नामक ऐतिहासिक अंश ही उपलब्ध हुआ है—सम्पूर्ण ग्रन्थ काफी बड़ा होना चाहिये और वह प्रतापगढ़ राज्य लाइब्रेरी या कवि के वंशजो के पास होना संभव है। संचेड़ गाँव आज भी इनके वंशजों के अधिकार में है।

मिश्र बन्धु विनोद पृ० १०५५ में बूंदी के गुलाबसिंह कवि के अनेक ग्रन्थों का उल्लेख है जो कि मुंशी देवीप्रसादजी के 'कविरत्नमाला' से लिया गया जान पड़ता है। इनका समय भी हमारे कवि गुलाबसिंह के समकालीन है पर ये दोनों भिन्न-भिन्न कवि प्रतीत होते हैं।

(२०) गोपाल लाहोरी (२९)—इन्होंने मुसाहिबखान के तनुज सिरदारखाँ के पुत्र मिरजाखाँन की आज्ञा से 'रसविलास' ग्रंथ सं० १६४४ के बैसाख सुदि ३ को बनाया, इस ग्रन्थ का केवल अन्तिम पत्र ही हमारे संग्रह मे है। अतः सम्पूर्ण प्रति कहीं उपलब्ध हो तो हमे सूचित करने का अनुरोध है।

(२१) घनश्याम (२३)—प्रति लेखक के अनुसार ये पुरोहित थे। राधाजी के नखशिख वर्णन के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अज्ञात है। ये कवि वल्लभ कुल के वैष्णव थे। सं० १८०५ के कार्तिक शुक्ला बुद्धवार को नखशिख वर्णन की रचना हुई थी।

(२२) चतुरदास (२०)—आप अमृतराय भट्ट के शिष्य व जाति के क्षत्रिय थे। चित्रविलास की रचना अपने मित्रो के कथन से सं० १७३६ कार्तिक सुदि ९ लाहौर मे आपने गुरु के नाम से की थी।

(२३) चिदानंद (१२९)—ये आत्मानुभवी जैन योगी थे। इनका मूल नाम कपूरचंद और साधकावस्था का नाम चिदानंद है। बनारस वाले खरतरगच्छीय यति चुन्नीजी के ये शिष्य थे। आपके प्राप्त ग्रन्थो के नाम इस प्रकार है।

(१) स्वरोदय सं० १९०७ पालीताना
(२) पुद्गल गीता
(३) दया छत्तीसी सं. १९०५ का. सु. १ भावनगर
(४) प्रश्नोत्तरमाला
(५) सवैया बावनी
(६) पद बहोतरी
(७) फुटकर दोहे आदि

आपका स्वरोदय ग्रन्थ अपने विषय का अच्छा ग्रन्थ है। आपके पद बड़े ही सुन्दर एवं भावपूर्ण हैं। गम्भीर भावों को दृष्टांत देकर सरलता से समझाने में आप

बड़े सिद्धहस्त थे। इनके विषय में मेरा एक स्वतन्त्र लेख शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

(२४) **चेतनविजय** (३, १३, ७३)—ये तपागच्छीय रिद्धिविजयजी के शिष्य थे। लघुपिंगल की अन्तप्रशस्ति के अनुसार इनका जन्म बंगाल मे हुआ था। दीक्षा लेकर तीर्थयात्रा करते हुए पुनः बंगाल में आने पर इन्होने कई ग्रन्थो की रचना की जिनमें से 'आत्मबोध नाममाला' सं० १८४७ माघ सुदी १० और लघुपिंगल सं० १८४७ पौष बदी २ गुरुवार बंगदेश और जम्बूरास सं० १८५२ सावन सुदी ३ रविवार अजीमगंज मे रचित ग्रन्थों के विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिये गये है। इनके अतिरिक्त श्रीपाल रास सं० १८५३ फागन सुदी २ अजीमगंज और सीता चौपाई सं० १८५१ वैसाख सु० १३ अजीमगंज, उल्लेखनीय हैं। स्वर्गीय बाबू पूरनचन्दजी नाहर कलकत्ता के गुलाबकुमारी लाइब्रेरी मे इनके रचित अनेक फुटकर रचनाओं का एक बड़ा गुटका है।

मिश्रबन्धु विनोद पृ० ८३६ मे भी इनका उल्लेख आया है।

(२५) **चेलो** (९९)—ये रतनु गोत्रीय पनजी के पुत्र एवं जिलिया गाँव के निवासी थे सं० १९०९ के वैसाख बदी मे उन्होंने आबू शैल की गजल बनाई।

(२६) **चैनसुख** (५४)—आप खरतरगच्छीय जिनदत्त सूरि शाखा के लाभ निधानजी के शिष्य थे। इनकी परम्परा मे यति रिद्धिकरणजी आज भी फतहपुर मे विद्यमान है। इन्ही के संग्रह मे आपकी शतश्लोकी भाषाटीका की प्रति उपलब्ध हुई है जिसकी रचना सं० १८२० भाद्रवा बदी १२ शनिवार को महेश की आज्ञा व रतनचन्द के लिये हुई है। आपका अन्य ग्रन्थ 'वैद्य जीवन टवा भी उपलब्ध है। सं० १८६८ मे फतहपुर मे इनकी छतरी शिष्य चिमनीरामजी ने बनाई थी। आपकी परम्परा के सम्बन्ध मे विशेष जानने के लिये हमारे लिखित युग प्रधान श्री जिनदत्त सूरि ग्रन्थ देखना चाहिये।

(२७) **जगजीवन** (७०)—इनके हनुमान नाटक की प्रति अपूर्ण मिलने से आपका समय व अन्य जानकारी अज्ञात है।

(२८) **जगन्नाथ** (२६)—जैसलमेर के रावल अमरसिह के लिये इन्होंने रतिभूषण नामक ग्रन्थ सं० १७१४ के जेठ सु० १० सोमवार को बनाया।

(२९) **जटमल** (७६-१०५-११३)—ये नाहरगोत्रीय जैन श्रावक थे। मूलतः वे लाहौर के निवासी थे पर पीछे से जलालपुर मे रहने लगे थे। हिन्दी साहित्य मे आपके रचित 'गोरा-बादल की बात' ने अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की, जिसका कारण एक

साहित्यिक विद्वान् द्वारा इसकी सटीक प्रति के गद्य को इनका रचित मान लेना था। परवर्ती विद्वानो ने इस भूल को बहुत वर्षों तक चलाये रखा पर अन्त में स्वामी नरोत्तमदासजी[1], बाबू पूर्णचन्दजी नाहर[2] और हमने अपने लेखों में इसका सुधार किया। हमारे अन्वेषण से जटमल के अन्य कई ग्रन्थ प्राप्त हुए उन सबका परिचय हमने हिन्दुस्तानी पत्रिका के वर्ष ८ अंक २ मे 'कविवर जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ' शीर्षक लेख मे प्रकाशित किया था। प्रस्तुत ग्रन्थ में 'प्रेम विलास चौपाई,' 'लाहोरगजल' और 'झिगोर गजल' के विवरण प्रकाशित हैं। इनमें से प्रेमविलास चौपाई के सम्बन्ध मे स्वर्गीय सूर्यनारायणजी पारीक का एक लेख वीणा सन् १९३८ में प्रकाशित हो चुका है और 'लाहौरगजल' 'जैनविद्या' नामक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है। 'झिगोर गजल' अभी तक अप्रकाशित है। आपकी अन्य रचनाएँ, बावनी, सुन्दरीगजल और फुटकर सवैये हमारे संग्रह में है। जटमल-ग्रन्थावली का हमने संपादन किया है और वह प्रकाशन की प्रतीक्षा मे है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ४०७ मे भी जटमल का उल्लेख है।

(३०) **जयतराम** (१२८)—इन्होने 'योग प्रदीपिका स्वरोदय' सं० १७९४ बिजया दशमी को बनाया।

(३१) **जयधर्म** (१२३)—ये जैनयति लक्ष्मीचन्दजी के शिष्य थे। इन्होने सं० १७६२ कातिक बदि ५ को पानीपत मे नन्दलाल के पुत्र गोवर्धनदास के लिय 'शकुन प्रदीप' नामक ग्रन्थ बनाया।

(३२) **जनार्दन गोस्वामी** (२२)—इनके रचित 'दुर्गसिंह शृंगार' ग्रन्थ का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया गया है। इसकी प्रति प्रारम्भ मे त्रुटित प्राप्त होने से दुर्गसिह एवं कवि का विशेष परिचय ज्ञात नही हो सका। इस ग्रन्थ की रचना सं०१७-३५ ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार को हुई थी। आपके रचित व्यवहार निर्णय सं० १७२७ और लक्ष्मी नारायण पूजासार (बीकानेर के महाराजा अनूपसिंहजी के लिये रचित) की प्रतिये अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में विद्यमान हैं।

खोज रिपोर्टों के आधार से हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण भाग १ के पृ० ४९ में जनार्दन भट्ट के (१) बालविवेक (२) वैद्यरत्न (३) हाथी का शालिहोत्र और मिश्रबन्धुविनोद के पृ० १०७८ मे इन ग्रन्थों के अतिरिक्त कविरत्न नामका चौथा ग्रन्थ भी इन्हीं के द्वारा रचित होने का उल्लेख किया है।

---

१ प्र० नागरी प्रचारिणी व. १४ अ. ४। २ प्र० विशाल भारत, दिसम्बर १९३१।

इनमे से वैद्यरत्न की प्रतियें मेरे अवलोकन में आयी है उसमें रचना काल सं० १७४९ माघ सुदि ६ स्पष्ट लिखा हुआ है। अतः मिश्रबन्धुविनोद मे इनका कविता काल सं० १९०० के प्रथम बतलाया है वह और भी आगे बढ़कर सं० १७४९ के लगभग का निश्चित होता है। पता नहीं इनके नाम से जिन तीन अन्य ग्रन्थो का उल्लेख किया गया है उनमे रचनाकाल है या नहीं एवं कवि यही है या समनाम वाले अन्य कोई जनार्दन भट्ट है ? [१]

जनार्दन गोस्वामी के संस्कृत ग्रन्थो एवं वंशावलि के सम्बन्ध मे डॉ. सी. कुन्हन-राजा अभिनंदन ग्रन्थ मे पं० माधव कृष्ण शर्मा का 'शिवानन्द गोस्वामी' लेख देखना चाहिये।

(३३) **जान** (१८, २७, ३३, ४९. ५५, ७१, ७९, ८४, ९०, ९४, ९७)—आप फतहपुर के नवाब अलिफखाँ के पुत्र न्यामतखाँ थे। कविता मे इन्होंने अपना उपनाम जान ही लिखा है। सं० १६७१ से १७२१ तक पचास वर्ष आपकी साहित्य-साधना का समय है। इन वर्षों मे आपने ७५ हिन्दी काव्य ग्रन्थो का निर्माण किया; जिसकी प्रतियाँ राजस्थान में ही प्राप्त होने से अभी तक यह कवि हिन्दी साहित्य संसार से अज्ञात था। इनका (इनके ४ ग्रन्थो का) परिचय सर्व प्रथम हमारे सम्पादित 'राजस्थानी' और 'धूमकेतु' पत्र मे प्रकाशित हुआ था। श्रीयुत मोतीलालजी मेनारिया के खोज विवरण मे आपकी रचित रसमंजरी का विवरण प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ मे आपके ११ ग्रन्थो का विवरण दिया गया है। इनके सम्बन्ध मे हमारे निम्नोक्त चार लेख प्रकाशित हो चुके है अतः यहाँ अधिक न लिखकर पाठकों को उन लेखों को पढ़ने का सूचन किया जाता है।

(१) कविवर जान और उनके ग्रन्थ (प्र० राजस्थान भारती व० १ अं० १)
(२) कविवर जान और उनका कायम रासो (प्र० हिन्दुस्तानी व० १५ अं० २)
(३) कविवर जान का सबसे बड़ा ग्रन्थ(बुद्धिसागर)(प्र० ,, व० १६ अं० १)
(४) कविवर जान रचित अलिफखाँ की पेड़ी (प्र० ,, व० १६ अं० ४)

(३४) **जोगीदास** (५०)—ये बीकानेर के साहित्य प्रेमी नरेश अनूपसिंहजी के सम्मानित श्वेताम्बर (जैन) लेखक जोसीराय मथेन के पुत्र थे। महाराजा सुजान-

---

१ हिन्दी पुस्तक साहित्य के अनुसार यह मुहम्मदी प्रेस लखनऊ से छप भी चुका है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ ६३ मे सन १८८२ लिखा है वह प्रकाशन का है। इसी प्रकार देवीदास की राजनीति को भी १९ वीं शताब्दी की मानी है पर वह १८ वी की है।

सिंहजी के वरमलपुर गढ़ विजय का वर्णन इन्होंने संवत् १७६७-६९ के लगभग सुजानसिंह रासो (पद्य ६८) में किया था। उससे प्रसन्न होकर महाराजा ने कवि को वर्षाशन, सासणदान और शिरोपाव देकर सम्मानित किया था। इन्हीं महाराजा के समय कवि ने उनके पुत्र महाराज कुंवर जोरावरसिंहजी के नाम से सं० १७६२ के आश्विन शुक्ल १० को "वैद्यकसार" नामक ग्रन्थ बनाया जिसका विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है।

(३५) **टीकम** (७३)—ये जैन कवि थे। सं० १७०८ जेठ वदि २ रविवार को इन्होंने 'चन्द्रहंस-कथा' बनाई।

(३६) तत्वकुमार (५७)—ये खरतरगच्छीय सागरचन्द्रसूरि शाखा के वाचक दर्शनलाभ के शिष्य थे। मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९७५ में अज्ञात कालिक प्रकरण में इनके रचित श्रीपालचरित्र का उल्लेख है। वह कलकत्ते में यति सूर्यमलजी ने प्रकाशित भी कर दिया है। आपके द्वितीय ग्रन्थ 'रत्नपरीक्षा' का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है जिसके अनुसार इसकी रचना सं० १८४५ सावन वदि १० सोमवार को बंगदेशीय राजगंज के चंडालिया आसकरण के लिये हुई थी।

(३७) दयालदास (९८)—आप कुबिये गाँव के सिंढ़ायच खेतसी के पुत्र थे। राठौड़ों की ख्यात के सम्बन्ध में आपके तीन ग्रन्थ (१) आर्याख्यान कल्पद्रुम (२) देशदर्पण और (३) राठौड़ों की ख्यात बहुत ही महत्व के हैं। बीकानेर राज्य का इतिहास तो आपके इन ग्रन्थों के आधार से ही लिखा गया है। इनके अतिरिक्त 'जस-रत्नाकर', 'सुजस बावनी', 'अजस इकीसी', फुटकर गीत आदि की प्रतियाँ अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में विद्यमान हैं। आपने नारसैर के ठाकुर अर्जुनसिंहजी की आज्ञा से परमारों के इतिहास के सम्बन्ध में 'पंवारवंशदर्पण' सं० १९२१ में बनाया।

(३८) दरवेश हकीम (४५)—आपके रचित 'प्राणसुख' ग्रन्थ के अतिरिक्त कुछ भी वृत्त ज्ञात नहीं है। इस ग्रन्थ की प्रति सं० १८०६ की लिखी हुई होने से कवि का समय इससे पूर्ववर्ती सिद्ध ही है।

(३९) दलपति मिश्र (९५)—'जसवन्त उदोत' में कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि अकबरपुर में माथुरद्वीप मिश्र जिन्होंने कुछ दिन रामनरेश के यहाँ रहकर उन्हें पढ़ाया था उनके पुत्र शिवराम के पुत्र तुलसी का मैं पुत्र हूं। सं० १७०५ असाढ़ सुदी ३ को जहाँनाबाद में इस ग्रन्थ की रचना हुई। जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंहजी से इनका अच्छा सम्बन्ध था। इस ग्रन्थ का ऐतिहासिक

सार मैंने 'हिन्दुस्तानी' वर्ष १६ अंक ३ में प्रकाशित कर दिया है। 'जसवन्त उद्योत' मे कवि ने नायिकावर्णन के सम्बन्ध मे विस्तार से जानने के लिये अपनी 'रस रत्नावली' ग्रन्थ का निर्देश किया है जो अद्यावधि अप्राप्त है।

(४०) **दीपचन्द** (४५)—ये खरतरगच्छीय थे। इनके रचित 'लंघन-पथ्य-निर्णय' नामक संस्कृत ग्रन्थ की प्रति हमारे संग्रह मे है जो कि सं० १७९२ माघ सुदि १ जयपुर मे रचित है। प्रस्तुत ग्रन्थ मे इनके बाल तन्त्र भाषा वचनिका का विवरण दिया है।

(४१) दीपविजय (१०९-११५)—ये तपागच्छीय रत्नविजय के शिष्य थे। इनका विरुद "कविराज बहादुर" था। आपकी निम्नोक्त रचनाएँ ज्ञात हुई हैं।

(१) रोहिणी स्तवन सं० १८५९ भा० सु० खंभात

(२) केसरियाजी लावणी—ऋषभ स्तवन स० १८७५

(३) सोहम कुल पट्टावलि रास (ग्रन्थाग्रन्थ २०००) सं० १८७७ सूरत

(४) पार्श्वनाथ ५ बधावा सं० १८७९

(५) कवि तीर्थ स्तवन, स० १८८६

(६) अड़मठ आगम अष्ट प्रकार री पूजा, सं० १८८६ जम्बूसर

(७) नन्दीश्वर महोत्सव पूजा ,सं० १८८९ सूरत

(८) सूरत गजल (९) खंभात गजल (१०) जम्बूसर गजल

(११) उदयपुर गजल (१२) बड़ौदा गजल। ये पाँचो गजलें सं १८७७ की लिखित प्रति मे उपलब्ध है जो कि आगरे के विजय धर्म सूरि ज्ञान मन्दिर मे है।

(१३) माणिभद्रछन्द (१४) चन्दगुणावली पत्र

(१५) अष्टापद पूजा, सं० १८९२ फागुन, गोंदर

(१६) महानिशीथ हुंडी (प्र० जैन साहित्य सशोधक)

(१७) नवबोल चर्चा सं० १८७६ उदयपुर

(४२) दुर्गादास (११२)—ये खरतरगच्छीय यति विनयानन्द (जिन-चन्द्रसूरि शाखा) के शिष्य थे। इन्होंने दीपचन्द के आग्रह से स० १७६५ पौष वदि ५ मे 'मरोट गजल' बनाई। इनका अन्य ग्रन्थ जम्बू चौपाई हमारे संग्रह मे है। इसकी रचना सं० १७९३ श्रावणसुदि ७ सोमवार को बाकरोद मे हुई है।

(४३) दूलह (२३)—१९ वी शताब्दी के कवि दूलह का 'कविकुलकंठाभ-रण' हिन्दी साहित्य मे प्रसिद्ध है। मिश्रबन्धुविनोद पृ० ९८१ में भी इसका उल्लेख है।

संभवतः ये उनसे अभिन्न ही होगें। दूलह विनोद की प्रति का केवल प्रथम पत्र प्राप्त होने से कवि का परिचय एवं रचनाकाल ज्ञात नहीं हो सका। इसकी पूर्ण प्रति कहीं प्राप्त हो तो हमे सूचित करने का अनुरोध है।

(४४) देवहर्ष (१०५-१०७)—आप खरतरगच्छीय जैन यति थे। श्री जिनहर्षसूरिजी के समय मे रचित इनकी 'पाटण गजल' (सं० १७५९ फाल्गुन) 'डीसा गजल' के अतिरिक्त 'सिद्धाचल छन्द' हमारे संग्रह में है।

(४५) धर्मसी (४३) ये भी खरतरगच्छीय वाचक विमल हर्षजी के शिष्य थे। इनका दीक्षा अवस्था का नाम धर्मवर्द्धन था। अपने समय के ये प्रतिष्ठित एवं राज्य-मान्य विद्वान् थे। इनके सम्बन्ध मे मेरा विस्तृत लेख "राजस्थानी साहित्य और जैन कवि धर्मवर्द्धन" शीर्षक राजस्थानी वर्ष २ भाग२ मे प्रकाशित है। अतः यहाँ विस्तृत परिचय नहीं दिया गया।

(४६) नगराज (१२५)—सभवत. ये खरतरगच्छीय जैन यति थे। १८ वीं शताब्दी मे अजय राज्य के लिये आपने "सामुद्रिक भाषा" नामक ग्रन्थ बनाया।

(४७) निहाल (११०)—ये पार्श्वचन्द्रसूरि संतानीय हर्षचन्द्रजी के शिष्य थे। इनकी रचित बंगाल की गजल (सं० १७८२-९५) के अतिरिक्त निम्नोक्त रचनायें ज्ञात हुई हैं।

(१) ब्रह्मबावनी, स० १८०१ कार्तिक सुदि ६ मुर्शिदाबाद

(२) माणकदेवी रास, स० १७९८ पौष वदी १२ मुर्शिदाबाद(प्र० राससंग्रह)

(३) जीवविचार भाषा सं० १८०६ चैत सुदि २ बुध मुर्शिदाबाद

(४) नवतत्व भाषा, सं० १८०७ माघ सुदि ५ "

"बंगाल गजल" ऐतिहासिक सार के साथ मुनि जिनविजयजी ने भारतीय विद्या वर्ष १ अंक ४ मे प्रकाशित करदी है।

(४८) नंदराम (१७)—इन्होंने बीकानेर नरेश अनूपसिहजी की आज्ञा से रस ग्रन्थो का सार लेकर "अलसमेदिनी" नामक ग्रन्थ बनाया।

(४९) परमानंद (१२६)—ये नागपुरीय लोकागच्छ के वीरचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने लक्ष्मीचन्द्र (सूरि) एवं बीकानेर नरेश सूरतसिह के समय मे (स० १८६० माघ सुदि) में बिहारी सतसई की संस्कृत टीका बनायी।

(५०) प्रेम (२५)—इन्होंने सं० १७४० के चैत सुदि १० को प्रेममंजरी ग्रन्थ बनाया।

(५१) **बगसीराम लालस** (१९)—आपने सं० १९१३ आश्विन शुक्ला १५ को बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह (काव्य में नाम सादूल आता है पर वह अशुद्ध प्रतीत होता है) की छत्र छाया में "काव्य-प्रबन्ध" ग्रन्थ बनाया।

(५२) **बद्रीदास** (७)—इनकी रचित मानमंजरी नाममाला की प्रति सं० १७२५ की लिखित प्राप्त है अत: इनका समय इसके पूर्ववर्ती ही है।

(५३) **भगतदास** (८६)—इन्होंने सम्राट् अकबर के समय में अकबरपुर में "बैताल पचीसी" बनाई। ये राघवदास के पुत्र थे।

(५४) **भक्तिविजय** (११०-११३)—आपने सं० १८६६ कार्तिक सुदि १५ को भावनगर वर्णन गजल और मेदिनीपुर (मेड़ता) महिमा छंद विजय जिनेन्द्र सूरि[1] (तपागच्छीय) के समय में बनाया। आपके शिष्य मनरूप का परिचय आगे दिया जायगा।

(५५) **भीखजन** (६)—श्री गोपाल दिनमणि रचित 'फतहपुर परिचय' के पृष्ठ १५१ में इन्हें दादु शिष्य संतदास का शिष्य बतलाया है। ये जाति के आचार्य ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम देवी सहाय था। सन्यस्त होकर ये भजन स्मरण एवं अध्ययन करने लगे। इन्होंने भारतीय नाममाला सं० १६८५ आश्विन शुक्ला १५ शुक्रवार फतहपुर (शासक दौलतखां व उनके पुत्र ताहर खाँन के समय में) में बनाई थी। इनकी रचित अन्य रचना "भीख बावनी" है। आपके लिखे हुए रसकोष (कवि ज्ञान कृत) की प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में है जो सं० १६८४ जेठ वदी ७ फतहपुर में लिखी गयी है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९९३ में आपकी बावनी का उल्लेख है पर उसका परिमाण ५०० श्लोक का बतलाना सही नहीं है। वहाँ इन्हें अज्ञात कालिक प्रकरण में रखा गया है, पर भारतीय नाममाला की प्रति में आपका समय सं० १६८५ के लगभग निश्चित होता है।

(५६) **भूधर मिश्र** (६६)—ये शाकद्वीपी मिश्र भागीरथराम के पुत्र थे। सं० १७३९ के माघ वदी ९ को दक्षिणगढ़ नांदेर में "रागमंजरी" ग्रन्थ बनाना प्रारंभ किया। ग्रन्थ के अन्त में सं० १७४० का निर्देश है और यह भी लिखा है कि आजमशाह के प्रयाण के समय कवि ने सैन्य के साथ दक्षिण प्रान्त देखा। कवि ने अपना निवास-स्थान सूबा बिहार, गढ़ मूँगेर लिखा है।

---

१ दे० जैन गुर्जर कविओ भा० २ पृ० ७३०

(५७) भूप (११८)—मिश्रबन्धुविनोद पृ० २९३ मे अज्ञात कालिक प्रकरण के अन्तर्गत भूप कवि एवं उनके "चंपू सामुद्रिक" ग्रन्थ का भी उल्लेख है। हमे प्राप्त प्रति सं० १७२५ की लिखित होने से कवि का समय इससे पूर्ववर्त्ती निश्चित है।

(५८) मनरूपविजय (१०२-१०६-१०८-११२-११६)—ये पूर्व उल्लिखित तपागच्छीय भक्तिविजय के शिष्य थे। इनके रचित (१) गिरनार-जूनागढ़ (२) नागोर (३) पोरबन्दर (४) मेड़ता (सं० १८६५ कार्तिक सुदि १४) और (५) सोजत की गजले (सं० १८६३ कार्तिक सुदि १५) का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया गया है। सं० १८७८ मे वैशाख शुक्ला १५ सोमवार के एक लेख से ज्ञात होता है कि जैसलमेर दरबार ने इन्हे लोद्रवा मे उपासरा बना के दिया था।

(५९) मयाराम (१३०)—ये दादूपन्थी थे। इनका निवास स्थान दिल्ली—जहानाबाद था। शिव-सरोदय ग्रन्थ के आधार से इन्होंने स्वरोदय ग्रन्थ बनाया।

(६०) मलूकचन्द (५३)—वैद्यहुलास ग्रन्थ जो कि तिब्बसहावी का अनुवाद है, मे आपने अपने श्रावक कुल का उल्लेख किया है। अत ये जैन श्रावक थे। संभवतः ये १९ वी शताब्दी मे ही हुए है।

(६१) महमदशाहि (६७)—ये पिरोजशाह के वंश मे तत्तारशाह के पुत्र थे। इनकी रचित संगीतमालिका की प्रारंभ-त्रुटित प्रति प्राप्त हुई है। संभव है कवि ने प्रारम्भ मे अपना कुछ परिचय एवं समय दिया हो।

(६२) महासिंह (१)—इनकी "अनेकार्थ नाममाला" की प्रति सं० १७६० मे स्वयंलिखित हमारे संग्रह मे है। इसमे इन्होंने अपने को पांडे बतलाया है।

(६३) मान, (प्रथम) (२५)—आप खरतरगच्छीय उपाध्याय शिवनिधान के शिष्य थे। इनकी रचित "भाषा कविरस मंजरी" का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे है। इनके अतिरिक्त आपके अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैः—

(१) कीर्त्तिधर सुकौशल प्रबन्ध सं० १६७८ दीवाली, पुष्करण
(२) मेतार्य ऋषि सम्बन्ध सं० ,, पुष्करण
(३) क्षुल्लककुमार चौपाई ,,
(४) हंसराज वच्छराज चौपाई सं० १६७५ कोटड़ा
(५) उत्तराध्ययन गीत सं० १६७५ सावन वदी ८ गुरु
(६) अर्हद्दास प्रबन्ध विजयदशमी जूनपुर
(७) मेघदूत वृत्ति सं० १६९३ भादवा सुदि ११

(८) जीवविचार टब्बा

(९) योगबावनी

(१०) शिक्षाछत्तीसी

(६४) **मान** (द्वितीय) (३७,३९,४०)—ये खरतरगच्छीय सुमति मेरु भ्रातृ विनयमेरु के शिष्य थे। कविविनोद और कविप्रमोद मे इन्होंने अपने को बीकानेर-वासी लिखा है। सं० १७४५ वैसाख सुदी ५ लाहोर मे कविविनोद और सं० १७४६ कार्तिक सुदि २ मे कविप्रमोद ग्रन्थ बनाया। सयोगद्वात्रिंशिका भी संभवतः इन्ही की रचना है जिसका निर्माण अमरचन्द्र मुनि के आग्रह से सं० १७३१ के चैत सुदि ६ को हुआ था।

(६५) **माल** (देव) (८५) - ये भटनेर की बड़गच्छीय शाखा के आचार्य भावदेवसूरि के शिष्य थे। आप अच्छे कवि थे। आपकी रचनाओं की सूची नीचे दी जारही है:—

(१) पुरन्दर चौपाइ
(२) भोज-प्रबन्ध (पंचपुरी मे रचित)
(३) अंजणासुन्दरी चौपाइ
(४) विक्रम पंचदंड कथा
(५) देवदत्त चौपाइ
(६) पद्मरथ चौपाई
(७) सूरिसुन्दरी चौपाइ
(८) वीरागद चौपाइ
(९) मालदेव शिक्षा चौपाई
(१०) स्थूलिभद्र फाग-धमाल
(११) राजल नेमि धमाल
(१२) शील बत्तीसी
(१३) कल्पान्तर वाच्य सं० १६१४
(१४) वीरपंचकल्याणक स्तवन आदि

मिश्र बन्धु विनोद के पृ० ३९१ मे इनकी पुरन्दर चौपाई का उल्लेख है और उनका रचनाकाल १६५२ लिखा गया है पर वास्तव मे वह संवत् प्रतियों का लेखनकाल है। इनका समय सं० १६१४ के लगभग है।

(६६) **मुरलीधर** (११)—ये त्रिपाठी रामेश्वर के पुत्र थे। इन्होंने पौलस्त्यवंशी मार्त्तण्डगढ़ के महाराजा हृदयनारायणदेव के प्रोत्साहन से सं० १७२३ कार्तिक वदी १५ को "छन्दोहृदयप्रकाश" ग्रन्थ बनाया।

(६७) **मेघ** (१२१)—ये उतराधगच्छ के मुनि जटमल शिष्य परमानन्द शिष्य सदानन्द शिष्य नरायण शिष्य नरोत्तम शिष्य मयाराम के शिष्य थे। सं० १८१७ कार्तिक सुदि ३ गुरुवार को चौधरी चाहड़मल के समय मे पंजाब प्रान्त के फगवाड़े स्थान मे वर्षाविज्ञानसम्बन्धी "मेघमाला ग्रन्थ" बनाया। कई वर्ष पूर्व हमने इस ग्रन्थ को

वेंक्टेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित देखा था । कवि मेघ का रचित मेघविनोद जो कि वैद्यक का बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है गुरुमुखी लिपि मे प्रकाशित हुआ था । अभी लाहौर से संभवतः इसका हिन्दी गद्यानुवाद प्रकाशित हुआ है । इस ग्रन्थ की रचना सं० १८३५ फाल्गुन सुदि १३ फगवा नगर मे हुई थी । आपका तीसरा ग्रन्थ "दान शील तप भाव" (सं० १८१७) पंजाब भंडार मे उपलब्ध है ।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९९७ मे आपके मेघविनोद ग्रन्थ का उल्लेख है पर वहाँ इन्हें अज्ञातकालिक प्रकरण मे रखा गया है । जबकि ग्रन्थ मे सं० १८३५ पाया जाता है ।

(६८) रघुनाथ (५)—ये विष्णुदत्त के पुत्र थे । प्रदीपिका नाम-माला ग्रन्थ के अतिरिक्त आपका विशेष वृत्तान्त ज्ञात नहीं है ।

(६९) रत्नशेखर (५७)—ये अंचल गच्छीय अमरसागरसूरि के आज्ञानुवर्त्ती थे । सं० १७६१ के मिगसर सुदि ५ गुरुवार को सूरत के श्रीवंशीय भीमशाही के पुत्र ठकरदास की प्रार्थना से इन्होंने "रत्नव्यवहारसार" ग्रन्थ बनाया ।

(७०) रसपुंज (११)—आपने स० १८७१ की चैत्र वदी ५ गुरुवार को "प्रस्तार प्रभाकर" ग्रन्थ बनाया ।

(७१) रामचन्द्र (४४-५१-१२४)—आप खरतरगच्छीय जिनसिंहसूरि शिष्य पद्मकीर्त्ति शिष्य पद्मरंग के शिष्य थे । आपके रामविनोद (सं० १७२० मिगसर सुदि १३ बुधवार सक्की नगर) ग्रन्थ की प्रति पहले भी मिल चुकी है और ये लखनऊ से छप भी चुका है । आपके वैद्यविनोद (स० १७२६ वै० सु० १५ मरोट) एवं सामुद्रिक भाषा (सं० १७२२ माघ वदि ६ मेहरा) का विवरण इस ग्रन्थ मे प्रकाशित है । इनके अतिरिक्त आपकी निम्नोक्त रचनाएँ ज्ञात हुई है ।

(१) दश पचक्खाण स्तवन, सं० १७२१ पौष सुदी १०

(२) मूलदेव चौपाई, सं० १७११ फागण, नवहर

(३) समेदशिखर स्तवन, सं० १७५०

(४) बीकानेर आदिनाथस्तवन, सं० १७३० जेठ सुदी १३

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ४६६ मे उल्लखित रामचन्द्र ये ही है पर साकी बनारस वाले एवं ग्रन्थ का नाम राय विनोद और गुरु का नाम पध्मराग छपा है. वह अशुद्ध है वास्तव मे सक्कीनगर सिन्ध प्रान्त मे है, ये यति थे अतः सर्वत्र परिभ्रमण करते रहते थे-किसी एक जगह के निवासी न थे । ग्रन्थ का नाम रामविनोद और गुरु का नाम पद्मरंग है । मिश्रबन्धुविनोद मे आपके अन्य एक ग्रन्थ जम्बू चौपाई का भी उल्लेख है ।

(७२) रामचन्द्र (द्वितीय) (५९)—इनका रत्न परीक्षा (दीपिका) ग्रन्थ प्राप्त है। उसमे कवि ने अपना कुछ भी परिचय नही दिया अतः ये उपर्युक्त रामचन्द्र से भिन्न हैं या अभिन्न, कहा नही जासकता।

(७३) रायचन्द्र (११७)—ये खरतरगच्छीय जैनयति थे। सं० (१८) १७ मे द्वितीय ज्येष्ठ वदी ५ नागपुर मे आपने अवयदी शुकुनावली बनाई। संभव है कल्पसूत्र हिन्दी पद्यानुवाद के रचयिता रायचन्द्र ये ही हो जो कि सं० १८३८ चैत सुदी ९ बनारस मे बनाया गया एवं प्रकाशित हो चुका है।

(७४) लच्छीराम (२१,६२)—इनके रचित दम्पतिरंग और रागविचार ग्रन्थो के विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित हैं। उनमे कवि ने अपना कुछ भी परिचय नहीं दिया पर मोतीलालजी मेनारिया सम्पादित खोज विवरण के प्रथम भाग मे इनके करुणाभरण नाटक का विवरण प्रकाशित हुआ है। उसके अनुसार ये कवीन्द्राचार्य सरस्वती के शिष्य थे। बीकानेर की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी मे कवीन्द्राचार्य के संग्रह की अनेक प्रतिये हैं और लच्छीराम के (१) ज्ञानानन्द नाटक (२) ब्रह्मानन्दनीय (३) विवेक सार-ज्ञान कहानी और (४) ब्रह्मतरंग की प्रतिये भी उपलब्ध हैं। इनमे से ज्ञानानन्द नाटक म कवि ने अपना एव अपने मित्रो का परिचय निम्नोक्त पद्यो मे दिया है:—

देसु भदावर अति सुख वासु, तहाँ जोयसी इसुर दासु।
राम कृष्ण ताके सुत भयो, धर्म समुद्र कविता यसु छयो॥
तिनके मित्र शिरोमणि जानि, माथुर जाति चतुरई खानि।
मोहनु मिष सुभग ताको सुतु, वसे गंभीर सकल कला युत॥
पुनि अवधानि परम विचित्र, दोउ लच्छीराम सो मित्र।
तीनो मित्र सने सुख रहे, धनि प्रीति सब जग के कहे॥
अथ लच्छीराम वृत्तान्त कहीयतु है—
जमुनातीर मई इक गाऊँ, राइ कल्याण वसे तिह ठाँउ।
लच्छीराम कविता को नन्दु, जा कविता सुनि नासे दंदु॥
राइ पुरंदर करे लघु भाई, तासो मित्र बात चलाई।
नाटक ज्ञानानन्द सुनावो, देहुं सुखनि अरु तुम सुख पावो॥

इटली के प्रसिद्ध राजस्थानी के प्रेमी विद्वान् एल० पी० टेसीटोरी के केटलॉग मे इनके बुद्धिबल कथा (सं० १६८१ रचित) का उल्लेख है।

मिश्रबन्धुविनोद मे इसी नाम वाले तीन कवियों का उल्लेख किया गया है। इनमें से सूदन कवि के सुजानचरित्र मे उल्लखित लच्छीराम ही प्रस्तुत लच्छीराम हो सकते हैं। अन्य लच्छीराम १९ वी शताब्दी के है।

(७५) लक्ष्मीचन्द (९९)—ये खरतरगच्छीय जैनयति थे। यथा स्मरण ये अमरविजय के शिष्य थे। इनका एक वैद्यक ग्रन्थ इनकी परम्परा के उपाध्याय जयचन्दजी के भंडार बीकानेर मे उपलब्ध है।

(७६) लक्ष्मीवल्लभ—(४१, ४७)—आप भी खरतरगच्छीय उपाध्याय लक्ष्मीकीर्त्तिजी के शिष्य थे। अपने कई काव्य ग्रन्थो मे इन्होंने अपना नाम 'राजकवि' दिया है। १८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वानो मे से आप भी अन्यतम थे। इनके कालज्ञान (१७४१ सावन सुदी १५) और मूत्र परीक्षा का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया है। इनके अतिरिक्त आपकी छोटी मोटी पचासों रचनाएं हैं जिनमे से उल्लेखनीय प्रतियो की सूची नीचे दी जारही है:—

१. अभयंकर श्रीमति चौपाई, सं० १७२५ चै० सु० १५.
२. अमरकुमार रास
३ विक्रमादित्य पंचदंड चौपाई, सं० १७२८ फा० व० ५
४. रात्रि भोजन चौपाई, सं० १७३८ वै० सु० १० बीकानेर
५. रत्नहास चौपाइ, सं० १७२५ चै० सु० १५
६. भावना विलास, सं० १७२७ पौ० ब० १०
७. नवतत्व भाषा, सं० १७४७ वै० सु० १३ हिसार
८. चौवीसी स्तवन
९. दोहाबावनी
१०. कवित्व बावनी
११. छप्पय बावनी
१२ सवैया बावनी
१३ भरत बाहुबलि भिड़ाल छंद
१४ महावीर गौतम छंद
१५ देशान्तरी छंद
१६ उपदेश बतीसी
१७ चैतन बतीसी, स० १७३९

१८ बीकानेर चौबीसटा स्तवन, सं० १७४५ मा० सु० १५.

१९ शतकत्रय टबा (पंजाब भंडार)

२० स्तवनादि ४०

संस्कृत ग्रन्थ—

२१. कल्पसूत्र-कल्पद्रुमकलिका वृत्ति

२२. उत्तराध्यनवृत्ति

२३. कालिकाचार्य कथा

२४. पंचकुमार कथा

२५. कुमारसंभववृत्ति. सं० १७२१ सूरत

२६ मात्रिकाक्षर धर्मोपदेश स्वोपज्ञ वृत्ति, सं० १७४५

आप संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी तीनो भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। उपरोक्त ग्रन्थ इन तीनो भाषाओ के हैं। आपका विशेष परिचय स्वतंत्र लेख मे दिया गया है जो कि शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

(७७) लालचन्द (१ २)—ये भी खरतरगच्छीय जैनयति थे। श्री शान्ति हर्षजी के शिष्य एवं कविवर जिनहर्ष के गुरुभ्राता लाभवर्द्धनजी का दीक्षा से पूर्व-वर्त्ती नाम लालचन्द था। विशेष संभव आप वही है। इन्होंने सं० १७५२ के भाद्रवा सुदी में अक्षयराज के लिये स्वरोदय की भाषा टीका बनाई। आपके अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं :—

(१) विक्रम नवसौ कन्या चौपाई एवं खापरा चोर चौपाई, सं० १७२३ श्रावण सु० १३ जेतारण।

(२) लीलावती रास, सं० १७२८ कातिक सुदि १४।

(३) लीलावती रास (गणित), स० १७३६ असाढ़ बदी५, बीकानेर कोठारी जैतसी के लिये।

(४) धर्मबुद्धि पापबुद्धि रास, सं० १७४२ सरसा।

(५) पांडवचरित्र चौपाइ, सं० १७६७ बील्हावास।

(६) विक्रम पचदंड चौपाई सं० १७३३ फाल्गुन।

(७) शकुनदीपिका चौपाई सं० १७७० वैसाख सुदी ३ गुरुवार।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ५०८ मे इनके लीलावती ग्रन्थ का उल्लेख है पर वहाँ, सौभाग्य सूरि के शिष्य एवं नैणसी के आश्रित लिखा है वह ठीक नहीं है। आपके

गुरु का नाम शान्ति हर्ष और नैणसी के पुत्र जैतसी के लिये प्रस्तुत ग्रन्थ बनाया गया है। मिश्रबन्धुविनोद के पृ० १००४ में लाभवर्द्धन के रचित उपपदी ग्रन्थ का उल्लेख है पर मुझे यह नाम अशुद्ध प्रतीत होता है।

(७८) लालदास (३४)—इनके "विक्रमविलास" ग्रन्थ का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है उसके प्रारंभ में कवि ने अपने दो अन्य ग्रन्थो का उल्लेख किया है जिनमें से उषा नाटक (कथा) की प्रति सन् १९०९ से ११ की खोज रिपोर्ट में प्राप्त है। इनकी माधवानलकथा अभी तक कहीं जानने मे नहीं आई अतः उसकी खोज होना आवश्यक है।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका के वर्ष ५१ अंक ४ मे सन् १९४१ से ४३ की खोज का विवरण प्राप्त हुआ है उसमें लिखा है कि विक्रमविलास की दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं जिनके अनुसार कवि का नाम लाल या नेवजी लाल दीक्षित था। ये विक्रम शाहि राजा के आश्रित थे। जिनके बड़े भाई का नाम भूपतशाहि पिता का नाम खेमकरण और पितामह का नाम मलकल्याण था। एक प्रति मे इस ग्रन्थ का रचना काल १६४० लिखा है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० १०७१ मे लालदास के उषा कथा और वामन चरित्र का निर्देश है कविताकाल सं० १८९६ के पूर्व और मनोहर दास के पुत्र लिखा है। हमारे नम्रमतानुसार उषा कथा उपरोक्त लालदास रचित ही होगी और उसका रचना काल १७ वीं शताब्दी निश्चित ही है। वामनचरित्र के रचयिता लालदास प्रस्तुत कवि से भिन्न ही संभव हैं।

१७ वीं शताब्दी के कवि लालदास की इतिहाससार (सं० १६४३) प्रसिद्ध ही है एवं अन्य कई ग्रन्थ भी इसी कवि के नाम से उपलब्ध है पर उन सभी का रचयिता एक ही कवि है या समनाम वाले भिन्न भिन्न कवि है प्रमाण भाव से नहीं कहा जा सकता।

(७९) वल्लभ (१३०)—आपने हृदयराम के समय मे या उनके लिये स्वरोदय सम्बंधी छोटा सा ग्रन्थ बनाया।

(८०) विजयराम (८७)—आशायत दुर्गेश के ग्राम समदरड़ी (लूणी के पास) में आपने शनिकथा बनाई। कवि ने रचनाकाल का भी निर्देश किया है पर उससे संवत् का अंक ठीक ज्ञात नहीं होता।

(८१) विनयसागर (२)—इन्होंने अंचलगच्छीय कल्याणसागर सूरि के समय—सं० १७०२ कातिक सुदी १५ को, अनेकार्थ नाममाला बनायी।

(८२) वैकुण्ठदास (१३१)—इनके रचित स्वरोदय ग्रन्थ के अतिरिक्त कुछ भी ज्ञात न हो सका।

(८३) शिवराम पुरोहित (७५)—ये नागौर के निवासी थे बीकानेर नरेश। अनूपसिंहजी ने इन्हें सम्मानित किया था। कवि ने उन्हींकी आज्ञानुसार 'दशकुमार प्रबन्ध' सं० १७५४ के मिगसर सुदी १३ मंगलवार को बनाया। ग्रन्थ के आरंभ में कवि ने अपने गुरु मेघ को नमस्कार किया है। पता नहीं वे कौन थे।

(८४) श्रीपति (१५)—आपकी 'अनुप्रासकथन' रचना के अतिरिक्त विशेष वृत्त ज्ञात नहीं है।

(८५) सतीदासव्यास (३१)—ये देवीदास व्यास के पुत्र देवसी के पुत्र थे। आपने बीकानेर-नरेश अनूपसिंहजी के समय सं० १७२३ माघ सुदी २ को 'रसिक-आराम' ग्रन्थ बनाया।

(८६) समरथ (४८,१३७) खरतरगच्छीय सागरचन्द्रसूरि सन्तानीय मति-रत्न के शिष्य थे। इनका दीक्षितावस्था का नाम 'समयमाणिक्य' था। इनके रचित रसमंजरी वैद्यक (सं० १७६४ फागुन ५ रवि, देरा) ग्रन्थ वनमाली के आग्रह से और रसिकप्रिय संस्कृत टीका (सं० १७५५ सावन सुदी ७ सोमवार, सिन्ध प्रान्त के जालिपुर मे रचित) का विवरण इसी ग्रन्थ मे दिया गया है। इनके अतिरिक्त (१) बावनीगाथा ५५ एवं मल्लिनाथ पंचकल्याणक स्तवन (सं० १७३६ भादवा सुदी ५ बन्नुदेश सक्कीग्राम) उपलब्ध हैं।

(८७) स्वरूपदास (१४)—ये पहले चारण थे फिर सन्यासी होगये। पांडवयशेन्दुचंद्रिका (सं० १८९२ चैत बदी ११) इनकी प्रसिद्ध रचना है जो प्रकाशित भी हो चुकी है। आपके अन्यग्रन्थ वृत्तिबोध (सं० १८९८ माघ बदी १ सेवापुर) का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया गया है। इसमे विवरण गद्य मे है।

मिश्र-बन्धु-विनोद के पृ० १००८ मे इनके पांडवयशचंद्रिका का उल्लेख अज्ञातकालिक प्रकरण मे किया गया है पर इस ग्रन्थ में कवि ने रचनाकाल सं० १८९२ स्पष्ट दिया है। विनोद में इनके आश्रयदाता राजा बलवंतसिंह रतलाम का निर्देश है।

(८८) सागर (२,५,६२)—इनके रचित अनेकार्थी नाममाला, धनजी नाममाला और रागमाला उपलब्ध हुई है। कवि ने अपना परिचय एवं समय कुछ भी नहीं दिया है।

मिश्र-बन्धु-विनाद के पृ० ८९३ में गुणविलास के रचयिता जोधपुर के ठाकुर केसरीसिंह के आश्रित सागरदान चारण (सं० १८७३) का उल्लेख है पर वे संभवतः भिन्न हैं।

(८९) सुखदेवादि (९२)—१७ वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् कवीन्द्राचार्य ने काशी और प्रयाग का कर छुड़वाया था—इस कार्य की प्रशंसा मे तत्कालीन काशीनिवासी कवियो ने कुछ पद्य बनाये जिनका संग्रहग्रन्थ कवीन्द्रचंद्रिका है। इसमे तत्कालीन प्रसिद्धाप्रसिद्ध ३० कवियो की कविताऐ है जिनमे दो स्त्री कवयित्रियां भी हैं।

मिश्रबन्धु-विनोद के पृष्ठ ४७६ मे सुप्रसिद्धि कवि सुखदेव मिश्र का परिचय देते हुए इनके काशी मे एक सन्यासी से तंत्र एवं साहित्य पढ़ने का उल्लेख है। संभव है वे सन्यासी कवीन्द्राचार्य ही हो। कवीन्द्रचन्द्रिका मे जिस सुखदेव कवि के पद्य उपलब्ध हैं विशेष संभव वे वृतविचार रसार्णव आदि ग्रन्थों के रचयिता आचार्य सुखदेव मिश्र ही हैं।

(९०) सुबुद्धि (३)—आपकी रचित आरंभ नाममाला उपलब्ध है, मिश्र-बन्धु-विनोद के पृ० ४६० में सुबुद्धि का सं० १७१२ से पूर्व होने का निर्देश है पर वहाँ उनके ग्रन्थ का नाम नही लिखा गया। पता नही उपर्युक्त सुबुद्धि आरंभ नाममाला के कर्त्ता ही हैं या उनसे भिन्न अन्य कोइ कवि हैं।

(९१) सूरतमिश्र (१०)—आप प्रसिद्ध टीकाकार एवं सुकवि थे। ये आगरे के निवासी कन्नोजिया ब्राह्मण सिहमनिमिश्र के पुत्र थे। मिश्र-बन्धु-विनोद पृ० ५५३ मे इनके टीकाग्रन्थो को प्रशंसा करते हुए निम्नोक्त ग्रन्थो का निर्देश किया है।

(१) अलंकारमाला सं० १७६६
(२) बिहारी सतसई की अमरचन्द्रिका टीका सं० १७९४
(३) कविप्रिया टीका
(४) नखशिख
(५) रसिकप्रिया का तिलक
(६) रससरस
(७) प्रबोधचंद्रोदय नाटक
(८) भक्तिविनोद
(९) रामचरित्र

(१०) कृष्णचरित्र

(११) रसग्राहकचंद्रिका (रसिकप्रिया की टीका)

(१२) रसरत्नमाला

(१३) सरसरस सं० १७९१-९४

(१४) भक्तविनोद

(१५) जोरावरप्रकाश

(१६) वैताल पंचविसति (महाराजा जैसिंह सवाई की आज्ञा से रचित)

(१७) काव्यसिद्धान्त सं० १७९८

(१८) रसरत्नाकरमाला

इनमे से अमरचंद्रिका की रचना महाराजा अमरसिंह जोधपुर के नाम से हुई लिखना गलत है वास्तव मे वे अमरसिंह ओसवाल जैन थे। जोरावरप्रकाश रसिकप्रिया की टीका का ही नाम है जो कि बीकानेर के महाराजा जोरावरसिंहजी के लिये सं० १८०० मे बनाई गई थी। रसरत्नाकरमाला संभवत. रसरत्नमाला ही होगी। रसरत्न की रचना सं० १७६८ वैसाख रविवार को हुई थी और उसकी टीका कवि ने स्वयं मेड़ता के ऋषभगोत्रीय ओसवाल सुलतानमल के लिये सं० १८०० श्रावण मे की थी। रसग्राहकचंद्रिका की रचना सं० १७९१ वैसाख सुदी ८ को जहाँनाबाद के नशक (रु?) ल्ला खांन के लिये की गई थी। रस सरस और सरसरस दोनो ग्रन्थ एक ही हैं। इसकी रचना सं० १७९० के वैसाख सुदी ६ को आगरे मे कवि-मंडली के कथन से हुई थी। खोज रिपोर्ट व मेनारियाजी के विवरणी भाग १ मे इसके रचयिता का नाम राय शिवदास लिखा है। भक्तविनोद और भक्तिविनोद दोनो ग्रन्थ एक ही है।

सन् १९३२-३३ की खोज से प्राप्त आपके रचित शृंगारसार (सं० १७८५ असाढ़ सु०) से आपके कई अप्राप्य ग्रन्थो का पता चलता है। उनमे से छन्दसार का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया गया है। शृंगाररस मे उल्लेख होने के कारण इसका रचना काल सं० १७८५ से पूर्व निश्चित होता है। आपके अन्य अप्राप्त ग्रन्थ श्रीनाथ-विलास, भक्तमाला, कामधेनुकवित्त, कविसिद्धान्त का अन्वेषण होना परमावश्यक है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी मे इनके अतिरिक्त रासलीला या दानलीला नामक ग्रन्थ की प्रति प्राप्त है। गत वर्ष सरस्वती मे सूरतमिश्र नामक एक सुन्दर लेख भी प्रकाशित हुआ देखने मे आया था। ओझाजी ने जोधपुर के इतिहास मे इन्हे महाराजा जसवन्त-सिंहजी का विद्यागुरु खोज विवरण के अनुसार बतलाया है यह संभव नही है।

(९२) **सूरदत्त** (३०)—शेखावाटी-अमरसर के कछवाहा शेखावत राय मनोहर के पुत्र पृथ्वीचन्द्र के पुत्र कृष्णचन्द्र के कहने से इन्होंने सं० १७१२ के फागुन सुदी ५ को 'रसिकहुलास' ग्रन्थ बनाया। आप काशी के निवासी थे।

(९३) **हरिदास** (९२)–इन्होंने अमर बत्तीसी में जोधपुर के राठौड़ अमरसिह के वीरतापूर्वक सलाबतखां को मारने का वर्णन किया है। रचना घटना के सम-कालीन रचित (सं० १७०१ आसोज सुदी १५) होने से इसका ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्व है। इसे मैंने अन्य एक राजस्थानी वात के साथ भारतीय विद्या वर्ष २ अंक १ में प्रकाशित कर दिया है।

(९४) **हरिवल्लभ**-(६९) इनके प्रबोधचंद्रोदय नाटक का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है। मिश्र-बन्धु-विनोद भाग १ पृ० ४१८ मे इनकी भगवद्गीता भाषानुवाद की प्रशंसा करते हुए इसका रचनाकाल सं० १७०१ बतलाया है। इसकी प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी मे भी है। आपका संगीतविषयक संगीतदर्पण नामक ग्रन्थ भी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त किशोरजु के लिये रचित भागवत् भाषानुवाद (पत्र ४८२) नामक वृहत्ग्रन्थ की प्रतियें चुरु के सुराना लाइब्रेरी और भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्सटीट्यूट पूना मे उपलब्ध है।

(९५) हरिवंश (३२)—य छजमल के पुत्र मसनंद के पुत्र थे। इन्होंने रसिकमंजरी भाषा ग्रन्थ बनाया। मिश्र-बन्धु-विनोद के पृ० ४६४ मे हरिवंश भट्ट बिल ग्रामी का उल्लेख है वे इन हरिवंश से भिन्न प्रतीत होते है।

(९६) **हृदयराम** (२७) कवि ने अपने वंश का परिचय देते हुए लिखा है कि गौड़ ब्राह्मण यजुर्वेद माध्यंदिनी शाखा के छरोडा निवासी विष्णुदत्त के पुत्र नारा-यण के पुत्र दामोदर बड़े विद्वान् थे। जिन्होंने हरिवंदन, कर्मविपाक (निदान के साथ) और चिकित्सासार ग्रन्थ बनाये। ये बेरम के पुत्र के पास रहे थे एवं वृद्धावस्था होने पर काशीनिवास कर लिया था। इनके पुत्र रामकृष्ण ने जौनपूर मे निवास कर बहुत से ब्राह्मणों को विद्यादान दिया। आसफखां के अनुज एतकादखां ने इन्हे गुणी जान कर सम्मानित किया। रामकृष्ण के तीन पुत्र थे (१) तुलसीराम (२) माधवराम और (३) गंगाराम। इनमे से माधवराम बहुत समय तक शाह सुजा की सेवा मे रहे थे। इनके पुत्र हृदयराम हुए जो उद्धव के पुत्र प्रयाग दीक्षित के दोहित्र थे। इन्होने सं० १७३१ के वैसाख सुदी ५ को भानुदत्त की रसमंजरी के आधार से रसरत्नाकर ग्रन्थ बनाया। दामोदर के उपर्युक्त ग्रन्थत्रय अन्वेषणीय हैं।

(९७) हरिचंद्र (६३)—इन्होंने सं० १६९१ मे मांडली नगर मे रागमाला बनाइ।

(९८) हेम (विजय) (१०४-१११) ये तपागच्छीय नेमविजय के शिष्य थे। इन्होंने सं० १८६६ कातिसुदी १५ को जोधपुर गजल और भावनगर गजल बनाई।

(९९) हेमसागर (९) आपने अंचलगच्छीय कल्याणसागर सूरि के समय (सं० १७०६ भादवा वदी ९ को) सूरत के निकटवर्ती हंसपुर में शाह कुआ के लिये छंद मालिका ग्रन्थ बनाया।

(१००) क्षमाकल्याण (७१)—आप खरतरगच्छीय वाचक अमृत धर्म के शिष्य थे। आप अपने समय के प्रतिष्ठा प्राप्त सैद्धान्तिक विद्वान् थे। जैन धर्म सम्बन्धी पचासो स्तवनादि और पचीसो ग्रन्थ आपके उपलब्ध हैं। यहाँ केवल उल्लेखनीय कृतियो की ही सूची दी जाती है :—

(१) भूधातुवृत्ति, सं० १८२९ चैत वदी १, राजनगर।
(२) गोतमीय काव्यवृत्ति, सं० १८२९, राजनगर मे प्रारम्भ सं० १८५२ श्रावण सु० ११ जैसलमेर मे पूर्ण।
(३) खरतरगच्छ पट्टावलि, सं० १८३० फागुन सुदी ९, जीर्णगढ़।
(४) आत्मप्रबोध, सं० १८३३ काति सुदी ५, मिनराबन्दर।
(५) चौमासी व्याख्यान, सं० १८३५ सावन सुदी ५, पाटोधी।
(६) श्रावक-विधि-प्रकाश, सं० १८३८ जैसलमेर।
(७) यशोधर-चरित्र, स० १८३९ सावण सुदी ५ जैसलमेर।
(८) थावच्चा चौपाई, सं० १८४७ विजयदशमी, महिमापुर।
(९) सूक्त रत्नावली वृत्ति, सं १८४७।
(१०) जीव-विचार-वृत्ति, सं० १८५० सावण सुदी ७, बीकानेर।
(११) प्रश्नोत्तर सार्धशतक (संस्कृत), सं० १८५१ जेठ वदी ५, जैसलमेर।
(१२) प्रश्नोत्तर सार्धशतक भाषा, सं० १८५३ वैसाख वदी १२ बुध, बीकानेर।
(१३) अंबडचरित्र, सं० १८५४ असाढ़ सुदी ३ पालीताणा, आर्या खुस्याल श्री के लिये रचिता।
(१४) तर्कसंग्रह फक्किका, सं० १८५४।
(१५) चैत्यवंदन चौबीसी, सं० १८५६ जेठ सुदी १३ नागपुर।
(१६) विज्ञानचंद्रिका, सं० १८५९ जैसलमेर।

(१७) अष्टान्हिका व्याख्यान, सं० १८६० जैसलमेर

(१८) अक्षयतृतिया व्याख्यान।

(१९) होलिका व्याख्यान।

(२०) मेरुत्रयोदशी व्याख्यान।

(२१) श्रीपालचरित्र-वृत्ति, सं० १८६९ विजयदशमी बीकानेर।

(२२) समरादित्य-चरित्र, सं० १८७३।

(२३) चतुर्विंशति चैत्यवंदन।

(२४) प्रतिक्रमणहेतवः।

(२५) साधुप्रतिक्रमण विधि, बालूचर।

मिश्रबन्धु-विनोद के पृ० ८३२ मे इनकी चार कृतियो का उल्लेख है।

(१०१) त्रिलोकचन्द्र (११८)—ये जोशी ब्राह्मण एवं ज्योतिषी थे। लालचन्द श्वेताम्बर यति के लिये इन्होने केशवी भाषा टीका बनाई।

(१०२) ज्ञानसार (१२-१०८)—आप खरतरगच्छीय रत्नराजगणि के शिष्य एवं मस्त योगी एवं राज्य-मान्य विद्वान् थे। कवि होने के साथ-साथ ये सफल आलोचक भी थे। आपके सम्बन्ध मे हमारा श्रीमद् ज्ञानसार और उनका साहित्य शीर्षक लेख हिन्दुस्तानी वर्ष ९ अंक २ मे प्रकाशित हो चुका है। विस्तार से जानने के लिये उक्त लेख देखना चाहिये। यहाँ केवल आपके हिन्दी ग्रन्थो की ही सूची दी जा रही है।

(१) पूर्वदेश वर्णन (२) कामोद्दीपन सं० १८५६ वै० सु० ३ जयपुर के महाराजा प्रतापसिहजी की प्रशंसा मे रचित (३) माला पिंगल सं० १८७६ फा० व० ९ (४) चन्द चौपाई समालोचना दोहा (५) प्रस्ताविक अष्टोतरी (६) निहाल बावनी सं० १८८१ मि० व० १३ (७) भावछत्तीसी सं० १८६५ काति सु० १ कृष्णगढ़ (८) चारित्र छत्तीसी (९) आत्मप्रबोध छत्तीसी (१०) मतिप्रबोध छत्तीसी (११) बहुत्तरी आदि के पद है।

परिशिष्ट नं० २

[अज्ञात-कर्तृक ग्रन्थ-सूची]

१ अतिसारनिदान ३८†
२ से ५ इंद्रजाल १२६. १२६. १२७. १२८
६ इन्दोरगजल १००
७ कीर्त्तिलता टीका १३५
८ कुतबदीन वात ७२
९ गजशास्त्र ४२
१० जोधपुरगजल १०५
११ जम्बूकथा ७४
१२ तुरकी शुकनावली ११९
१३, १४ नखशिख २४, २४
१५ निजोपाय ४८
१६ प्रबोधचंद्रोदय ७०
१७ पालीगजल १०७
१८ पासा केवली १२०
१९ पाहन परीक्षा ५५
२० बहिली मांरी वात ७८
२१ बारह भुवन विचार १२०
२२ बीरबल पातस्याह की वात ८६
२३ मनोहरमंजरी २६
२४ माधवनिदान भाषा ४७
२५ मालकांगिणी कल्प ८७
२६ मनोसत ८०
२७ मोजदीन महताब की वात ८२
२८ मंगलोरगजल १११
२९ रमल प्रश्न १२८
३० रमल शकुन विचार १२२
३१ से ३५ रागमाला ६४. ६४. ६५. ६५. ६६
३६ राधामिलन ८२
३७ रूपावती ८३
३८ लैलामजनूं री बात ८५
३९ शिखनख टीका १४०
४० शीघ्रबोध भाषा १२३
४१ श्रीपालरास ८८
४२ से ४४ स्वरोदय १३१. १३१. १३२
४५ „ विचार १३२
४६ साडेरा छंद ११४
४७ हरिप्रकाश ५४
४८ हिय हुलास ६८ ।

---

१. † इनमें से नं० १, १०, १३—१६, १८, १९, २२, २४, ३३, ४५, ४६ की प्रतियें त्रुटित होने से रचयिता का नाम विदित नहीं हुआ । किसी सज्जन को पूर्ण प्रति प्राप्त हो तो सूचित करें । नं० २३ के रचयिता मनोहर, नं० २१ का रचयिता सार संभव है ।

परिशिष्ट नं० ३

[पूर्वज्ञात ग्रन्थकार]

(मिश्रबन्धुविनोद में जिनका निर्देश है)

१. आनंदराम
२. उदयराज
३. कुंवर कुशल
४. खुसरो
५. चेतनविजय
६. जटमल
७. जनार्दन भट्ट
८. तत्वकुमार
९. दूलह
१० भीखजन
११ भूप
१२ मालदेव
१३ मेघराज
१४ रामचंद्र
१५ लालचंद
१६ लालदास
१७ स्वरूपदास
१८ सुखदेव
१९ सूरतमिश्र
२० हरिवल्लभ
२१ क्षमाकल्याण

(जिनका उल्लेख संदिग्ध है)

कृष्णानंद
खेतल
गुलाबसिह
सागर
सुबुद्धि
हरिवंश

(मेनारियाजी के खोज ग्रन्थ भाग १ में)

गणेश
ज्ञान

[पूर्वज्ञात ग्रन्थ]

(मिश्रबन्धुविनोद में जिनका उल्लेख है)

१. ख्वालक बारी (खुसरो)
२. चंपू समुद्र (भूप)
३. लखपतजससिन्धु (कुंवर कुशल)

परिशिष्ट नं० ४

[अपूर्णप्राप्त ग्रन्थ]

१ अतिसारनिदान ३८ (अंत त्रुटित)
२ कृष्णचरित १९ (अंत त्रुटित)
३ जोधपुरगजल १०५ (,,)
४ दुर्गसिह शृंगार २२ (आदि त्रुटित)
५ दूलहविनोद २३ (अन्त त्रुटित)
६ नखशिख २४ (,, ,,)
७ प्रबोधचंद्रोदय ७० (,, ,,)
८ पासा केवली १२० (आदि ,,)
९ पाहनपरीक्षा ५५ (अन्त ,,)
१० बीरबल पातसाह की बात ८६ (आदि अंत त्रुटित)
११ मूत्र परीक्षा ३९ (अन्त त्रुटित)
१२ माधवनिदान भाषा ४७(,, ,,)
१३ रसविलास २९ (आदि ,,)
१४ रागमाला ६५ (अन्त ,,)
१५ स्वरोदयविचार १३३ (,, ,,)
१६ साहित्यमहोदधि २६ (अन्य खंड अप्राप्त)
१७ सांडेरा छंद ११४ (अन्त० त्रुटित)
१८ संगीतमालिका ६७ (आदि ,,)
१९ हनुमान नाटक ७० (अन्त ,,) ❀

❀ इनकी कहीं पूर्ण प्रति प्राप्त हो तो सूचित करने का अनुरोध है।

शुद्धाशुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	धन	घन	६२	२०	(९)	(१०)
४	१६		खुसरो	६२	३१	(१०)	(२)
५	१३	स्थांम	स्याम	६३	१४	(२)	(३)
१०	२	छदमालिका	छंदमालिका	६४	४	(३)	(४)
१०	४	छत्ती	पत्री	६४	४	वि०	लि०
१०	५	सं० १७०७	१७८७	६४	३०	कुछ	कुच
१४	१	पद्म	पद्य	६५	२८	लार्बी	लांबी
१९	१४	कान्य	काव्य	६६	४	(७)	(८)
२०	६	चतुर्भुदास	चतुरदास	६६	१५	(८)०	(९)९
२१	५			६६	२	रंध्र०	रंध्र९
२२	११	है	रै	६६	२६	चद्रंमा७	चंद्रमा१
२४	३०	किर्धौ	किधौ	६७	१५	(१०)	(११)
३०	९	कपि	कवि	६८	६	(११)	(१२)
३४	२२	श्रीमन्न	श्रीमन	७०	२७	दु दभिम्मिृभदंग	दुदभिमृदंग
३४	२६	२७	२८	७३	७	(८)	(२)
३८	१	(ग)	(घ)	७३	२३	घांर	धरि
४५	२५	ग्रंव	ग्रंथ	७४	२३	छेहला	छहला
४७	१७	निश्र	निश्चै	७६	१०	(९)	(८)
४८	१८	सतेरे	सतरे	७७	१५	वहगी	वहगी
४८	२२	पर्ढ़ो	पढ़ो	८३	१२	रु	सारु
४९	२	संस्था	सख्या	८४	२२	दीन	दूत
५०	४	१७६२	१७९२	८४	२७	परवीन	परवान
५७	२७	(२)	(५)	८५	२३	नर्भी	नमी
५७	३१	सुमिन	सुमिरन	८५	२५	धरि	घरि
५८	२७	प्रणभी	प्रणमी	८७	१६	सूरदासात	सूरदासत
५९	१७	नानां	नाना	८८	४	श्रीमाल	श्रीपाल
६१	७	श्रक	अनेक	८८	२०	पडतं	पंडत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८९	२४	सुग नीति	सुगनीति	१०८	५	ज्ञानसागर	ज्ञानसा
९१	१४	पतिना	यतिना	१०८	७	कांइ	केई
९१	२४	सरवतसिध	सखतसिघा	१०८	१६	रहित	रहिस
९१	१५	चरित्र	चारित्र	१०९	३	शाद	शारद
९३	४	कवींद्र	कवीन्द्र	१०९	१७	मेरं	मेरे
९३	२१	शुभ	शुभं	११०	८	बंगाल	बंगाला
९४	२०	आग	आउ	११०	१३	बहनी	बहुती
९५	१८	बट	षट्	११०	१९	जनन्नाथ	जगन्नाथ
९७	७	प्रथ मे	प्रथमै	११०	२२	मा	नां
९७	७	प्रगटीया	प्रगटाया	११०	२६	आर्श्वनाथ	पार्श्वनाथ
९७	१४	पजा	पढ़जा	१११	४	विजैजन्द्र	विजैजिनेन्द्र
९७	१५	द्वापुर	द्वापर	१११	१४	गुज्जारयं	गुज्जरयं
९७	२०	अलिक	अलिफ	११२	४	सैहरह	सैरह
९८	५	(९)	(८)	११२	९	श्रां	श्री
९८	५	सिठाय	सिठायच	११२	२७	शिश्य	शिष्य
९८	८	झील	झाले	११३	१२	शन्त	शान्त
९८	९	इजरत	हजरत	११५	१	भमै	भणै
९८	१५	सवत	संवत	११५	२	कहत	कहत है
९८	१८	पत्र	यत्र	११५	१०	प्रणामुं	प्रणमुं
९८	२३	भनाय	मनाय	११५	२१	परण्यां	वरण्यां
१०३	१७	वाखी	वारसी	११६	९	तेठ्ठसह	तेसठह
१०३	२९	महिपल	महियल	११७	२	इन्द्रगाल	इन्द्रजाल
१०४	७	नानविजय	मानविजय	११७	१५	चित्र	चित्त
१०५	२७	प्रदृढ़बोधी	दृढ़प्रतिबोधी	११७	१९	सरम	सरस
१०६	१२	धणी	घणी	११८	१६	वि०	लि०
१०६	१२	गुम-पढ़ें	गुण, पढ़ें	११८	२१	नायव	नायक
१०७	२१	गच्घ	गच्छ	११८	२२	समुद्र	समुद्र
१०७	२३	घणी	धणी	११८	२४	लच्मन	लच्छन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	२८	पुहृष	पुरुष	१३५	९	कीत्तिसिह	कीर्त्तिसिंह
११९	४	अदि	आदि	१३५	१७	विखितं	लिखितं
११९	१६	शास्त्र	शास्त्र	१३६	४	पाइर्चसेवितं	पार्श्वसेवितं
११९	२०	जोतिसार	जोतिषसार	१३७	४	ग्र न्थस्य	ग्रन्थस्य
१२०	७	आभय	अभय	१३७	१४	वर्त्ति	वृत्ति
१२०	१२	जाणौं	जाणै	१३७	२३	प्रिपाया:	प्रियाया:
१२१	२	क्रोंध्री	क्रोर्धा	१३८	१२	ह्लेन	ह्वेन
१२२	२८	चरित्र	चारित्र	१३८	२०	श्री	श्री
१२२	३२	अचित	अचित	१३८	२०	रवत्	रभवत्
१२३	६	समाप्तम	समाप्तम्	१३८	२७	वैभ:	वैभवा:
१२३	२४	इति	ईति	१३८	२९	मज्ञानानां	मज्जनोनां
१२४	९	पडित	पंडित	१३८	३१	चित्र	चित्त
१२४	१४	(पूग)	(पूर्ण)	१३८	३३	तान्छिस्य	तन्छिष्य
१२५	८	सूरिर्जा	सूरज	१३९	६	ज्ञानप्रमोददो	ज्ञानप्रमोदो
१२५	२०	भरवी	भारवी	१३९	८	तस्त्पक्त	तस्त्यक्त
१२७	२२	पुरन	पुरान	१३९	१५	सौम्प:	सौम्य:
१३०	१	दाहू	दादू	१३९	१७	शिष्चै	शिष्यै
१३०	२१	हलहल	हलाहल	१३९	२५	यावर्तिष्टति	यावतिष्टति
१३०	२५	राज	काज	१३९	३१	द्रशे	द्रष्टे
१३३	१७	विद्यावत	विद्यावंत	१३९	३३	दृष्टि	पृष्टि
१३३	२२	(२९)	(२८)	१३९	३४	शास्त्रं	शास्त्र
१३४	१	सिराघो	सिराधो	१४०	३	साइल	साइज
१३५	६	मिभुवन	त्रिभुवन	१४०	१२	तिभजंपिण	तिमजंपिण